रवीन्द्रनाथ ठाकुर अपनी बड़ी बेटी बेला के साथ
फोटो : विलियम आर्चर (१८८८)

बाल साहित्य

कवि की बालोपयोगी रचनाओं का देवनागरी लिप्यन्तर

रवीन्द्रनाथ ठाकुर

सम्पादक

लीला मजुमदार

क्षितीश राय
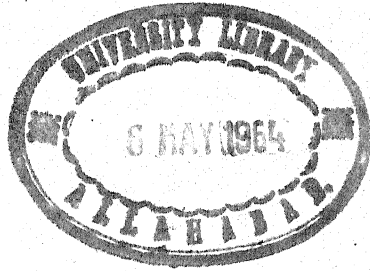
भूमिका (कवि-कथा)

लीला मजुमदार

देवनागरी लिप्यन्तर और हिन्दी अनुवाद

युगजीत नवलपुरी

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

BAL SAHITYA: A selection of Rabindranath Tagore's writings for children, compiled & edited by Smt. Lila Majumdar and Sri Kshitis Roy. Transliterated into devanagari by Sri Yugajit Nawalpuri. Introduction carries a biographical sketch of Tagore by Smt. Lila Majumdar, translated into Hindi by Sri Yugajit Nawalpuri. Frontispiece after a drawing by William Archer of Rabindranath with his eldest daughter Bela, 1888. Sahitya Akademi, (1962). Price Rs. 6/-.

प्रथम संस्करण, १९६२

विश्वभारती प्रकाशन विभाग के सौजन्य से
प्रस्तुत संस्करण का प्रकाशन

मुद्रक :
सत्यप्रकाश गुप्ता,
नवीन प्रेस, दिल्ली

मूल्य : ६ रुपये

सूची

कवि-कथा

उत्तर कलकत्ता में एक पुरानी सड़क है। उस पर बड़ी भीड़-भाड़ रहती है। ट्रामें, बसें, मोटरगाड़ियाँ, भैंसागाड़ियाँ, हाथ-ठेले आदि ठसाठस भरे रहते हैं। लोग इतने कि गिनती नहीं हो सकती। दोनों ओर के मकान सटे-सटे हैं। तिल-भर खुली जगह नहीं है। इस सड़क से एक छोटी-सी गली निकली है। गली में पैदल चलने के लिए किनारे पर पटरियाँ तक नहीं हैं। थोड़े-से घरों के बाद छोटा-सा पुराना शिवाला है। उसके बाद दो-तीन घर और हैं। फिर एक बहुत बड़े फाटक पर पहुँचकर गली खतम हो जाती है।

फाटक के भीतर विशाल तिमहला है। उसकी पाँतोंपाँत झिलमिलीदार खिड़कियाँ और लम्बे-लम्बे झरोखे फाटक से ही दिखाई पड़ते हैं। आज से नब्बे-बानवे साल पहले इस महल में एक गोरा छरहरा बालक रहता था। उन दिनों पानी बरसते समय वह गली की ओर टकटकी बाँधे यहीं कहीं खड़ा दिखाई देता। इस आस में कि ऐसी बरसात में मास्टर साहब शायद न भी आयें। पर मास्टर साहब कभी न चूकते। ठीक समय पर उनकी छतरी गली के मोड़ पर दिख जाती।

बालक का नाम था रवीन्द्रनाथ ठाकुर। घर पर लोग उसे रवि कहते थे। गली का नाम है द्वारकानाथ ठाकुर की गली और सड़क का चितपुर रोड।

महल जोड़ासाँको के ठाकुर-परिवार का मौरूसी मकान है।

पर उस छोटे बालक ने अपने महल के सभी खण्ड देखे तक नहीं थे, हालाँकि रहा सब दिन यहीं था। उसकी पहुँच महल के कुछ ही भागों तक थी—कहीं किसी एकाध आँगन, तो कहीं किसी छोटे-

से घुप्प अँधेरे कमरे तक। सँकरी चक्करदार सीढ़ियाँ ऊपर किसी अनजानी दुनिया को जाती थीं। शायद ऊपर कोई सजा-सजाया बड़ा दालान हो, जिसमें चकाचौंध रहती हो। बड़ी रात गए तक कहीं गाने-बजाने का रंग जमा रहता, कहीं नाटकों के अभ्यास चलते, तो कहीं खास-खास अतिथियों की बैठकें होतीं।

इन्हीं सबके बीच वह बालक बड़ा हुआ। भाई-बहनों में तेरह उससे बड़े थे। छोटा भाई भी एक हुआ, पर वह साल-भर का ही था कि दुनिया से उठ गया।

ठाकुर-परिवार के लोग समाज के अगुआ थे। जाति के ब्राह्मण और शिक्षा-संस्कृति में काफ़ी आगे बढ़े हुए। पर कट्टरपंथी लोग उन्हें 'पिराली' कहकर नाक-भौं सिकोड़ते थे। पिराली ब्राह्मण मुसलमानों के साथ उठने-बैठने के कारण जाति-भ्रष्ट माने जाते थे। रवीन्द्रनाथ के दादा द्वारकानाथ ठाकुर 'प्रिंस' यानी राजा कहलाते थे। उनके धन-मान की धाक देश में ही नहीं, विलायत तक में थी। रवीन्द्रनाथ के पिता देवेन्द्रनाथ ठाकुर और भी प्रसिद्ध हुए। सन्तों-जैसे चरित्र और विद्या के कारण वह 'महर्षि' कहलाते थे।

कभी धन भी इस परिवार में अपार था। बहुत बड़ी जमींदारी थी। जोड़ासाँको वाला महल द्वारकानाथ के दादा ने बनवाया था। हालत में गिरावट आ जाने पर भी जो दौलत बच रही थी, वह कोई कम न थी। फिर भी कवि का बचपन, परिवार के और बच्चों की ही तरह, बड़ी सादगी में बीता। जाड़ों में भी वे सूती कपड़े ही पहनते। काफी बड़े हो जाने तक जूते-मोजे कभी नहीं पहने। खान-पान में भी विलास की बला का नाम तक न था।

पर इस सादगी के चारों ओर भरपूर विलास का वातावरण था। विलास की उस दुनिया में बड़े तो अबाध विचरते, पर छोटों के लिए ताक-झाँक तक की मनाही थी। किसी गाने की एकाध कड़ी या नाटक का एकाध वाक्य इन छोटों के कानों में आ पड़ता तो ये जिज्ञासा और आनन्द के मारे बेसुध हो उठते। संयम सिखलाने का

यह बड़ा अच्छा ढंग था।

शिशु से बढ़कर बालक होते ही रवि हवेली से बाहर कर दिये गए। उन्हें महिलाओं की देख-भाल से छुट्टी दिलाकर नौकरों के हवाले कर दिया गया। उन दिनों धनी घरों की यही रीत थी। रवि को खिलाने-पिलाने आदि का भार भी नौकरों पर ही था। रात को सिर्फ सोने के लिए वह माँ के पास जा पाते। सोते समय एक बूढ़ी दादी उन्हें परियों की कहानियाँ सुनाया करतीं। नौकरों के हाथों उन्हें बहुत कष्ट मिलता था। बचपन के संस्मरणों में उन्होंने इस जमाने को 'भृत्यराजक तन्त्र' के रूप में याद किया है।

संगी दो थे—एक भाई, एक भानजा। दोनों उम्र में बड़े थे। उनके स्कूल में दाखिल होने पर रवि ने भी स्कूल जाने की हठ ठानी। इस पर मास्टर साहब ने एक तमाचा जड़ दिया। कहा: "आज तू स्कूल जाने के लिए जितना रो-धो रहा है, कल स्कूल छोड़ने के लिए उससे अधिक सिर धुनेगा!" हुआ भी ठीक वही।

स्कूल जेल लगता था। श्री-हीन बन्द घर की बँधी-बँधाई पढ़ाई सहन नहीं होती थी। हमेशा निकल भागने की धुन सवार रहती। तीन स्कूल आजमा लेने के बाद स्कूली पढ़ाई को तिलांजलि दे दी। घर वाले बहुत खीझे। कहा: "इस लड़के से दुनिया में कुछ न होगा।"

रवि को स्कूल नहीं भाते थे, पर पढ़ाई-लिखाई में जी खूब लगता था। पढ़ना-लिखना तो दिन-भर चलता ही रहता। सुबह घण्टे-भर अखाड़े में जोर करने के बाद बँगला, संस्कृत, इतिहास, भूगोल, विज्ञान, स्वास्थ्य-विज्ञान, संगीत, चित्र-कला आदि की सिखाई-पढ़ाई होती। पीछे अंग्रेजी साहित्य भी इस सूची में आ गया। जहीन तो वह एक ही थे। जो सिखाया जाता, हाथों-हाथ सीख लेते और कभी भूले से भी भूलने का नाम न लेते। हाँ, स्कूल में बन्द होना और वहाँ की जबरदस्ती की पढ़ाई उन्हें बिलकुल नापसन्द थी। और स्कूल में समय भी कितना नष्ट होता था!

साढ़े ग्यारह साल के हुए तो जनेऊ हुआ। घुटे हुए सिर पर न चाहते हुए भी टोपी पहननी पड़ी। उसी भेस में पिताजी के साथ खुशी-खुशी हिमालय गये। पहले वे पश्चिम बंगाल के बोलपुर नामक स्थान पर पहुँचे। महर्षि ने बोलपुर के पास ही शान्ति और ध्यान के लिए एक आश्रम बनाया था, जिसका नाम था 'शान्तिनिकेतन'। उस यात्रा में पिताजी ने रवि को संस्कृत, अंग्रेजी और गणित-ज्योतिष के साथ-साथ जवाबदेही सँभालने की शिक्षा भी दी। उसी यात्रा में रवीन्द्रनाथ ने राजा पृथ्वीराज की ऐतिहासिक पराजय के बारे में एक पद्य-नाटक लिखा। इससे पता चलता है कि नवोदित कवि ने देश के भाग्य की चिन्ता करना कितना पहले से शुरू कर दिया था।

कुछ महीने बाद हिमालय से लौटने पर रवीन्द्रनाथ बिलकुल बदले-से लगे। अब वे बालक रवि तो बिलकुल नहीं थे। लेकिन स्कूल जाने में उन्हें अब भी उतनी ही आपत्ति थी।

उसके अगले साल उनकी माँ चल बसीं। लेकिन माँ के बिछोह के बाद प्यार का अभाव खल नहीं पाया। पिता थे, एक-से-एक सनेही बड़े भाई थे, भाभियाँ थीं, जीजियाँ थीं। रवि पर सबका प्यार पहले से अधिक बढ़ गया। तब से रवि की प्रतिभा धीरे-धीरे लगातार विकसित होती गई। पंखुड़ी-पंखुड़ी खुलते फूल की तरह।

पन्द्रह साल की उम्र में उन्होंने पहले-पहल जनता के सामने कविता-पाठ किया। अवसर था हिन्दू-मेले का। इस राष्ट्रीय मेले का संगठन उनके बड़े भाइयों की मित्र-मण्डली ने किया था। कविता अपनी ही रची हुई और राष्ट्रीय भावों से भरी थी। सुनने वाले मुग्ध हो उठे। उसके बाद उन्होंने 'वनफूल' नाम की एक लम्बी कविता लिखी, जो पद्यबद्ध कहानी थी। साथ ही 'वैष्णव पदावली' के अनुकरण पर अनेक बड़े ही अच्छे पद लिखे और उन्हें 'भानुसिंहेर पदावली' नाम दिया। बहुत लोगों ने यह विश्वास कर लिया कि 'ब्रजबुलि' में लिखे ये पद सैकड़ों वर्ष पहले के किसी कवि के हैं। पर वास्तव में भानुसिंह तो रवीन्द्रनाथ ही थे। इस बात की जानकारी

होने के बाद भी लोगों को यह विश्वास नहीं हो पाता था कि सोलह-सत्रह साल के लड़के ने इतने सुन्दर पद रचे होंगे !

रवीन्द्रनाथ अच्छे अभिनेता भी थे। भाइयों और मित्रों के लिखे हुए और उन्हींके शौकिया खेले हुए नाटकों में काम किया। रंगमंच पर वे कई बरस बाद उतरे।

मन उनका संगीत में सराबोर था ही, गला भी बड़ा ही मधुर था। बचपन से ही वे गीत लिखने, उनके स्वर बाँधने, साधने और अत्यन्त ललित कण्ठ से उन्हें गाने लगे थे।

गीतों की रचना जीवन-भर करते रहे। अनगिनत गीत लिखे हैं उन्होंने। धर्म-संगीत, प्रकृति की वन्दना, देश-प्रेम के गाने, अनेकानेक अवसरों-अनुष्ठानों के गीत। आज भी उनके गीत उसी तरह बेजोड़ हैं। ऐसे और इतने गीत कभी किसी ने भी नहीं लिखे।

छुटपन में ही उन्होंने यह विख्यात ब्रह्म-संगीत लिखा था :

"नयन तोमारे, पाय ना देखिते रयेछ नयने-नयने।"

(देख न पाते नयन तुम्हें बसे हो नयन-नयन में।)

इसे सुनकर उनके पिता इतने पुलकित हुए थे कि आँखें छलछलाकर कहा था, "देश का शासक यह भाषा जानता तो समझता कि कवि को क्या पुरस्कार दिया जाना चाहिए। मैं तो यह विनम्र उपहार-मात्र दे सकता हूँ।" और यह कहकर उन्होंने पाँच सौ रुपये भेंट किये।

इस तरह रवीन्द्रनाथ अपनी जनता के कवि का आसन लेने की तैयारी करते रहे। पर बड़े-बूढ़े फिर भी कुछ-कुछ निराशा ही महसूस करते थे। कहते : "इससे क्या होना-जाना है ? ज़रूरत तो यह है कि कोई ऊँची परीक्षा पास-वास करके किसी बड़े सरकारी पद पर जम ले।" इसी आशा से उन्हें विलायत भेजा गया कि पढ़कर बड़ा अफ़सर या बैरिस्टर बने। उस समय रवि सत्रह साल के थे।

रवीन्द्रनाथ विलायती सामाजिक जीवन में आँख मूँदकर

कूद पड़े और उसीमें मगन हो गए। नाच, गान, साहित्य आदि हर विषय की तह तक गए। बहुत लोगों से मिले-जुले। वहाँ से जो चिट्ठियाँ भेजीं, वे 'इग्रोरोप प्रवासीर पत्र' नाम के संग्रह में छपी हैं। इन चिट्ठियों से प्रकट है कि कच्ची उम्र होने पर भी वे वहाँ के जीवन और रीति-नीति को कितनी सावधानी और सूझ-बूझ के साथ देख-परख रहे थे। लेकिन पढ़ाई पूरी करने के पहले ही वह १८८० में वापस बुला लिये गए।

देश लौटते ही उन्होंने 'वाल्मीकि प्रतिभा' की रचना की। इस सुन्दर गीति-नाट्य में दिखाया गया है कि 'रामायण' के रचयिता वाल्मीकि डाकू से महाकवि कैसे हुए। गीति-नाट्य में शब्द बोले नहीं जाते, गाये जाते हैं। रवीन्द्रनाथ ने अपने जीवन में अनेक गीति-नाट्य लिखे हैं। साथ ही ऐसे नृत्य-नाट्य भी लिखे हैं, जिनमें गीत ही नहीं नृत्य भी कथा के भावों को प्रकट करते हैं।

अगले साल उन्हें विलायत भेजने की एक और कोशिश हुई। मगर वह कोशिश बेकार गई। इधर युवक कवि ने कुछ नाम कमाना भी शुरू कर दिया था। उनके गीतों के दो संग्रहों 'सान्ध्य संगीत' और 'प्रभात संगीत' की बड़ी प्रशंसा हुई। 'निर्झरेर स्वप्नभंग' नाम की कविता भी इन्हींमें थी। सूरज की गरमी से बर्फ के पिघलने पर झरने का पानी जिस उद्दाम आनन्द से उछल पड़ता है, उसीका वर्णन इस कविता में है। इसे पढ़कर दुनिया ने समझ लिया कि कवि ने अपने-आपको पा लिया है, उसके भीतर का झरना अब उमड़ पड़ा है और आजीवन बहता रहेगा।

बच्चों के लिए उनकी पहली कविता 'बिष्टि पड़े टापुर-टुपुर' भी उन्हीं दिनों की है। पीछे तो उन्होंने बच्चों के लिए 'शिशु भोलानाथ' आदि अनेक कविता-पुस्तकें लिखीं।

फिर कई बरसों में उन्होंने भारत के अनेक भागों को घूम-घूमकर देखा। बाईस बरस के हुए तो मृणालिनी देवी के साथ उनका ब्याह हुआ। ब्याह के थोड़े ही दिन बाद वह फिर विलायत हो

आए। उन दिनों कई बड़ी अच्छी-अच्छी किताबें लिखीं। बच्चों का उपन्यास 'राजर्षि' उन्हीं दिनों का है। पीछे इसी उपन्यास को 'विसर्जन' नाम के नाटक का रूप दिया। इसमें दिखाया गया है कि पशु-बलि कितना क्रूर और मूर्खतापूर्ण काम है। एक पर एक कविता कहानी उनके मानस में कमल की कलियों की तरह खिलने लगी।

धीरे-धीरे लोगों ने महसूस किया कि रवीन्द्रनाथ महान् कवि ही नहीं, विचारक और सुधारक भी हैं। इस बीच दुशमन भी उनके बहुत-से बन गए थे। वे अनेक पत्रिकाओं में उनके खिलाफ बड़ी निर्मम आलोचनाएँ लिखने लगे। उन्हें यह सहन नहीं होता था कि कोई पुरानी लीक छोड़कर चले और सहज सरल, मधुर और नये ढंग की बँगला में नये भाव प्रकट करे। लेकिन युवक कवि की चिन्ता-धारा बड़ी बलवती थी। वह गालियों की कोई परवाह नहीं करती थी। निडर होकर अपने-आपको प्रकट करती थी।

क्या नये में और क्या पुराने में, जहाँ जो उत्तम होता, उसी की तलाश उन्हें रहती थी। कभी कुछ भूलते वे शायद ही थे। बरसों बाद भी भूत-प्रेतों, बाघों और घड़ियालों की वे कहानियाँ उन्हें याद आतीं, जिन्हें कभी किसी मछुए या महरी से सुना होता। यही चीज़ें साहित्य का उपकरण बनती हैं। देश की रक्त-मज्जा में बहने वाली इन कहानियों ने उनके साहित्य में बड़ी ही प्यारी महक भर दी है।

अपने देश से उन्हें बड़ा गहरा और उत्कट प्रेम था। अपने देश के आदर्शों, उसकी भाषा और उसकी जनता की विद्या का आदर करते थे। पर साथ ही, बाहर कहीं से भी मिले ज्ञान का वे स्वागत करते थे। विज्ञान को और विचार की स्वतन्त्रता को पश्चिम की जो देन है, उसके लिए वह पश्चिम के प्रति भी श्रद्धावान् थे।

उनके पाँच सन्तानें हुईं। यह जवाबदेही कोई कम न थी। सबके पढ़ने-लिखने की व्यवस्था उन्होंने घर पर ही की। कारण यह था कि उन्हें अपने बचपन के दिन भूले नहीं थे, यह अच्छी तरह याद था कि स्कूल जाने में कितना दुःख होता है।

ज़मींदारी के काम से उत्तर और पूर्व बंगाल तथा उड़ीसा के दूर-दराज़ देहात के चक्कर लगाने पड़ते थे। अक्सर महीनों तक पद्मा की धार पर तैरते अपने नाव-घर में रहा करते। वहीं से उन्होंने नदी-तट के जीवन का रंगारंग दृश्य देखा। देखा कि धरती के लाल कैसे जीते हैं और उनके सीधे-सादे हर्ष-विषाद क्या हैं।

इस तरह बंगाल के देहात और देहातियों के जीवन से उनका बड़ा ही गहरा और गाढ़ा परिचय हो गया। उन दिनों जो मनोहर कहानियाँ उन्होंने लिखीं, वे इसी परिचय के फल हैं। ग्रामीण भारत की समस्याओं के बारे में उनकी समझदारी और किसानों, देहाती दस्तकारों आदि की भलाई की आकुल चिन्ता भी इसी प्रत्यक्ष सम्पर्क से पैदा हुई थी। शिक्षा के मामले में भी उनका यह विचार धीरे-धीरे सुस्पष्ट होता गया कि बच्चों का लालन-पालन सीधे-सादे देहाती वातावरण में, प्रकृति की गोद में, होना चाहिए। पुराने ज़माने के आश्रमों के आदर्श पर।

आखिरकार उन्होंने शांतिनिकेतन में अपने मन के अनुरूप विद्यालय बना लिया। इसके लिए उन्हें अनेक कुरबानियाँ करनी पड़ीं। पुरी वाला मकान बेचना पड़ा। मृणालिनी देवी ने अपने गहने उतारकर दे दिए। १९०१ से विद्यालय चालू हो गया। वही विद्यालय अब बढ़ते-बढ़ते विशाल विश्वभारती विश्वविद्यालय बन गया है।

उन दिनों कवि तो पढ़ाते थे और कवि-पत्नी विद्यालय की गिरस्ती सँभालती थीं। दो-तीन कोठियाँ और कई कच्चे झोंपड़े थे। पढ़ाई पेड़ों के नीचे होती थी। अब भी कक्षाएँ पेड़ों के नीचे ही लगती हैं।

धीरे-धीरे कई गुणी सहकर्मी आ जुटे। वे भी आदर्श के लिए सांसारिक सुख की आशा छोड़कर आये थे। छात्र-संख्या बढ़ी। शिक्षण के विविध नियमों के परीक्षण होने लगे। विद्यालय चल निकला।

फ़ीस मामूली-सी ली जाती थी। शिक्षक भी बहुत मामूली

वेतन लेते। खान-पान और पहनावे निहायत सादे थे। सभी नंगे पाँव रहते। पर आनन्द की मात्रा प्रचुर थी। गुरु-शिष्य-सम्बन्ध प्यार-भरे थे, मानस के विकास के लिए अनन्त अवकाश था।

विद्या किताबी पढ़ाई तक ही सीमित नहीं थी। बाग़बानी, शरीर-साधन, खेल-कूद, समाज-सेवा, प्रकृति का अध्ययन और उसके आनन्दों का उपभोग आदि भी पढ़ाई में ही शामिल थे।

विद्यालय के जीवन में संघर्ष की कठोरता होने पर भी आनन्द-ही-आनन्द था। रुपये-पैसे का अभाव बना ही रहता था। कवि तो अपना सर्वस्व दे ही डालते थे, दूसरे बन्धु-बान्धव भी कुछ-न-कुछ जुटाते रहते थे। जैसे-तैसे काम चल जाता था।

आश्रम बने साल-भर भी नहीं हुआ था कि मृणालिनी देवी का देहान्त हो गया। माँ के बिछोह से मर्माहत सन्तानों को कवि ने गले बाँध लिया और पिता होने के साथ-साथ अब माँ भी वह आप ही हो गए। तभी उन्होंने बच्चों के लिए इतनी सुन्दर कविताएँ लिखीं।

१९०३ से १९०७ तक बड़े दुःख के दिन थे। दूसरी लड़की रेणुका, पूज्य पिताजी और सबसे छोटा लड़का शमी, तीनों एक-एक करके चल बसे और कवि को गहरा शोक दे गए। पर पारिवारिक शोक से उन्होंने न तो जी छोटा किया और न ही मन में कोई कड़वाहट आने दी। इन वर्षों में भी, एक-से-एक लाजवाब पुस्तकें लिखीं।

कवि पारिवारिक कर्त्तव्य तो पालते रहे, पर परिवार में बँधे नहीं रहे। देश-प्रेम उन्हें परिवार से बाहर भी ले गया। स्वदेशी-आन्दोलन में वे पूरी तरह रम गए और उसके पुरोहित बन गए। राष्ट्रीय आज़ादी के आन्दोलन, बंग-भंग-विरोधी-आन्दोलन और राष्ट्रीय शिक्षा के आन्दोलन में उन्होंने नेता का काम सँभाला।

देश को बड़प्पन देने वाले हर काम में उनके उत्साह का कोई ठिकाना न रहता था। लेकिन दलगत राजनीति की उखाड़-पछाड़ को वे सह नहीं पाते थे। किसी भी तरह के कठमुल्लेपन या सामाजिक संकीर्णता को वे पास तक फटकने नहीं देते थे। इसीलिए

वे राजनीति को छोड़कर रचनात्मक देश-सेवा में जी-जान से जुट पड़े।

पर शैक्षणिक-सामाजिक कामों के कारण साहित्यिक काम में कभी कोई रुकावट नहीं आने दी। कलम ने कभी रुकने का नाम न लिया। एक-पर-एक कविताओं, गीतों, उपन्यासों और नाटकों की रचना बराबर चलती रही। 'गीतांजलि' के गीतों और आज के हमारे राष्ट्रीय गीत 'जन-गण-मन' की रचना उन्हीं दिनों हुई। कवि के जीवन के प्रथम पचास वर्षों ने ही साहित्य के भंडार को भरपूर भर दिया था, लेकिन उनकी वास्तविक ख्याति बाद में हुई।

कवि ने कुल ग्यारह बार विदेश-यात्राएँ कीं। १९१२ की यात्रा में कई नामी अंग्रेज लेखकों, कलाकारों और विचारकों से उनकी गाढ़ी मित्रता हो गई। प्रसिद्ध कवि येट्स और कलाकार रोथेन्स्तायन उनके सबसे श्रद्धावान् प्रशंसक बन गए। उन्हींके प्रोत्साहन से कवि ने अपने कुछ गीतों और कविताओं के अंग्रेजी अनुवाद प्रकाशित किये। ये रचनाएँ 'गीतांजलि' नाम से प्रकाशित हुईं। (इस नाम से एक बँगला-गीत-संग्रह पहले ही प्रकाशित हो चुका था।) अंग्रेजी 'गीतांजलि' का विदेशी पाठकों पर बड़ा गहरा प्रभाव पड़ा इस पर कवि को 'नोबेल पुरस्कार' मिला, जो संसार का सबसे ऊँचा और सबसे अधिक लोभनीय पुरस्कार है।

पुरस्कार में प्राप्त एक लाख बीस हजार रुपये की पूरी रक़म कवि ने शान्तिनिकेतन आश्रम के कामों में लगा दी। शान्ति-निकेतन के नाम पर यह धन एक ग्राम-सहकारी बैंक खोलकर उसी में रखा गया, ताकि देहातियों का उपकार हो और उन्हें सस्ते ब्याज पर ऋण मिला करे। इस तरह उन्होंने एक ही साथ अपने आश्रम और देहातियों, दोनों की सहायता की। दोनों से उन्हें बड़ा ही अगाध प्रेम था।

बंगाल के गाँवों में नवजीवन लाने की योजना कवि के मन में बहुत दिनों से थी। आखिर शान्तिनिकेतन के पास सुरूल गाँव में इसे अमली रूप भी दिया जा सका। 'श्रीनिकेतन' नाम से

ग्रामीण पुनर्निर्माण का एक प्रतिष्ठान खोला गया। विज्ञान की सहायता से उपज बढ़ाने और वहाँ की दस्तकारी को उन्नत करने के लिए प्रयोग-परीक्षण शुरू किये गए। यह काम आज भी अबाध गति से चालू है। शान्तिनिकेतन और श्रीनिकेतन परस्पर सहयोगी संस्थान हैं। उनमें कवि के शिक्षण-सम्बन्धी और सामुदायिक विकास-सम्बन्धी विचारों को क्रियान्वित किया जाता है।

कवि के दिन बड़ी व्यस्तता में बीतते थे। विश्व-विख्यात हो जाने पर भी वह शान्तिनिकेतन में ही रहते और बच्चों को पढ़ाते थे। उनके साहित्यिक काम में भी एक नया ज्वार आ गया तथा उन्होंने गद्य-पद्य में ऐसी सुन्दर कृतियाँ भेंट कीं, जिनसे बँगला साहित्य के लिए नई दिशाओं के द्वार खुल गए। उन्हीं दिनों गांधीजी से कवि का व्यक्तिगत परिचय हुआ। १९१५ के शुरू में गांधीजी शान्तिनिकेतन आये। उस समय गांधीजी के दक्षिण अफ्रीका वाले फोनीक्स आश्रम के छात्र शान्तिनिकेतन में ही थे। उस समय दोनों महापुरुषों में जो मित्रता हुई, वह दिन-दिन बढ़ती ही रही।

१९१५ में अंग्रेजी सरकार ने कवि को 'सर' की उपाधि दी थी। पर १९१९ में जलियाँ वाला बाग़ का गोली-काण्ड हुआ, जिसमें अनेक निर्दोष और निहत्थे भारतीय गोलियों से भून दिये गए। शोक, लज्जा और रोष से आकुल कवि ने 'सर' की उपाधि लौटा दी। उपाधि लौटाते हुए जो पत्र उन्होंने अंग्रेज बड़े लाट को लिखा था, उसमें जनता पर किये गए अत्याचारों का बड़ा ही प्रबल और पौरुष-भरा प्रतिरोध किया था। वह पत्र अविस्मरणीय अभिलेख है।

अपनी ग्यारह विदेश-यात्राओं में कवि ने लगभग सारी दुनिया घूम ली थी। रूस-समेत पूरा यूरोप, अमरीका के दोनों महाद्वीप और एशिया के चीन, जापान, मलाया, जावा, ईरान, पश्चिम एशिया आदि अनेक देशों में वे हो आए थे। दुनिया को जितना ही देखा, उतना ही उनका यह विचार पक्का होता गया

कि सभी देशों की जनता में मित्रता और भाव-भावना की खुली लेन-देन हुए बिना संसार में सुख-शान्ति की आशा करना फ़िज़ूल है।

इसी आदर्श पर उन्होंने १९२१ में शान्तिनिकेतन के विश्व-भारती विश्वविद्यालय की स्थापना की। कवि की आन्तरिक अभिलाषा यह थी कि विश्वभारती में संसार के सभी देशों की शिक्षा-संस्कृति के दूत एकत्र हों। विश्वभारती के आदर्श-वाक्य के रूप में उन्होंने संस्कृत का यह वाक्य चुना : "यत्र विश्वम्भवत्येकनीड़म्"; अर्थात् "जहाँ सारा संसार एक ही घोंसले का पंछी बन जाय !"

कर्म का मन्त्र लेकर पैदा हुए थे, जीवन-भर कर्म में ही लगे रहे। कौन कहता है कि कवि सपनीले आलसी होते हैं? लगभग सत्तर साल की उम्र में, जब अधिकतर लोग अपने जीवन के काम पूरे करके विश्राम करते हैं, कवि ने एक नई कर्म-यात्रा शुरू की। वे चित्रकारी में लग पड़े और एक-से-एक विलक्षण हज़ारों चित्र बना डाले, जिन्हें देखकर सारी दुनिया चकित रह गई।

चित्रकारी के लिए उनका मन इतना आकुल हो उठता था कि चित्रकारी के सामान जुटा लेने तक राह देखना भी उनके लिए दूभर हो उठता था। जो-कुछ मिल जाता, उसीसे चित्र बनाने लगते। कागज़ न मिलने पर पुरानी पत्रिका की जिल्द पर तथा रंग न रहने पर कलम-स्याही से ही चित्रकारी करते। इस तरह उन्होंने दो हज़ार से भी अधिक चित्र बनाये, जो जितने सुन्दर और मनोहारी हैं, उतने ही विविध भी हैं।

तब तक दुनिया ने कवि की प्रतिभा का लोहा मान लिया था। बंगाल की जनता तो उन पर जी-जान से निछावर थी। उसने बड़ी धूमधाम से उनकी सत्तरवीं सालगिरह बनाई। बड़ी-बड़ी सभाएँ हुईं, नाटक खेले गए, उनके चित्रों की प्रदर्शनी लगी, विशेष प्रकाशन हुए, व्याख्यान हुए, क्या-क्या न हुआ। दूर-दूर देशों से अतिथि और शुभ-कामनाओं के संदेश आए।

समारोहों के ऐन बीच में ख़बर आई कि गाँधीजी आदि

राष्ट्र-नेता गिरफ़्तार हो गए हैं। कवि को बड़ा गहरा सदमा पहुँचा। उन्होंने समारोह के सभी आनन्द-उत्सव बन्द करा दिए।

यह बात १९३१ की है। उस समय दुनिया में गांधीजी के सिवा कोई भी ऐसा तीसरा व्यक्ति नहीं था, जो रवीन्द्रनाथ की तरह इतना सर्व-जन-स्वीकृत महापुरुष रहा हो।

इस तरह दिन बीतते रहे। बड़े कठिन दिन थे वे भी। देश स्वाधीनता की उस घमासान लड़ाई में लगा हुआ था, जिसके नेता महात्मा गाँधी थे। पशु-शक्ति के दानव, फ़ासीवाद और नात्सीवाद ने सारी दुनिया में सिर उठाना शुरू कर दिया था। वे मानव-अधिकारों को निगल जाने पर तुले थे। कवि के सभी आदर्शों और मान्यताओं को पैरों-तले रौंदा जा रहा था। यह उनकी आत्मा के लिए बड़ी कठिन यातना का कारण था। तिस पर बुढ़ापे और गिरे हुए स्वास्थ्य के कष्ट तो थे ही। लेकिन कवि ने अन्त-अन्त तक मानव के भविष्य में विश्वास का झंडा बुलन्द रखा। उनके अन्तिम उद्गारों में से अनेक ऐसे हैं, जो इस अडिग विश्वास के ज्वलन्त प्रमाण हैं और जो देशवासियों के प्रति उनके विदा-कालीन उपहार के रूप में अमर रहेंगे।

७ अगस्त १९४१ को राखी के दिन कवि ने अपनी आँखें, मूँद लीं। वही आँखें, जिनसे अस्सी बरस तक उन्होंने दुनिया का न जाने कितना सौन्दर्य देखा था! जोड़ासाँको के जिस पुराने महल में वे आँखें दुनिया के प्रथम दर्शन के लिए खुली थीं, उसीमें अंतिम बार बन्द भी हुईं। बँगला पञ्चांग के अनुसार कवि की जन्म-तथि पच्चीस वैशाख और निधन-तिथि बाईस श्रावण को पड़ती है। उस 'बाइशे श्रावण' को सारा देश शोक से मुरझा गया था। तब तक दूसरा विश्व-युद्ध समाप्त नहीं हुआ था। कवि को वह दिन देखना नसीब न हुआ, जब उनके विश्वास की विजय हुई और देश स्वाधीन हुआ। इन्हीं दो चीज़ों के लिए कवि ने आजीवन संघर्ष किया था।

उनका जीवन उदात्त रहा और मृत्यु का स्वागत उन्होंने निर्भय होकर किया। मृत्यु की अगवानी का आभास पाकर उन्होंने एक गीत लिखा और इच्छा प्रकट की कि यही गीत मेरी मृत्यु पर गाया जाय। उस गीत की पहली कड़ी यह है :

"समुखे शान्ति-पारावार——
भासाओ तरणी हे कर्णधार।"
(सामने शान्ति-पारावार——
खोल दो नैया कर्णधार।)

(जिसे कवि ने आजीवन प्यार किया था, जिसे वे अपना प्रेम-पात्र, मित्र और मार्ग-दर्शक मानते रहे थे, उसी) ईश्वर को 'कर्णधार' बनाकर हमारे कवि इस 'तरणी' पर सवार हुए और 'शान्ति-पारावार' में उतरकर महा-अजाना (विराट् अज्ञात) की ओर चले गए।

किसी के जीवन की सभी घटनाएँ कहकर सुनाने-भर से ही उस व्यक्ति का सच्चा परिचय नहीं मिल पाता। रवीन्द्रनाथ कैसे आदमी थे? सुन्दर और कद्दावर थे, गठन के सुडौल और काठी के बलिष्ठ थे, आँखों में स्निग्धता और दमक थी, स्वर गम्भीर और मधुर था। उनका रस-बोध बड़ा ही उज्ज्वल था। हँसी की बात करते तो सारा मुख-मण्डल दमक उठता था। आँखें दिप उठती थीं। हाजिरजवाबी में उनका जवाब नहीं था।

लेकिन जब तन्मय होकर कुछ लिखने बैठते तो ऐसा लगता कि किसी और ही दुनिया में पहुँच गए हैं। नहाना-धोना, खाना-पीना और सोना तक भूल जाते। उस समय उनके पुराने वफ़ादार नौकर के सिवा किसी को भी पास जाने का साहस नहीं होता था।

लेकिन यह साधना सिर्फ़ पुस्तकों, लेखन, संगीत या चित्र-कारी तक ही सीमित नहीं थी। वह तो समस्त जीवन को ही एक कलाकृति बना डालने की धुन में थे। और कला उनके लिए 'सत्यम् शिवम् सुन्दरम्' की आन्तरिक झाँकी थी।

जनता के प्रति उन्हें जो अगाध प्रेम था, उसके दर्शन उनकी रचनाओं में ही नहीं बल्कि उनके जीवन के प्रत्येक कार्य-कलाप में होते थे। नये क्षितिजों के द्वार तो उन्होंने मुक्त किये ही, अपने देश के प्राचीन और मनोरम अनुष्ठानों, सजावटों, वेश-भूषाओं, साहित्य, शिल्प-कला, संगीत, पर्वों-त्योहारों आदि के पुनरुद्धार के काम में भी उनकी उतनी ही लगन और श्रद्धा थी।

दिखावे से वे कोई सरोकार नहीं रखते थे। सिर्फ़ वही करते या कहते, जिसमें उनका आन्तरिक विश्वास होता। विधाता के मंगल-विधान में उनकी आस्था अडिग थी। लिखते भी वही थे, जिसे सर्वथा सत्य मानते थे। जब कभी उन्हें ऐसा महसूस हुआ कि मेरा मत ठीक नहीं, तभी उन्होंने बेझिझक होकर अपनी भूल सुधार ली। यह भी उनकी सत्यनिष्ठा का एक और प्रमाण है।

बच्चों से उन्हें अपार प्यार था। बच्चों को वे प्यार ही नहीं करते थे, उनमें विश्वास भी करते थे, और उनका आदर भी करते थे। उन्हें नादान, अबोध और मूर्ख नहीं, बल्कि समझदार मानते थे। उनका विश्वास था कि कठिन विषय को भी सरल बनाकर समझाने पर बच्चे सारी बात हृदयंगम कर सकते हैं। बच्चों को डाटने-फटकारने के बजाय अगर उनके साथ खेला जाय और तर्क किया जाय तो उनके सर्वोत्तम गुण उभरकर विकास पायँगे। शान्तिनिकेतन के आश्रम में वे इसी सिद्धान्त पर चलते थे।

अपनी सुख-सुविधा की उन्हें कोई परवाह नहीं रहती थी। सादगी की सुन्दरता में उनका विश्वास अडिग था। लेकिन साथ ही, जीवन के जो भी सुख-विलास हैं, उन्हें वे ठुकराते कभी नहीं थे। जीवन की देन मानकर उन्हें ग्रहण करते थे। लेकिन विलास के बीच भी निर्लिप्त रहकर सुखों का उपभोग किया और जब भी अवसर आया, सहज भाव से उन्हें त्याग भी दिया।

नकली और बनावटी हर चीज़ से वह बचते थे। इसीसे उनका देश-प्रेम इतना गहरा हो उठा था। विदेशियों के गुणों के

प्रति वे श्रद्धावान् रहे, पर विदेशियों की नकल करना उनके लिए घृणा का विषय था। अपने साहित्य और जीवन से उन्होंने यह स्पष्ट कर दिया कि हमें न तो अपने अतीत की नकल करनी चाहिए और न ग़ैरों के तौर-तरीकों की। हम जो कुछ भी हों, सचाई से वही बने रहें, तभी हम स्वस्थ और दृढ़ राष्ट्रीय संस्कृति का निर्माण कर सकते है। ऐसी संस्कृति का, जिसकी जड़ें तो देश की प्राचीन ज्ञान-भूमि में जमी रहें, पर हरी डालियाँ आज के युग-सूर्य की रश्मियाँ ग्रहण करने के लिए चारों ओर फैली हुई हों।

उनके गीत इसीके एक और सुस्पष्ट प्रमाण हैं। उनकी भाषा आधुनिक है, स्वर नये हैं, पर उनके माध्यम से हमारे प्राचीन पुरखे भी अपनी बात सुना जाते हैं। भाव, विचार, शब्द और संगीत का इतना सर्वाङ्गपूर्ण समन्वय सचमुच दुर्लभ है।

किसी भी देश या किसी भी युग में ऐसे लोग शायद ही हुए हों, जिन्होंने अपनी जनता के लिए इतनी अधिक और इतनी सुरुचिर कविताओं, गीतों, नाटकों, उपन्यासों, कहानियों और निबन्धों की विरासत छोड़ी हो। सहज विश्वास नहीं होता कि इन कृतियों की रचना के साथ-साथ ही कोई आदमी शिक्षा, समाज-सुधार और ललित कलाओं के क्षेत्रों में भी इतना कुछ कर सकता है!

इसलिए इस बात से किसी को कोई अचम्भा नहीं होगा कि रवीन्द्रनाथ के जन्म-दिन, ७ मई १८६१ ई० के ठीक सौ बरस बाद आज उनके देशवासी उन्हें इतने प्यार और इतनी कृतज्ञता के साथ याद कर रहे हैं। और अपने देशवासी ही क्यों? शतवार्षिकी के दिन सारे संसार के लोग उन्हें याद करेंगे। उन्होंने अपनी मातृ-भूमि के लिए सारे संसार का सम्मान और श्रद्धा अर्जित की थी। और सो भी ऐसे समय में, जब भारत स्वाधीन भी नहीं हो पाया था। यह काम वे इसलिए कर सके थे कि उन्होंने अपने-आपमें भारतीय चिन्ता-धारा और संस्कृति के उत्तम-से-उत्तम और उदात्त-से-उदात्त अवदानों को आत्मसात् कर लिया था।

देशेर माटि

ओ आमार	देशेर माटि, तोमार 'परे ठेकाइ माथा
तोमाते	विश्वमयीर, तोमाते विश्वमायेर आँचल पाता ॥
तुमि	मिशेछ मोर देहेर सने,
तुमि	मिलेछ मोर प्राणे मने,
तोमार ओइ	श्यामलबरन कोमल मूर्त्ति मर्मे गाँथा ॥
	तोमार कोले जनम आमार, मरण तोमार बुके।
	तोमार 'परेइ खेला आमार दुःखे सुखे ।
तुमि	अन्न मुखे तुले दिले,
तुमि	शीतल जले जुड़ाइले,
तुमि ये	सकल-सहा सकल-बहा मातार माता ॥
	अनेक तोमार खेयेछि गो, अनेक नियेछि मा—
तबु	जानि ने-ये की वा तोमाय दियेछि मा ।
आमार	जनम गेल मिछे काजे,
आमि	काटानु दिन घरेर माझे—
तुमि	वृथा आमाय शक्ति दिले शक्तिदाता ।

राजार बाड़ि

आमार राजार बाड़ि कोथाय केउ जाने ना से तो !
से बाड़ि कि थाकत यदि लोके जानते पेत।
रूपो दिये देयाल गाँथा, सोना दिये छात,
थाके थाके सिँड़ि ओठे सादा हातिर दाँत।
सातमहला कोठाय सेथा थाकेन सुयोरानी,
सात राजार धन मानिक-गाँथा गलार मालाखानि।
आमार राजार बाड़ि कोथाय शोन् मा, काने काने—
छादेर पाशे तुल्सि गाछेर टब आछे येइखाने ॥

राजकन्या घुमोय कोथा सात सागरेर पारे,
आमि छाड़ा आर केह ता पाय ना खुँजे तारे।
दु हाते तार काँकन दुटि, दुइ काने दुइ दुल,
खाटेर थेके माटिर 'परे लुटिये पड़े चुल।
घुम भेङे तार याबे यखन सोनार काठि छुँये
हासिते तार मानिकगुलि पड़बे झ'रे भुँये।
राजकन्या घुमोय कोथा शोन् मा, काने काने—
छादेर पाशे तुल्सि गाछेर टब आछे येइखाने ॥

तोमरा यखन घाटे चलो स्नानेर बेला हले
आमि तखन चुपिचुपि याइ से छादे चले।
पाँचिल बेये छायाखानि पड़े मा, येइ कोणे
सेइखानेते पा छड़िये बसि आपन-मने।

सङ्गे शुधु निये आसि मिनि बेड़ालटाके,
सेओ जाने नापित भाया कोन्‌खानेते थाके ।
जानिस नापित-पाड़ा कोथाय ? शोन् मा, काने काने—
छादेर पाशे तुल्‌सि गाछेर टब आछे येइखाने ॥

दूरेर डाक

शान्तिनिकेतन

तोमादेर बइये बोध हय पड़े थाकबे, पाखिरा माझे माझे बासा छेड़े दिये समुद्रेर ओपारे चले याय। आमि हच्चि सेइ-जातेर पाखि। माझे-माझे दूर पार थेके डाक आसे, आमार पाखा धड़फड़ करे ओठे। आमि एइ वैशाख मासेर शेष दिके जाहाजे चड़े प्रशान्त महासागरे पाड़ि देब बले आयोजन करचि। यदि कोनो बाधा ना घटे ताहले बेरिये प्रड़ब। पश्चिम दिकेर समुद्रपथ आजकाल युद्धेर दिने सकल समय पारेर दिके पौंछिये देय ना, तलार दिकेइ टाने। पूर्व दिकेर समुद्रपथ एखनो खोला आछे—कोन्‌दिन हयतो देखब सेखानेओ युद्धेर झड़ एसे पौंछेचे। याइ होक तोमार काशीर निमन्त्रण-ये भुलेचि ता मने कोरो ना; तुमि आयोजन ठिक करे रेखो, आमि केवल एकबार पथेर मध्ये अस्ट्रेलिया, जापान, आमेरिका प्रभृति दुटो चारटे जायगाय निमन्त्रण चट् करे सेरे निये तारपरे तोमार ओखाने गिये बेश आराम करे बसब—आमार जन्ये किन्तु छातु किम्वा रुटि, अड़रेर डाल एवं चाटनिर बन्दोबस्त करले चलबे ना; तोमादेर महाराज निश्चयइ खुब भालो राँधे, किन्तु तुमि यदि निजे स्वहस्ते शुकतानि थेके आरम्भ करे पायस पर्यन्त रेँधे ना खाओयाओ ताहले सेइ मुहूर्तेइ आमि—की करब एखनो ता ठिक करिनि—भावछिलुम ना खेयेइ सेइ मुहूर्तेइ आबार अस्ट्रेलिया चले याब—किन्तु प्रतिज्ञा राखते पारब किना एकटु सन्देह आछे सेइजन्येइ एखन किछु बललुम ना। किन्तु रान्ना अभ्यास हयनि बुझि? ताइ बल। केवलि पड़ा मुखस्थ करच? आच्छा, अन्तत एक बछर समय दिलुम—

एर मध्येइ मार काछे शिखे नियो। ताहले सेइ कथा रइल, आपातत आमाके कलकाताय येते हबे, बाक्सगुलो गुछिये फेला चाइ। आमि खुब भालो गोछाते पारि। केवल आमार एकटु यत्सामान्य दोष आछे— प्रधान-प्रधान दरकारी जिनिसगुलो प्याक करते प्रायइ भुले याइ— यखन तादेर दरकार हय ठिक सेइ समय देखि तादेर आना हयनि। एते विषम असुविधा हय बटे किन्तु गोछाबार भारि सुबिधे—केनना बाक्सेर मध्ये यथेष्ट जायगा पाओया याय, आर बोझा कम हओयाते रेलभाड़ा जाहाजभाड़ा अनेक कम लागे। दरकारी जिनिस ना निये अदरकारी जिनिस सङ्गे नेबार आर-एकटा मस्त सुबिधे हच्चे एइ ये—सेगुलो बारबार बेर-कराकरिर दरकार हय ना, बेश गोछानोइ थेके याय; आर यदि हारिये याय किंवा चुरि याय ताहलेओ काजेर विशेष व्याघात किंवा मनेर अशान्ति घटे ना। आज आर बेशि लेखबार समय नेइ, केनना आज तिनटेर गाड़ितेइ रओना हते हबे। गाड़ि फेल करबार आश्चर्य क्षमता आमार आछे, किन्तु से क्षमताटा आजके आमार पक्षे सुविधार हबे ना; अतएव तोमाके नववर्षेर आशीर्वाद जानिये आमि टिकिट किनते दौड़लुम।

इति २रा वैशाख, १३२५।

('भानुसिंहेर पत्रावली' का तीसरा पत्र)

बिष्टि पड़े टापुर टुपुर

दिनेर आलो निबे एल,
सुय्यि डोबे डोबे।
आकाश घिरे मेघ जुटेछे—
चाँदेर लोभे लोभे।

मेघेर उपर मेघ करेछे—
रङेर उपर रङ,
मन्दिरेते काँसर घण्टा
बाजल ठङ ठङ।

ओ पारेते बिष्टि एल,
झापसा गाछपाला।
ए पारेते मेघेर माथाय
एकशो मानिक ज्वाला।

बादला हाओयाय मने पड़े
छेलेबेलार गान—
बिष्टि पड़े टापुर टुपुर,
नदेय एल बान॥

आकाश जुड़े मेघेर खेला
कोथाय वा सीमाना।
देशे देशे खेले बेड़ाय
केउ करे ना माना।

कत नतुन फुलेर बने
बिष्टि दिये याय—
पले पले नतुन खेला
कोथाय भेबे पाय ।

मेघेर खेला देखे कत
खेला पड़े मने—
कत दिनेर नुकोचुरि
कत घरेर कोणे ।

तारि सङ्गे मने पड़े
छेलेबेलार गान—
बिष्टि पड़े टापुर टुपुर
नदेय एल बान ॥

मने पड़े घरटि आलो
मायेर हासिमुख,
मने पड़े मेघेर डाके
गुरु - गुरु बुक ।

बिछानाटिर एकटि पाशे
घुमिये आछे खोका,
मायेर 'परे दौरात्मि से
ना याय लेखाजोका ।

घरेते दुरन्त छेले
करे दापादापि,
बाइरेते मेघ डेके ओठे
सृष्टि ओठे काँपि ।

मने पड़े मायेर मुखे
शुनेछिलेम गान—

बिष्टि पड़े टापुर टुपुर
नदेय एल बान ॥

मने पड़े सुयोरानी
दुयोरानीर कथा,
मने पड़े अभिमानी
कङ्कावतीर व्यथा,

मने पड़े घरेर कोणे
मिटिमिटि आलो,
एकटा दिकेर देयालेते
छाया कालो कालो ।

बाइरे केवल जलेर शब्द
झुप् झुप् झुप्—
दस्यि छेले गल्प शोने
एकेबारे चुप ।

तारि सङ्गे मने पड़े
मेघला दिनेर गान—
बिष्टि पड़े टापुर टुपुर
नदेय एल बान ॥

कबे बिष्टि पड़ेछिल
बान एल से कोथा !
शिवठाकुरेर बिये हल
कबेकार से कथा !

से दिनओ कि एमनितरो
मेघेर घटाखाना ?

थेके थेके बाज बिजुलि
दिच्छिल कि हाना ?

तिन कन्ये बिये क’रे
की हल तार शेषे ?
ना जानि कोन् नदीर धारे
ना जानि कोन् देशे

कोन् छेलेरे घुम पाड़ाते
के गाहिल गान—
बिष्टि पड़े टापुर टुपुर
नदेय एल बान ॥

शम्भु

गुप्तिपाड़ार विश्वम्भर-बाबु पाल्कि च'ड़े चलेछेन सप्तग्राम। फाल्गुन मास। किन्तु एखनो खुब ठाण्डा। किछु आगे प्राय सप्ताह ध'रे वृष्टि हये गेछे। विश्वम्भर-बाबुर गाये एक मोटा कम्बल। पाल्किर सङ्गे चलेछे ताँर शम्भु चाकर, हाते एक लम्बा लाठि। पाल्किर छादे ओषुधेर बाक्स, दड़ि दिये बाँधा। शम्भुर गाये अद्भुत जोर। एकबार कुम्भीरार जङ्गले ताके भल्लुके धरेछिल। सङ्गे बन्दुक छिल ना। शुद्ध केवल लाठि निये भल्लुकेर सङ्गे तार युद्ध ह'ल। शम्भुर हातेर लाठि खेये भल्लुकेर मेरुदण्ड गेल भेङे। तार आर उत्थानशक्ति रइल ना। आर एकबार शम्भु बिश्वम्भर-बाबुर संगे गियेछिल स्वर्णगञ्जे। सेखाने पद्मानदीर चरे रान्ना चड़ाते हबे। तखन ग्रीष्मकालेर मध्याह्न। पद्मार धारे छोटो छोटो झाउ गाछेर जङ्गल। उनान धरानो चाइ। दा दिये शम्भु झाउडाल केटे आँटि बाँधल। असह्य रौद्र। बड़ो तृष्णा पेयेछे। नदीते शम्भु जल खेते गेल। एमन समय देखले, एकटा बाछुरके धरेछे कुमीरे। शम्भु एक लम्फे जले प'ड़े कुमीरेर पिठे च'ड़े बसल। दा दिये तार गलाय पोंच दिते लागल। जल लाल हये उठल रक्ते। कुमीर यन्त्रणाय बाछुरके दिल छेड़े। शम्भु साँतार दिये डाङाय उठे एल।

विश्वम्भर-बाबु डाक्तार। रोगी देखते चलेछेन बहु दूरे। सेखाने इस्टिमार-घाटेर इस्टेशन-मास्टर मधु विश्वास। ताँर छोटो छेलेर अम्लशूल, बड़ो कष्ट पाच्छे।

विष्णुपुरेर पश्चिम धारेर माठ प्रकाण्ड। सेखाने यखन पाल्कि एल तखन सन्ध्या हये एसेछे। राखाल गोरु निये चलेछे गोष्ठे

फिरे। विश्वम्भर-बाबु ताके डेके जिज्ञासा करलेन, "ओहे बापु, सप्तग्राम कत दूरे बलते पारो ?"

राखाल बलले, "आज्ञे, से तो सात क्रोश हबे। आज सेखाने याबेन ना। पथे भीष्महाटेर माठ, तार काछे श्मशान। सेखाने डाकातेर भय।"

डाक्तार बललेन, "बाबा, रोगी कष्ट पाच्छे, आमाके येतेइ हबे।"

तिल्पनि खालेर धारे यखन पाल्कि एल रात्रि तखन दशटा। बाँधन आलगा हये पाल्किर छाद थेके डाक्तारेर बाक्सटा गेल प'ड़े। क्यास्टर अयेलेर शिशि भेङे चूर्ण हये गेल। बाक्सटा तो फेर शक्त क'रे बाँधले। किन्तु आबार विपद। खाल पेरिये आन्दाज दु क्रोश पथ गेछे, एमन समय मड़्मड़् क'रे डाण्डा गेल भेङे, पाल्किटा पड़ल माटिते। पाल्कि हालका काठे तैरी; बिश्वम्भर-बाबुर देहटि स्थूल।

एमन समय बेहारादेर सर्दार बुद्धु एसे बलले, "ऐ-ये कारा आसछे, ओरा डाकात सन्देह नेइ।"

विश्वम्भर-बाबु बललेन, "भय की, तोरा तो सबाइ आछिस।"

बुद्धु बलले, "बल्गु पालियेछे, पल्लुकेओ देखछि ने। बक्सि लुकियेछे ऐ झोपेर मध्ये। भये विष्णुर हात पा आड़ष्ट।"

शुने डाक्तार तो भये कम्पित। डाकलेन, "शम्भु।"

शम्भु बलले, "आज्ञे।"

डाक्तार बललेन, "एखन उपाय की ?"

शम्भु बलले, "भय नेइ, आमि आछि।"

डाक्तार बललेन, "ओरा ये पाँचजन।"

शम्भु बलले, "आमि ये शम्भु।" एइ ब'ले उठे दाँड़िये एक लम्फ दिले, गर्जन क'रे बलले, "खबर्दार।"

डाकातेरा अट्टहास्य क'रे एगिये आसते लागल। तखन शम्भु

पाल्किर सेइ भाङा डाण्डाखाना तुले निये ओदेर दिके छुँड़े मारले। तारि एक घाये तिनजन एकसङ्गे पड़े गेल। तार परे शम्भु लाठि घुरिये येइ ओदेर मध्ये झाँपिये पड़ल बाकि दुजने दिल दौड़।

तखन डाक्तार-बाबु डाकलेन, "शम्भु।"

शम्भु बलले, "आज्ञे।"

विश्वम्भर-बाबु बललेन, "एइबार बाक्सटा बेर करो।"

शम्भु बलले, "केन, बाक्स निये की हबे ?"

डाक्तार बललेन, "ऐ तिनटे लोकेर डाक्तारि करा चाइ। ब्याण्डेज बाँधते हबे।"

रात्रि तखन अल्पइ बाकि। बिश्वम्भर-बाबु आर शम्भु दुजने मिले तिनजनेर शुश्रूषा करलेन।

सकाल हयेछे। छिन्न मेघेर मध्य दिये सूर्येर रश्मि फेटे पड़छे। एके एके सब बेहरा फिरे आसे। बलगु एल, पल्लु एल, बक्सिर हात धरे एल विष्णु, तखनो तार हृत्पिण्ड कम्पमान।

('सहज पाठ' भाग २ का बारहवाँ पाठ)

कालो राति गेल घुचे

कालो राति गेल घुचे
आलो तारे दिल मुछे।
पुब दिके घुम-भाङा
हासे उषा चोख-राङा।
नाहि जानि कोथा थेके
डाक दिल चाँदेरे के।
भये भये पथ खुँजि
चाँद ताइ याय बुझि।
तारागुलि निये बाति
जेगे छिल सारा राति।
नेमे एल पथ भुले
बेलफुले जुँइफुले।
वायु दिके दिके फेरे
डेके डेके सकलेरे।
बने बने पाखि जागे।
मेघे मेघे रङ लागे।
जले जले ढेउ ओठे।
डाले डाले फुल फोटे।

नाम तार मोतिबिल

नाम तार मोतिबिल, बहु दूर जल,
हाँसगुलि भेसे भेसे करे कोलाहल ।

पाँके चेये थाके बक, चिल उड़े चले,
माछराङा भुप क'रे पड़े एसे जले ।

हेथा होथा डाङा जागे घास दिये ढाका,
माझे माझे जलधारा चले आँका बाँका ।

कोथाओ वा धानखेत जले आधो डोबा,
तारि परे रोद पड़े, किवा तार शोभा ।

डिङि च'ड़े आसे चाषी, केटे लये धान,
बेला गेले गाँये फेरे गेये सारिगान ।

मोष निये पार हय राखालेर छेले,
बाँशे बाँधा जाल निये माछ धरे जेले ।

मेघ चले भेसे भेसे आकाशेर गाय,
घन शेओलार दल जले भेसे याय ।

तोता-काहिनी

एक ये छिल पाखी । से छिल मूर्ख । से गान गाहित, शास्त्र पड़ित ना । लाफाइत, उड़ित; जानित ना कायदा-कानुन काके बले ।

राजा बलिलेन, 'एमन पाखि तो काजे लागे ना, अथच बनेर फल खाइया राजहाटे फलेर बाजारे लोकसान घटाय ।'

मन्त्री के डाकिया बलिलेन, 'पाखिटाके शिक्षा दाओ ।'

२

राजार भागिनादेर उपर भार पड़िल पाखिटाके शिक्षा दिबार ।

पण्डितेरा बसिया अनेक बिचार करिलेन । प्रश्नटा एइ, उक्त जीवेर अविद्यार कारण की ?'

सिद्धान्त हइल, सामान्य खड़कुटा दिया पाखि ये बासा बाँधे से बासाय विद्या बेशि धरे ना । ताइ सकलेर आगे दरकार, भालो करिया खाँचा बानाइया देओया ।

राजपण्डितेरा दक्षिणा पाइया खुशि हइया बासाय फिरिलेन ।

३

स्याकरा बसिल सोनार खाँचा बानाइते । खाँचाटा हइल अमन आश्चर्य ये, देखिबार जन्य देश-विदेशेर लोक झुँकिया पड़िल। केह बले, 'शिक्षार एकेबारे हद्दमुद्द ।' केह बले, 'शिक्षा यदि नाओ हय, खाँचा तो हइल ! पाखिर की कपाल !'

स्याकरा थलि बोझाइ करिया बकशिश पाइल । खुशि हइया

से तखनि पाड़ि दिल बाड़िर दिके।

पण्डित बसिलेन पाखिके विद्या शिखाइते। नस्य लइया बलिलेन, 'अल्प पुँथिर कर्म नय।'

भागिना तखन पुँथि-लिखकदेर तलब करिलेन। तारा पुँथिर नकल करिया एवं नकलेर नकल करिया पर्वतप्रमाण करिया तुलिल। ये देखिल सेइ बलिल, 'साबास! बिद्या आर धरे ना।'

लिपिकरेर दल पारितोषिक लइल बलद बोझाइ करिया। तखनि घरेर दिके दौड़ दिल। तादेर संसारे आर टानाटानि रहिल ना।

अनेक दामेर खाँचाटार जन्य भागिनादेर खबरदारिर सीमा नाइ। मेरामत तो लागियाइ आछे। तार परे झाड़ा मोछा पालिश-करार घटा देखिया सकलेइ बलिल, 'उन्नति हइतेछे।'

लोक लागिल बिस्तर एवं तादेर उपर नजर राखिबार जन्य लोक लागिल आरओ बिस्तर। तारा मास-मास मुठा-मुठा तनखा पाइया सिन्धुक बोझाइ करिल।

तारा एवं तादेर मामातो खुड़तुतो मासतुतो भाइरा खुशि हइया कोठा-बालाखानाय गदि पतिया बसिल।

४

संसारे अन्य अभाव अनेक आछे, केवल निन्दुक आछे यथेष्ट। तारा बलिल, 'खाँचाटार उन्नति हइतेछे, किन्तु पाखिटार खबर केह राखे ना।'

कथाटा राजार काने गेल। तिनि भागिना के डाकिया बलिलेन 'भागिना, ए की कथा शुनि!'

भागिना बलिल, 'महाराज, सत्य कथा यदि शुनिबेन तबे डाकुन स्याकरादेर, पण्डितदेर, लिपिकरदेर; डाकुन यारा मेरामत करे एवं मेरामत तदारक करिया बेड़ाय। निन्दुकगुलो खाइते पाय ना बलियाइ मन्द कथा बले।

जबाब शुनिया राजा अवस्थाटा परिष्कार बुझिलेन, आर तखनि भागिनार गलाय सोनार हार चड़िल ।

५

शिक्षा ये की भयङ्कर तेजे चलितेछे, राजार इच्छा हइल स्वयं देखिबेन । एक दिन ताइ पात्र मित्र अमात्य लइया शिक्षा-शालाय तिनि स्वयं आसिया उपस्थित ।

देउड़िर काछे अमनि बाजिल शाँख घण्टा ढाक ढोल काड़ा नाकाड़ा तुरि भेरि दामामा काँसि बाँशि काँसर खोल करताल मृदंग जगझम्प । पण्डितेरा गला छाड़िया, टिकि नाड़िया, मन्त्रपाठे लागिलेन । मिस्त्रि मजुर स्याकरा लिपिकर तदारक-नबिश आर मामातो पिसतुतो खुड़तुतो एवं मासतुतो भाइ जयध्वनि तुलिल ।

भागिना बलिल, 'महाराज काण्डटा देखितेछेन ?'

महाराज बलिलेन, 'आश्चर्य ! शब्द कम नय ।'

भागिना बलिल, 'शुधु शब्द नय, पिछने अर्थओ कम नाइ ।'

राजा खुशि हइया देउड़ि पार हइया येइ हातिते उठिबेन एमन समय, निन्दुक छिल झोपेर मध्ये गा ढाका दिया, से बलिया उठिल, 'महाराज, पाखिटाके देखियाछेन कि ?'

राजार चमक लागिल; बलिलेन, 'ओइ या ! मने तो छिल ना । पाखिटाके देखा हय नाइ ।'

फिरिया आसिया पण्डितके बलिलेन, 'पाखिके तोमरा केमन शेखाओ तार कायदाटा देखा चाइ ।'

देखा हइल । देखिया बड़ो खुशि । कायदाटा पाखिटार चेये एत बेशि बड़ो ये, पाखिटाके देखाइ याय ना; मने हय, ताके ना देखिलेओ चले । राजा बुझिलेन, आयोजनेर त्रुटि नाइ । खाँचाय दाना नाइ, पानि नाइ; केवल राशि राशि पुँथि हइते राशि राशि पाता छिँड़िया कलमेर डगा दिया पाखिर मुखेर मध्ये ठासा हइतेछे । गान तो बन्धइ—चीत्कार करिबार फाँकटुकु पर्यन्त बोजा । देखिले

शरीरे रोमाञ्च हय।

एबारे राजा हातिते चड़िबार समय कानमला-सर्दारके बलिया दिलेन, निन्दुकेर येन आच्छा करिया कान मलिया देओया हय।

६

पाखिटा दिने दिने भद्रदस्तुर-मत आधमरा हइया आसिल। अभिभावकेरा बुझिल, बेश आशाजनक। तबु स्वभावदोषे सकाल बेलार आलोर दिके पाखि चाय आर अन्याय रकमे पाखा छट्फट् करे। एमन-कि, एक-एकदिन देखा याय, से तार रोगा ठोंट दिया खाँचार शला काटिबार चेष्टाय आछे।

कोतोयाल बलिल, 'एकि बेयादबि!'

तखन शिक्षामहले हापर हातुड़ि आगुन लइया कामार आसिया हाजिर। की दमाद्दम पिटानि! लोहार शिकल तैरि हइल, पाखिर डानाओ गेल काटा।

राजार सम्बन्धीरा मुख हाँड़ि करिया माथा नाड़िया बलिल, 'ए राज्ये पाखिदेर केवल ये आक्किल नाइ ता नय, कृतज्ञताओ नाइ।'

तखन पण्डितेरा एक हाते कलम, एक हाते सड़कि लइया, एमनि काण्ड करिल याके बले शिक्षा।

कामारेर पसार बाड़िया कामारगिन्निर गाये सोनादाना चड़िल एवं कोतोयालेर हुँशियारि देखिया राजा ताके शिरोपा दिलेन।

७

पाखिटा मरिल। कोन्काले ये, केउ ता ठाहर करिते पारे-नाइ।

निन्दुक लक्ष्मीछाड़ा रटाइल, 'पाखि मरियाछे।'

भागिनाके डाकिया राजा बलिलेन, 'भागिना, ए की कथा

शुनि !'

भागिना बलिल, 'महाराज, पाखिटार शिक्षा पुरो हइयाछे।'

राजा शुधाइलेन, 'ओ कि आर लाफाय ?'

भागिना बलिल, 'आरे राम !'

'आर कि ओड़े ?'

'ना ।'

'आर कि गान गाय ?'

'ना ।'

'दाना ना पाइले आर कि चेंचाय ?'

'ना ।'

राजा बलिलेन, 'एकबार पाखिटाके आनो तो, देखि ।'

पाखि आसिल । सङ्गे कोतोयाल आसिल, पाइक आसिल, घोड़सओयार आसिल ।

राजा पाखिटाके टिपिलेन। से हाँ करिल ना, हुँ करिल ना । केवल तार पेटेर मध्ये पुँथिर शुकनो पाता खस्खस् गज्गज् करिते लागिल ।

बाहिरे नववसन्तेर दक्षिणहाओयाय किशलयगुलि दीर्घ निश्वासे मुकलित वनेर आकाश आकुल करिया दिल ।

माघ १३२४]

मुनशी

आच्छा दादामशाय, तोमादेर सेइ मुनशीजि एखन कोथाय आछेन।

एइ प्रश्नेर जबाब दिते पारब तार समयटा बुझि काछे एसेछे, तबु हयतो किछुदिन सबुर करते हबे।

फेर अमन कथा यदि तुमि बल, ता हले तोमार सङ्गे कथा बन्ध करब।

सर्वनाश, तार चेये ये मिथ्ये कथा बलाओ भालो। तोमार दादामशाय यखन स्कुल-पालाने छेले छिल तखन मुनशीजि छिलेन, ठिक कत वयसे, ता बला शक्त।

तिनि बुझि पागल छिलेन ?

हाँ, येमन पागल आमि।

तुमि आबार पागल ? की ये बल तार ठिक नेइ।

ताँर पागलामिर लक्षण शुनले बुझते पारबे, आमार सङ्गे तार आश्चर्य मिल।

की रकम शुनि।

येमन तिनि बलतेन, जगते तिनि अद्वितीय। आमिओ ताइ बलि।

तुमि या बल से तो सत्यि कथा। किन्तु तिनि या बलतेन ता ये मिथ्ये।

देखो दिदि, सत्य कखनो सत्यइ हय ना यदि सकलेर सम्बन्धेइ से ना खाटे। विधाता लक्षकोटि मानुष बानियेछेन, ताँरा प्रत्येकेइ अद्वितीय। ताँदेर छाँच भेङे फेलेछेन। अधिकांश लोके निजेके

पाँचजनेर समान मने क'रे आराम बोध करे। दवात् एक-एकजन लोकके पाओया याय यारा जाने, तादेर जुड़ि नेइ। मुनशी छिलेन सेइ जातेर मानुष !

दादामशाय, तुमि एकटु स्पष्ट करे ताँर कथा बलो-ना, तोमार अर्धेक कथा आमि बुझते पारि ने।

क्रमे क्रमे बलछि, एकटु धैर्य धरो।—

आमादेर बाड़िते छिलेन मुनशी, दादाके फार्सि पड़ातेन। काठामोटा ताँर बानिये तुलते मांसेर पड़ेछिल टानाटानि। हाड़ क'खानार उपरे एकटा चामड़ा छिल लेगे, येन मोमजामार मतो। देखे केउ आन्दाज करते पारत ना ताँर क्षमता कत। ना पारबार हेतु एइ ये, क्षमतार कथाटा जानतेन केवल तिनि निजे। पृथिवीते बड़ो बड़ो सब पालोयान कखनो जेते कखनो हारे। किन्तु, ये तालिम निये मुनशीर छिल गुमर ताते तिनि कखनो कारओ काछे हटेन नि। ताँर बिद्येते कारओ काछे तिनि ये छिलेन कम्ति सेटार नजिर बाइरे थाकते पारे, छिल ना ताँर मने। यदि हत फार्सि-पड़ा विद्ये ता हले कथाटा सहजे मेने निते राजी छिल लोके। किन्तु, फार्सिर कथा पाड़लेइ बलतेन, आरे ओ कि एकटा विद्ये। किन्तु, ताँर विश्वास छिल आपनार गाने। अथच ताँर गलाय ये आओयाज बेरोत सेटा चेंचानि किम्वा काँदुनिर जातेर, पाड़ार लोके छुटे आसत बाड़िते किछु विपद घटे छे मने क'रे। आमादेर बाड़िते नामजादा गाइये छिलेन विष्णु, तिनि कपाल चापड़िये बलतेन, मुनशीजि आमार रुटि मारलेन देखछि। विष्णुर एइ हताश भावखाना देखे मुनशी विशेष दुःखित हतेन ना—एकटु मुचके हासतेन मात्र। सबाइ बलत, मुनशीजि, की गला-इ भगवान आपनाके दियेछेन। खोशनामटा मुनशी निजेर पाओना बलेइ टेँके गुँजतेन। एइ तो गेल गान।

आरओ एकटा विद्ये मुनशीर दखले छिल। तारओ समजदार पाओया येत ना। इंरेजि भाषाय कोनो हाड़पाका इंरेजओ

তাঁর सामने दाँड़ाते पारे ना, एइ छिल ताँर विश्वास। एकबार वक्तृतार आसरे नाबले सुरेन्द्र बाँड़ुज्जेके देशछाड़ा करते पारतेन केवल यदि इच्छे करतेन। कोनोदिन तिनि इच्छे करेन नि। विष्णुर रुटि बेंचे गेल, सुरेन्द्रनाथेर नामओ। केवल कथाटा उठले मुनशी एकटु मुचके हासतेन।

किन्तु, मुनशीर इंरेजि भाषाय दखल निये आमादेर एकटा पापकर्मेर विशेष सुविधा हयेछिल। कथाटा खुले बलि। तखन आमरा पड़तुम बेङ्गल एकाडेमिते, डिक्रूज साहेब छिलेन इस्कुलेर मालिक। तिनि ठिक करे रेखेछिलेन, आमादेर पड़ाशुनो कोनोकालेइ हबे ना। किन्तु भाबना की। आमादेर विद्येओ चाइ ने, बुद्धिओ चाइ ने, आमादेर आछे पैतृक सम्पत्ति। तबुओ ताँर इस्कुल थेके छुटि चुरि करे निते हले तार चलति नियमटा मानते हत। कर्तादेर चिठिते छुटिर दाबिर कारण देखाते हत। से चिठि यत बड़ो जालइ होक, डिक्रूज साहेब चोख बुजे दितेन छुटि। माइनेर पाओनाते लोकसान ना घटले ताँर भाबना छिल ना। मुनशीके जानातुम छुटि मञ्जुर हयेछे। मुनशी मुख टिपे हासतेन। हबे ना? बास् रे, ताँर इंरेजि भाषार की जोर। से इंरेजि केवल व्याकरणेर ठेलाय हाइकोर्टेर जजेर राय घुरिये दिते पारत। आमरा बलतुम 'निश्चय'। हाइ-कोर्टेर जजेर काछे कोनोदिन ताँके कलम पेश करते हय नि।

किन्तु, सब-चेये ताँर जाँक छिल लाठि-खेलार कार्दानि निये। आमादेर बाड़िर उठोने रोद्दुर पड़लेइ ताँर खेला शुरु हत। से खेला छिल निजेर छायाटार सङ्गे। हुंकार दिये घा लागातेन कखनो छायाटार पाये, कखनो तार घाड़े, कखनो तार माथाय। आर, मुख तुले चेये चेये देखतेन चारि दिके यारा जड़ो हत तादेर दिके। सबाइ बलत, साबास्! बलत, छायाटा ये बर्तिये आछे से छायार बापेर भाग्यि। एइ थेके एकटा कथा शेखा याय ये, छायार सङ्गे लड़ाइ करे कखनो हार हय ना। आर-एकटा कथा एइ ये, निजेर मने यदि जानि 'जितेछि' ता हले से जित केउ केड़े निते पारे ना। शेष दिन पर्यन्त

मुनशीजिर जित रइल। सबाइ बलत 'साबास्', आर मुनशी मुख टिपे हासतेन।

दिदि, एखन बुझते पारछ, ओर पागलामिर सङ्गे आमार मिल कोथाय। आमिओ छायार सङ्गे लड़ाइ करि। से लड़ाइये आमि ये जिति तार कोनो सन्देह थाके ना। इतिहासे छायार लड़ाइके सत्यि लड़ाइ ब'ले वर्णना करे।

वनवास

बाबा यदि रामेर मतो
पाठाय आमाय वने,
येते आमि पारि ने कि
तुमि भावछ मने ?

चोद्द बछर क'दिने हय
जानि ने मा, ठिक—
दण्डक-वन आछे कोथाय
ऐ माठे कोन् दिक।

किन्तु आमि पारि येते,
भय करि ने ताते
लक्ष्मण भाइ यदि आमार
थाकत साथे साथे ॥

वनेर मध्ये गाछेर छायाय
बेंधे नितेम घर—
सामने दिये बइत नदी,
पड़त बालिर चर।

छोटो एकटि थाकत डिङि,
पारे येतेम बेये—
हरिण च'रे बेड़ाय सेथा,
काछे आसत धेये।

गाछेर पाता खाइये दितेम
আमि निजेर हाते—
लक्ष्मण भाइ यदि आमार
थाकत साथे साथे ॥

कत ये गाछ छेये थाकत
कत रकम फुले,
माला गेँथे परे नितेम
जड़िये माथार चुले।

नाना रङेर फलगुलि सब
भुँये पड़त पेके,
झुड़ि भ'रे भ'रे एने
घरे दितेम रेखे।

खिदे पेले दुइ भायेते
खेतेम पद्मपाते—
लक्ष्मण भाइ यदि आमार
थाकत साथे साथे ॥

रोदेर बेलाय अशथ-तलाय
घासेर 'परे आसि
राखाल-छेलेर मतो केवल
बाजाइ बसे बाँशि।

डालेर 'परे मयूर थाके,
पेखम पड़े झुले—
काठबेड़ालि छुटे बेड़ाय
न्याजटि पिठे तुले।

कखन आमि घुमिये येतेम
दुपुर बेलार ताते—
लक्ष्मण भाइ यदि आमार
थाकत साथे साथे ॥

सन्धेबेलाय कुड़िये आनि
शुकोनो डालपाला,
वनेर धारे बसे थाकि
आगुन ह्ले ज्वाला।

पाखिरा सब बासाय फेरे,
दूरे शियाल डाके—
सन्धेतारा देखा ये याय
डालेर फाँके फाँके।

मायेर कथा मने करि
बसे आँधार राते—
लक्ष्मण भाइ यदि आमार
थाकत साथे साथे।

ठाकुरदादार मतो वने
आछेन ऋषि मुनि,
ताँदेर पाये प्रणाम करे
गल्प अनेक शुनि।

राक्षसेरे भय करि ने,
आछे गुहक मिता—
रावण आमार की करबे मा,
नेइ तो आमार सीता।

हनुमानके यत्न करे
खाओयाइ दुधे भाते—
लक्ष्मरण भाइ यदि आमार
थाकत साथे साथे ।।

मा गो, आमाय दे-ना केन
एकटि छोटो भाइ—
दुइजनेते मिले आमरा
वने चले याइ ।

आमाके मा, शिखिये दिबि
राम-यात्रार गान—
माथाय बेँधे दिबि चुड़ो,
हाते धनुक-बारण ।

चित्रकूटेर पाहाड़े याइ
एम्‌नि बरषाते—
लक्ष्मरण भाइ यदि आमार
थाकत साथे सांथे ।।

छात्रेर परीक्षा

छात्र श्रीमधुसूदन। श्रीयुक्त कालाचाँद मास्टर पड़ाइतेछेन
अभिभावकेर प्रवेश

अभिभावक : मधुसूदन पड़ाशुनो केमन करछे कालाचाँदबाबु ?

कालाचाँद : आज्ञे, मधुसूदन अत्यन्त दुष्ट बटे, किन्तु पड़ाशुनोय खुब मजबुत। कखनो एक बार बइ दुबार बले दिते हय ना। येटि आमि एकबार पड़िये दियेछि सेटि कखनो भोले ना।

अभिभावक : बटे ? ता, आमि आज एकबार परीक्षा करे देखब।

कालाचाँद : ता, देखुन-ना।

मधुसूदन : (**स्वगत**) काल मास्टरमशाय एमन मार मेरेछेन ये आजओ पिठ चच्चड़ करछे। आज एर शोध तुलब। ओँके आमि ताड़ाब।

अभिभावक : केमन रे मोधो, पुरोनो पड़ा सब मने आछे तो ?

मधुसूदन : मास्टरमशाय या बले दियेछेन ता सब मने आछे।

अभिभावक : आच्छा, उद्भिद् काके बले बल् देखि।

मधुसूदन : या माटि फुँड़े ओठे।

अभिभावक : एकटा उदाहरण दे।

मधुसूदन : केँचो।

कालाचाँद : (**चोख राङाइया**) अयाँ ! की बललि !

अभिभावक : रसुन मशाय, एखन किछु बलबेन ना। (**मधुसूदनेर प्रति**) तुमि तो पद्यपाठ पड़ेछ; आच्छा, कानने की फोटे बलो देखि।

मधुसूदन : काँटा ।   [**कालाचाँदेर वेत्र-आस्फालन**

की मशाय, मारेन केन ? आमि कि मिथ्ये कथा बलछि ?

अभिभावक : आच्छा, सिराजउद्दौलाके के केटेछे ? इतिहासे की बले ?

मधुसूदन : पोकाय ।   [**वेत्राघात**

आज्ञे, मिछिमिछि मार खेये मरछि—शुधु सिराज-उद्दौला केन, समस्त इतिहासखानाइ पोकाय केटेछे । एइ देखुन ।

[**प्रदर्शन । कालाचाँद मास्टरेर माथा-चुलकायन**

अभिभावक : व्याकरण मने आछे ?

मधुसूदन : आछे ।

अभिभावक : 'कर्ता' की, तार एकटा उदाहरण दिये बुझिये दाओ देखि ।

मधुसूदन : आज्ञे, कर्ता ओ पाड़ार जय-मुनशि ।

अभिभावक : केन बलो देखि ।

मधुसूदन : तिनि क्रियाकर्म निये थाकेन ।

कालाचाँद : (**सरोषे**) तोमार माथा ।   [**पृष्ठे वेत्र**

मधुसूदन : (**चमकिया**) आज्ञे, माथा नय, ओटा पिठ ।

अभिभावक : षष्ठी-तत्पुरुष काके बले ?

मधुसूदन : जानि ने ।   [**कालाचाँद बाबुर वेत्र दर्शायन**

ओटा विलक्षण जानि—ओटा यष्टि-तत्पुरुष ।

[**अभिभावकेर हास्य एवं कालाचाँदबाबुर तद्‌विपरीत भाव**

अभिभावक : अङ्क शिक्षा हयेछे ?

मधुसूदन : हयेछे ।

अभिभावक : आच्छा, तोमाके साड़े छ'टा सन्देश दिये बले देओया हयेछे ये, पाँच मिनिट सन्देश खेये यतटा सन्देश बाकि थाकबे तोमार छोटो भाइके दिते हबे । एकटा सन्देश खेते तोमार दु मिनिट लागे, कटा सन्देश तुमि तोमार

भाइके देबे ?

मधुसूदन : एकटाओ नय ।

कालाचाँद : केमन करे !

मधुसूदन : सबगुलो खेये फेलब । दिते पारबना ।

अभिभावक : आच्छा, एकटा बटगाछ यदि प्रत्यह सिकि इञ्चि करे उँचु हय तबे ये बट ए वैशाख मासेर पयला दश इञ्चि छिल फिरे वैशाख मासेर पयला से कतटा उँचु हबे ?

मधुसूदन : यदि से गाछ बेँके याय ता हले ठिक बलते पारि ने, यदि बराबर सिधे ओठे ता हले मेपे देखलेइ ठाहर हबे, आर यदि इतिमध्ये शुकिये याय ता हले तो कथाइ नेइ ।

कालाचाँद : मार ना खेले तोमार बुद्धि खोले ना ! लक्ष्मीछाड़ा, मेरे तोमार पिठ लाल करब, तबे तुमि सिधे हबे ।

मधुसूदन : आज्ञे, मारेर चोटे खुब सिधे जिनिसओ बेँके याय ।

अभिभावक : कालाचाँदबाबु, ओटा आपनार भ्रम । मारपिट करे खुब अल्प काजइ हय । कथा आछे, गाधाके पिटले घोड़ा हय ना, किन्तु अनेक समये घोड़ाके पिटले गाधा हये याय । अधिकांश छेले शिखते पारे, किन्तु अधिकांश मास्टर शेखाते पारे ना । किन्तु मार खेये मरे छेलेटाइ । आपनि आपनार बेत निये प्रस्थान करुन । दिनकतक मधुसूदनेर पिठ जुड़ोक, तार परे आमिइ ओके पड़ाब ।

मधुसूदन : (स्वगत) आः, बाँचा गेल ।

कालाचाँद : बाँचा गेल मशाय । ए छेलेके पड़ानो मजुरेर कर्म, केवल मात्र म्यानुयेल लेबार । त्रिश दिन एकटा छेलेके कुपिये आमि पाँचटि मात्र टाका पाइ, सेइ मेहनते माटि कोपाते पारले निदेन दशटा टाकाओ हय ।

श्रावण १२६२

काल छिल डाल खालि

काल छिल डाल खालि, आज फुले याय भ'रे।
बल् देखि तुइ माली, हय से केमन क'रे।

गाछेर भितर थेके करे ओरा याओया-आसा।
कोथा थाके मुख ढेके कोथा ये ओदेर बासा!

थाके ओरा कान पेते लुकानो घरेर कोणे।
डाक पड़े बातासेते, की क'रे से ओरा शोने!

देरि आर सहे ना ये, मुख मेजे ताड़ाताड़ि।
कत रङे ओरा साजे, च'ले आसे छेड़े बाड़ि।

ओदेर से घर खानि थाके कि माटिर काछे?
दादा बले, जानि जानि से घर आकाशे आछे।

सेथा करे आसा-याओया नानारङा मेघगुलि।
आसे आलो आसे हाओया गोपन दुयार खुलि।

पौष मेला

शांतिनिकेतन

तुमि भावच—मजा केवल तोमादेरइ हयेचे ताइ तोमादेर इस्कुलेर प्राइजेर मजार फर्द आमाके लिखे पाठियेच, किन्तु एत सहजे आमाके हार मानाते पारच ना। मजा आमादेर एखानेओ हय एवं यथेष्ट बेशि करेइ हय। आच्छा, तोमादेर प्राइजे कत लोक जमेछिल?—पञ्चाश जन? किन्तु आमादेर एखाने मेलाय अन्ततः दश हाजार लोक तो हयेइछिल। तुमि लिखेच, एकटि छोटो मेये तार दिदिर काछे गिये खुब चीत्कार करे तोमादेर सभा खुब जमिये तुलेछिल—आमादेर एखानकार माठे या-चीत्कार हयेछिल ताते कत रकमेरइ आओयाज मिलेछिल, तार कि संख्या छिल। छोटो छेलेर कान्ना, बड़ोदेर हाँकडाक, डुगडुगिर वाद्य, गोरुर गाड़िर क्याँचकोँच, यात्रार दलेर चीत्कार, तुबड़िबाजिर सोँ सोँ, पटकार फुटफाट, पुलिस-चौकिदारेर है-है,—हासि, कान्ना, गान, चेँचामेचि, झगड़ा इत्यादि इत्यादि। ७ पौषे माठे खुब बड़ो हाट बसेछिल—ताते गालार खेलना, फलेर मोरब्बा, माटिर पुतुल, तेले-भाजा फुलुरि, चिनेबादाम भाजा प्रभृति आश्चर्य आश्चर्य जिनिस बिक्रि हल। एक-एक पयसा दिये छेलेमेयेरा सब नागरदोलाय दुलल; चाँदोयार निचे नीलकण्ठ मुखुज्येर कंसबध यात्रार पाला गान हच्छिल—सेइखाने एकेबारे ठेलाठेलि भिड़। तारपरे ६ पौषे आमादेर मेयेरा आबार एक मेला करेछिलेन—ताते सिङारा, आलुर-दमेर दोकान बसियेछिलेन—एक-एकटा आलुर दम एक-एक पयसाय बिक्रि हल। सुकेशी बउमा चिने-बादामेर पुतुल गड़ेछिलेन, तार एक-एकटा छ-

आना दामे बिक्रि हये गेल। कमल कादा दिये एकटा घर बानियेछिल —तार खड़ेर चाल, चारिदिके माटिर पाँचिल, आङिनाय शिव स्थापन करा आछे—सेटा केउ किनते चाय ना, ताइ कमल आमाके सेटा जोर करे तिन टाकाय बिक्री करेचे। भेबे देखो—की रकम भयानक मजा। छोटो मेयेरा एकटुकरो नेकड़ा छिँड़े तार चारिदिके पाड़ सेलाइ करे आमार काछे एने बलले, "एटा रुमाल, एर दाम आट आना, आपनाके नितेइ हबे"—बले सेटा आमार पकेटे पुरे दिले—एमन भयानक मजा। ओँदेर बाजारे एइरकम श्रेणीर सब भयानक मजा हये गेचे—तोमरा ये-सब प्राइज पेयेच, से एर काछे कोथाय लागे। तारपरे मजा,—मेला यखन भेङे गेल, समस्त रात धरे चेँचाते चेँचाते बेसुरा गान गाइते गाइते दले दले लोक ठिक आमार शोबार घरेर सामनेर रास्ता दियेइ येते लागल, एमन मजा। तारपरे कलकातार अनेक मेये ताँदेर छोटो छेलेमेये निये एसेछिलेन—ताँदेर कारो काशि कारो ज्वर। निश्चयइ तोमादेर प्राइजे एमन धुमधाम, गोलमाल, काशि-सर्दि, असुख-विसुख, आटआनाय रुमाल बेचा प्रभृति हयनि—अतएव आमारइ जित रइल।

('भानुसिंहेर पत्रावली' का ३०वाँ पत्र)

विचित्र साध

आमि यखन पाठशालाते याइ आमादेर एइ बाड़िर गलि दिये,
दशटा बेलाय रोज देखते पाइ फेरिओला याच्छे फेरि निये।
'चुड़ि चा—इ चुड़ि चाइ' से हाँके,
चीनेर पुतुल झुड़िते तार थाके,
याय से चले ये पथे तार खुशि, यखन खुशि खाय से बाड़ि गिये।
दशटा बाजे, साड़े दशटा बाजे, नाइको ताड़ा हय वा पाछे देरि।
इच्छे करे सेलेट फेले दिये अमनि करे बेड़ाइ निये फेरि॥

आमि यखन हाते मेखे कालो घरे फिरि, साड़े चारटे बाजे,
कोदाल निये माटि कोपाय माली बाबुदेर ऐ फुल-बागानेर माझे।
केउ तो तारे माना नाहि करे
कोदाल पाछे पड़े पायेर 'परे
गाये माथाय लागछे कत धुलो, केउ तो एसे बके ना तार काजे
मा तारे तो पराय ना साफ जामा, धुये दिते चाय ना धुलोबालि।
इच्छे करे, आमि हतेम यदि बाबुदेर ऐ फुल-बागानेर माली॥

एकटु बेशि रात ना हते हते मा आमारे घुम पाड़ाते चाय,
जानला दिये देखि चेये पथे पागड़ि प'रे पाहारओला याय।
आँधार गलि, लोक बेशि ना चले,
ग्यासेर आलो मिट्मिटिये ज्वले,
लण्ठनटि झुलिये निये हाते दाँड़िये थाके बाड़िर दरोजाय।
रात हये याय दशटा एगारोटा, केउ तो किछु बले ना तार लागि।
इच्छे करे पाहारओला हये गलिर धारे आपन-मने जागि॥

म्याजिसियान

कुसमि बलले, आच्छा दादामशाय, शुनेछि एक समये तुमि बड़ो बड़ो कथा निये खुब बड़ो बड़ो बइ लिखेछिले।

जीवने अनेक दुष्कर्म करेछि, ता कबुल करते हबे। भारत-चन्द्र बलेछेन, से कहे विस्तर मिछा ये कहे विस्तर।

आमार भालो लागे ना मने करते ये, आमि तोमार समय नष्ट क'रे दिच्छि।

भाग्यवान मानुषेरइ योग्य लोके जोटे समय नष्ट क'रे देबार।

आमि बुझि तोमार सेइ योग्य लोक ?

आमार कपालक्रमे पेयेछि, खुँजले पाओया याय ना।

तोमाके खुब छेलेमानुषि कराइ ?

देखो, अनेकदिन ध'रे आमि गम्भीर पोशाकि साज प'रे एतदिन काटियेछि, सेलाम पेयेछि अनेक। एखन तोमार दरबारे एसे छेलेमानुषिर ढिले कापड़ प'रे हाँप छेड़ेछि। समय नष्ट करार कथा बलछ दिदि, एक समय तार हुकुम छिल ना। तखन छिलुम समयेर गोलाम। आज आमि गोलामिते इस्तफा दियेछि। शेषेर क'टा दिन आरामे काटबे। छेलेमानुषिर दोसर पेये लम्बा केदाराय पा छड़िये बसेछि। या खुशि बले याब, माथा चुलके कारओ काछे कैफियत दिते हबे ना।

तोमार एइ छेलेमानुषिर नेशातेइ तुमि या खुशि ताइ बानिये बलछ।

की बानियेछि बलो।

येमन तोमादेर ऐ ह० च० ह०; अमनतरो अद्‌भुत ख्यापाटे मानुष तो आमि देखि नि।

देखो दिदि, एकटा जीव जन्माय यार काठामोटा हठात् याय बेँके। से हय मिउजियमेर माल। ऐ ह० च० ह० आमार मिउ-जियमे दियेछेन धरा।

ओँके पेये तुमि खुब खुशि हयेछिले ?

ता हयेछिलुम। केनना तखन तोमार इरुमासि गियेछेन चले श्वशुरबाड़ि। आमाके अवाक क'रे देबार लोकेर अभाव घटेछिल। ठिक सेइ समय एसेछिलेन हरीशचन्द्र हालदार एक-माथा टाक निये। ताँर टाक लागिये देबार रकमटा छिल आलादा, तोमार इरुमासिर उलटो। सेदिन तोमार इरुमासि शुरु करेछिल जटाइबुड़िर कथा। ऐ जटाइबुडिर सङ्गे अमावस्यार रात्रे आलाप परिचय हत। से बुड़िटार काज छिल चाँदे बसे चरका काटा। से चरका बेशिदिन आर चलल ना। ठिक एमन समय पाला जमाते एलेन प्रोफेसार हरीश हालदार। नामेर गोड़ार पदवीटा ताँर निजेर हातेइ लागानो। ताँर छिल म्याजिक-देखानो-हात। एकदिन बादला दिनेर सन्धेबेलाय चायेर सङ्गे चिँड़े-भाजा खाओयार पर तिनि बले बसलेन, एमन म्याजिक आछे याते सामनेर ओइ देयालगुलो हये याबे फाँका।

पञ्चाननदादा टाके हात बुलोते बुलोते बललेन, ए विद्ये छिल बटे ऋषिदेर जाना।

शुने प्रोफेसार रेगे टेबिल चापड़े बललेन, आरे रेखे दिन आपनार मुनि ऋषि, दैत्य दाना, भूत प्रेत।

पञ्चाननदादा बललेन, आपनि तबे की मानेन।

हरीश एकटिमात्र छोटो कथाय बले दिलेन, द्रव्यगुण।

आमरा व्यस्त हये बललुम, से जिनिसटा की।

प्रोफेसार बले उठलेन, आर याइ होक, बानानो कथा नय, मन्तर नय, तन्तर नय, बोका-भुलानो आजगुबी कथा नय।

आमरा धरे पड़लुम, तबे सेइ द्रव्यगुणटा की।

प्रोफेसार बललेन, बुझिये बलि। आगुन जिनिसटा एकटा आश्चर्य जिनिस किन्तु तोमादेर ऐ-सब ऋषि-मुनिर कथाय ज्वले ना। दरकार हय ज्वालानि काठेर। आमार म्याजिकओ ताइ। सात बछर हरतकि खेये तपस्या करते हय ना। जेने निते हय द्रव्यगुण। जानबा मात्र तुमिओ पार आमिओ पारि।

की बलेन प्रोफेसार, आमिओ पारि ऐ देयालटाके हाओया करे दिते ?

पार बैकि। हिड़ि-फिड़ि दरकार हय ना, दरकार हय माल-मसलार।

आमि बललेम, बले दिन-ना की चाइ।

दिच्छि। किछु ना, किछु ना—केवल एकटा बिलिति आमड़ार आँठि आर शिलनोड़ार शिल।

आमि बललुम, ए तो खुबइ सहज। आमड़ार आँठि आर शिल आनिये देब, तुमि देयालटाके उड़िये दाओ।

आमड़ार गाछटा हओया चाइ ठिक आठ बछर सात मासेर। कृष्ण द्वादशीर चाँद ओठबार एक दण्ड आगे तार अङ्कुरटा सबे देखा दियेछे। सेई तिथिटा पड़ा चाइ शुक्रवारे रात्रिर एक प्रहर थाकते। आबार शुक्कुर बारटा अग्रहायणेर उनिशे तारिखे ना हले चलबे ना। भेबे देखो बाबा, एते फाँकि किछुइ नेइ। दिनखन तारिख समस्त पाका क'रे बेँधे देओया।

आमरा भाबलुम, कथाटा शोनाच्छे अत्यन्त बेश खाँटि। बुड़ो मालिटाके सन्धान करते लागिये देब।

एखनो सामान्य किछु बाकि आछे। ऐ शिलटा तिब्बतेर लामारा कालिम्पङेर हाटे बेचते निये आसे धवलेश्वर पाहाड़ थेके।

पञ्चाननदादा एपार थेके ओपार पर्यन्त टाके हात बुलिये बललेन, ऐटा किछु शक्त ठेकछे।

प्रोफेसार बललेन, शक्त किछुइ नय। सन्धान करलेइ

पाओया याबे ।

मने मने भाबलुम, सन्धान कराइ चाइ, छाड़ा हबे ना—तार परे शिल निये की करते हबे ।

रोसो, अल्प एकटु बाकि आछे । एकटा दक्षिणावर्त शङ्ख चाइ ।

पञ्चाननदादा बललेन, से शङ्ख पाओया तो सहज नय । ये पाय से ये राजा हय ।

ह्यांः, राजा हय ना माथा हय । शङ्ख जिनिसटा शङ्ख । याके बांलाय बले शाँख । सेइ शङ्खटा आमड़ार आँठि दिये, शिलेर उपर रेखे, घषते हबे । घषते घषते आँठिर चिह्न थाकबे ना, शङ्ख याबे क्षये । आर, शिलटा याबे कादा हये । एइबार एइ पिण्डिटा निये दाओ बुलिये देयालेर गाय । बास् । ए'केइ बले द्रव्यगुण । द्रव्य-गुणेइ देयालटा देयाल हयेछे । मन्तरे हय नि । आर द्रव्यगुणेइ सेटा हये याबे धोँया, एते आश्चर्य की ।

आमि बललुम, ताइ तो, कथाटा खुब सत्यि शोनाच्छे ।

पञ्चाननदादा माथाय हात बोलाते लागलेन बसे बसे बाँ हाते हुँकोटा ध'रे । आमादेर सन्धानेर त्रुटिते एइ सामान्य कथाटार प्रमाण हलइ ना । एतदिन परे इरुर मन्तर, तन्तर, राजबाड़ि, मने हल सब बाजे । किन्तु, अध्यापकेर द्रव्यगुणेर मध्ये कोनोखानेइ तो फाँकि नेइ । देयाल रइल निरेट हये । अध्यापकेर 'परे आमादेर भक्तिओ रइल अटल हये । किन्तु, एकबार दैवात् की मनेर भुले द्रव्यगुणटाके नागालेर मध्ये एने फेलेछिलेन । बलेछिलेन, फलेर आँठि माटिते पुँते एक घण्टार मध्येइ गाछओ पाओया याबे, फलओ पाओया याबे ।

आमरा बललुम, आश्चर्य !

ह० च० ह० बललेन, किछु आश्चर्य नय, द्रव्यगुण । ऐ आँठिते मनसासिजेर आठा एकुशबार लागिये एकुशबार शुकोते हबे । तार पर पोँतो माटिते आर देखो की हय ।

উঠে প'ড়ে যোগাড় করতে লাগলুম। মাস দুয়েক লাগল আঠা মাখাতে আর শুকোতে। কী আশ্চর্য, গাছও হল ফলও ধরল, কিন্তু সাত বছরে। এখন বুঝেছি কাকে বলে দ্রব্যগুণ। হ০ চ০ হ০ বললেন, ঠিক আঠা লাগানো হয় নি।

বুঝলেম, ঐ ঠিক আঠাটা দুনিয়ার কোথাও পাওয়া যায় না। বুঝতে সময় লেগেছে।

उज्ज्वले भय तार

उज्ज्वले भय तार,
भय मिट्मिटेते,
झाले तार यत भय
तत भय मिठेते।

भय तार पश्चिमे,
भय तार पूर्वे,
ये दिके ताकाय भय
साथे साथे घुरबे।

भय तार आपनार
बाड़िटार इँटेते,
भय तार अकारणे
अपरेर भिटेते।

भय तार बाहिरेते,
भय तार अन्तरे,
भय तार भूत-प्रेते,
भय तार मन्तरे।
दिनेर आलोते भय
सामनेर दिठेते,
रातेर आँधारे भय
आपनारि पिठेते।

मास्टार-बाबु

आमि आज कानाइ मास्टार,
पोड़ो मोर बेड़ाल-छानाटि !
आमि ओके मारि ने मा, बेत,
मिछिमिछि बसि निये काठि।
रोज रोज देरि करे आसे,
पड़ाते देय ना ओ तो मन,
डान पा तुलिये तोले हाइ
यत आमि बलि 'शोन् शोन्'।
दिनरात खेला खेला खेला,
लेखाय पड़ाय भारी हेला
आमि बलि 'च छ ज झ ञ[1]'
ओ केवल बले 'मियों मियों'।

प्रथम भागेर पाता खुले
आमि ओरे बोझाइ मा कत—
चुरि करे खास ने कखनो,
भालो होस गोपालेर मतो।
यत बलि सब हय मिछे,
कथा यदि एकटिओ शोने—
माछ यदि देखेछे कोथाओ
किछुइ थाके ना आर मने।

---

१ उच्चारण : 'इओं'।

चड़ाइ पाखिर देखा पेले
छुटे याय सब पड़ा फेले।
यत बलि 'च छ ज झ ञ'
दुष्टुमि करे बले 'मियों' ॥

आमि ओरे बलि बार बार
'पड़ार समय तुमि पोड़ो
तार परे छुटि हये गेले
खेलार समय खेला कोरो।'
भालोमानुषेर मतो थाके,
आड़े आड़े चाय मुखपाने,
एम्‌नि से भान करे येन
या बलि बुझेछे तार माने।
एकटु सुयोग बोझे येइ
कोथा याय आर देखा नेइ।
आमि बलि 'च छ ज झ ञ'
ओ केवल बले 'मियों मियों' ॥

मस्कौर चिठि

मस्कौ

पुपुमणि

आमि कोथाय से तुमि मने करते पारबे ना। एकटा मस्त बाड़ि, चमत्कार बागान, यत दूर चेये देखा याय बड़ बड़ गाछेर वन। आकाशे मेघ करे आछे, खुब शीत, वातासे लम्बा लम्बा गाछेर माथा दुल्चे। अमिय बाबु आछेन मस्कौ सहरे, आरियाम गेछेन आर एक जायगाय, आमार सङ्गे आछेन डाक्तार टिम्बार्स। घड़ि काछे नेइ किन्तु बोध हय एखन सकाल आटटा हबे। आमि यखन घुम भेङे जेगे उठलुम तखन जानलार बाइरे देखलुम अन्धकार, आकाशभरा तारा। चुप करे शुये पड़े रइलुम। तार परे यखन अल्प एकटु आलो हल बिछाना थेके उठे मुख धुये चिठि लिखते बसेछि। प्रथमे बाबाके एकटा बड़ चिठि लिखेचि तार परे तोमाके लिखचि। किन्तु खिदे पेयेचे। एखनि हय तो एखानकार दासी डिम रुटि आर चा निये आसबे। तुमि हय त एतक्षणे जेगेछ, तोमार कोको खाओया हये गेछे। बाइरे बेड़ाते गेछ कि? किन्तु तोमादेर ओखाने हय त मेघ करे वृष्टि हच्चे। आज बिकेले मोटर गाड़ि चड़े एखान थेके आबार मस्कौ सहरे चले याब। सेखाने एकटा होटेले आमरा थाकि। एखानकार मतो एमन सुन्दर साजानो बाड़ि नय, आर सेखाने ये खाबार जिनिष देय सेओ भालो नय। ताइ इच्छे करे शान्तिनिकेतने चले याइ। एबारे सेखाने फिरे गिये आर किछुतेइ नड़ब ना। केवल छवि आँकब। आर भोरेर बेला वनमाली गरम कफि आर रुटि टोस्ट् निये आसबे। तारपरे सेइ काँकर बिछानो

बागाने बेड़ाते याब, एकटा लम्बा लाठि हाते निये। तार परे—एखन थाक्। खाबार एसेछे। कि एसेछे बलि। कफि, रुटि, माखन, माछेर डिम, दु रकमेर चिज्, क्रिमेर दइ आर दुटो डिम सिद्ध। ता छाड़ा, आङुर, पियार, आपेल। खाबार हये गेले पर गरम जले स्नान करे एसे आबार लिखते बसेचि। एखन मेघ अनेकखानि केटे गेछे—रोद्दुर देखा दियेछे—गाछेर डालगुलो वातासे नड़चे आर पाता-गुलो झिल्मिल् करे उठ्चे, आर कत रकमेर पाखी डाक्चे तादेर चिनिने। आज के आर समय नेइ। इति २० सेप्टेम्बर १९३०।

दादामशाय

('चिठिपत्र' : भाग.४ का तीसरा पत्र)

समव्यथी

यदि खोका ना हये
आमि हतेम कुकुर-छाना
तबे पाछे तोमार पाते
आमि मुख दिते याइ भाते
तुमि करते आमाय माना ?
सत्य करे बल्,
आमाय करिस ने मा, छल—
बलते आमाय 'दूर दूर दूर !
कोथा थेके एल एइ कुकुर' ?
या मा, तबे या मा,
आमाय कोलेर थेके नामा।
आमि खाब ना तोर हाते,
आमि खाब ना तोर पाते ॥

यदि खोका ना हये
आमि हतेम तोमार टिये
तबे पाछे याइ मा, उड़े
आमाय राखते शिकल दिये ?
सत्यि क'रे बल्,
आमाय करिस ने मा, छल—
बलते आमाय,'हतभागा पाखि,
शिकल केटे दिते चाय रे फाँकि' ?

तबे नामिये दे मा,
आमाय भालबासिस ने मा ।
आमि रब ना तोर कोले,
आमि बनेइ याब चले ॥

ख्यातिर विड़म्बना

प्रथम दृश्य

उकिल दुकड़ि दत्त चेयारे आसीन

भये भये खाता-हस्ते काङालिचरणेर प्रवेश

दुकड़ि : की चाइ ?

काङालि : आज्ञे, मशाय हच्छेन देशहितैषी—

दुकड़ि : ता तो सकलेइ जाने, किन्तु आसल व्यापारटा की ?

काङालि : आपनि साधारणेर हितेर जन्य प्राणपण—

दुकड़ि : क'रे ओकालति व्यवसा चालाच्छि ताओ कारओ अविदित नेइ—किन्तु तोमार वक्तव्यटा की ?

काङालि : आज्ञे, वक्तव्य बेशि नेइ।

दुकड़ि : तबे शीघ्र शीघ्र सेरे फेलो-ना।

काङालि : एकटु विवेचना करे देखले आपनाके स्वीकार करतेइ हबे ये 'गानात्परतरं नहि'—

दुकड़ि : बापु, विवेचना एवं स्वीकार करबार पूर्वे ये कथाटा बलले तार अर्थ जाना आवश्यक। ओटा बांला करे बलो।

काङालि : आज्ञे बांलाटा ठिक जानि ने। तबे मर्म हच्छे एइ, गान जिनिसटा शुनते बड़ो भालो लागे।

दुकड़ि : सकलेर भालो लागे ना।

काङालि : गान यार भालो ना लागे से हच्छे—

दुकड़ि : उकिल श्रीयुक्त दुकड़ि दत्त।

काङालि : आज्ञे, अमन कथा बलबेन ना।

दुकड़ि : तबे कि मिथ्ये कथा बलब ?

काङालि : आर्यावर्ते भरत मुनि हच्छेन गानेर प्रथम—

दुकड़ि : भरत मुनिर नामे यदि कोनो मकद्दमा थाके तो बलो, नइले वक्तृता बन्ध करो।

काङालि : अनेक कथा बलबार छिल—

दुकड़ि : किन्तु अनेक कथा शोनबार समय नेइ।

काङालि : तबे संक्षेपे बलि। एइ महानगरीते 'गानोन्नतिविधायिनी'-नाम्नी एक सभा स्थापन करा गेछे, ताते महाशयके—

दुकड़ि : बक्तृता दिते हबे ?

काङालि : आज्ञे ना।

दुकड़ि : सभापति हते हबे ?

काङालि : आज्ञे ना।

दुकड़ि : तबे की करते हबे बलो। गान गाओया एवं गान शोना ए दुटोर कोनोटा आमार द्वारा कखनो हय नि एवं हबेओ ना—ता आमि आगे थाकते बले राखछि।

काङालि : मशायके ओ दुटोर कोनोटाइ करते हबे ना (**खाता अग्रसर करिया**) केवल किञ्चित् चाँदा—

दुकड़ि : (**धड़्फड़् करिया उठिया**) चाँदा ! आ सर्वनाश ! तुमि तो सहज लोक नओ हे—भालोमानुषटिर मतो मुख काँचुमाचु करे एसेछ—आमि बलि बुझि की मकद्दमार फेसादे पड़ेछ। तोमार चाँदार खाता निये बेरोओ एखनि—नाइले ट्रेस्पासेर दाबि निये पुलिस-केस आनब।

काङालि : चाइलुम चाँदा, पेलुम अर्धचन्द्र ! (**स्वगत**) किन्तु तोमाके जब्द करब।

द्वितीय दृश्य

दुकड़िबाबु कतकगुलि संवादपत्र-हस्ते

दुकड़ि : ए तो बड़ो मजाइ हल ! काङालिचरण ब'ले के एकजन

लोक इंरेजि बांला समस्त खबरेर कागजे लिखे पाठियेछे ये आमि तादेर 'गानोन्नतिविधायिनी' सभाय पाँच हाजार टाका दान करेछि। दान चुलोय याक, गलाधाक्का दिते बाकि रेखेछि। माझेर थेके आमार खुब नाम रटे गेल—एते आमार व्यावसार पक्षे भारि सुविधे। तादेरओ सुविधे, लोके मने करबे, यखन पाँच हाजार टाका दान पेयेछे तखन अविश्यि मस्त सभा। पाँच जायगा थेके भारी भारी चाँदा आदाय हबे। या होक, आमार अदृष्ट भालो। [**केरानिबाबुर प्रवेश**

केरानि : मशाय तबे गानोन्नतिसभाय पाँच हाजार टाका दान करेछेन ?

दुकड़ि : (**माथा चुलकाइया हासिया**) आ—ओ एकटा कथार कथा। शोन केन ? के बलले दियेछि ? मने करो यदि दियेइ थाकि, ता हयेछे की ? एत गोलेर आवश्यक की ?

केरानि : आहा, की विनय ! पाँच हाजार टाका नगद दिये गोपन करबार चेष्टा, साधारण लोकेर काज नय।

[**भृत्येर प्रवेश**

भृत्य : नीचेर घरे विस्तर लोक जमा हयेछे।

दुकड़ि : (**स्वगत**) देखेछ ! एक दिनेइ आमार पसार बेड़े गेछे। (**सानन्दे**) एके एके तादेर उपरे निये आय—आर पान-तामाक दिये या। [**प्रथम व्यक्तिर प्रवेश**

दुकड़ि : (**चौकि सराइया**) आसुन—बसुन। मशाय, तामाक इच्छे करुन। ओरे—पान दिये या।

प्रथम : (**स्वगत**) आहा, की अमायिक प्रकृति। एँर काछे कामना-सिद्धि हबे ना तो कार काछे हबे !

दुकड़ि : मशायेर की अभिप्राये आगमन ?

प्रथम : आपनार वदान्यता देशविख्यात।

दुकड़ि : ओ-सब गुजबेर कथा शोनेन केन ?

प्रथम : की विनय ! केवल मशायेर नामइ श्रुत छिलुम, आज चक्षु-

कर्णेर विवादभञ्जन हल।

दुकड़ि : (स्वगत) एखन आसल कथाटा ये पाड़ले हय। विस्तर लोक बसे आछे। **(प्रकाश्ये)** ता मशायेर की आवश्यक ?

प्रथम : देशेर उन्नति-उद्देशे हृदयेर—

दुकड़ि : आज्ञे, से-सब कथा बलाइ बाहुल्य—

प्रथम : ता ठिक। मशायेर मतो महानुभव व्यक्ति याँरा भारत-भूमिर—

दुकड़ि : समस्त मानछि मशाय, अतएव ओ अंशटुकुओ छेड़े दिन। तार परे—

प्रथम : विनयी लोकेर स्वभावइ एइ ये, निजेर गुणानुवाद—

दुकड़ि : रक्षे करुन मशाय, आसल कथाटा बलुन।

प्रथम : आसल कथा की जानेन—दिने दिने आमादेर देश अधो-गति प्राप्त हच्छे—

दुकड़ि : से केवलमात्र कथा संक्षेप करते ना जानार दरुन।

प्रथम : आमादेर स्वर्णशस्यशालिनी पुण्यभूमि भारतवर्ष दारिद्र्येर अंधकूपे—

दुकड़ि : (सकातरे माथाय हात दिया बसिया) बले यान।

प्रथम : दारिद्र्येर अन्धकूपे दिने दिन निमज्जमाना—

दुकड़ि : (कातर स्वरे) मशाय, बुझते पारछि ने।

प्रथम : तबे आपनाके प्रकृत व्यापारटा बलि—

दुकड़ि : (सानन्दे साग्रहे) सेइ भालो।

प्रथम : इंरेजेरा लुठ करछे।

दुकड़ि : ए तो बेश कथा। प्रमाण संग्रह करुन, म्याजिस्ट्रेटेर कोर्टे नालिश रुजु करि।

प्रथम : म्याजिस्ट्रेटओ लुठछे।

दुकड़ि : तबे डिस्ट्रिक्ट् जजेर आदालत—

प्रथम : डिस्ट्रिक्ट् जज तो डाकात।

दुकड़ि : (अवाकभावे) आपनार कथा आमि किछु बुझते पारछि ने।

प्रथम : आमि बलछि, देशेर टाका विदेशे चालान याच्छे ।

दुकड़ि : दु:खेर विषय ।

प्रथम : ताइ एकटा सभा—

दुकड़ि : (**सचकित**) सभा !

प्रथम : एइ देखुन-ना खाता ।

दुकड़ि : (**विस्फातिनेत्रे**) खाता !

प्रथम : किञ्चित् चाँदा—

दुकड़ि : (**चौकि हइते लाफाइया उठिया**) चाँदा ! बेरोओ—बेरोओ—बेरोओ—

ताड़ाताड़ि चौकि-उल्टायन, काली-फेलन, प्रथम व्यक्तिर वेगे प्रस्थानोद्यम, पतन, उत्थान, गोलमाल

द्वितीय व्यक्तिर प्रवेश

दुकड़ि ; की चाइ ?

द्वितीय : महाशयेर देशविख्यात वदान्यता—

दुकड़ि : ओ-सब हये गेछे—हये गेछे—नतुन किछु थाके तो बलुन ।

द्वितीय : आपनार देशहितैषिता—

दुकड़ि : आ मोलो—एओ ये सेइ कथाटाइ बले !

द्वितीय : स्वदेशेर सदनुष्ठाने आपनार सदनुराग—

दुकड़ि : ए तो विषम दाय देखि । आसल कथाटा खुले बलुन ।

द्वितीय : एकटा सभा—

दुकड़ि : आबार सभा !

द्वितीय : एइ देखुन-ना खाता ।

दुकड़ि : खाता ! किसेर खाता ?

द्वितीय : चाँदा आदाय—

दुकड़ि : चाँदा ! (**हात धरिया टानिया**) ओठो, ओठो, बेरोओ, बेरोओ,—प्राणेर माया थाके तो—

द्विरुक्ति ना करिया चाँदाओयालार प्रस्थान

तृतीय व्यक्तिर प्रवेश

दुकड़ि : देखो बापु, आमार देशहितैषिता वदान्यता विनय ए-समस्त शेष हये गेछे—तार पर थेके आरम्भ करो।

तृतीय : आपनार सार्वभौमिकता—सार्वजनीनता—उदारता—

दुकड़ि : तबु भालो। ए किछु नतुन ठेकछे बटे। किन्तु मशाय, ओगुलोओ थाक्—भाषाय कथा आरम्भ करुन।

तृतीय : आमादेर एकटा लाइब्रेरि—

दुकड़ि : लाइब्रेरि ? सभा नय तो ?

तृतीय : आज्ञे, सभा नय।

दुकड़ि : आ, बाँचा गेल। लाइब्रेरि। अति उत्तम। तार परे बलेयान।

तृतीय : एइ देखुन-ना प्रस्पेक्टस—

दुकड़ि : खाता नेइ तो।

तृतीय : आज्ञे ना—खाता नय, छापानो कागज।

दुकड़ि : आ !—तार परे।

तृतीय : किञ्चित् चाँदा।

दुकड़ि : **(लाफाइया)** चाँदा ! ओरे, आमार बाड़ि आज डाकात पड़ेछे रे ! पुलिसम्यान पुलिसम्यान !

[तृतीय व्यक्तिर उर्ध्वश्वासे पलायन]

[हरशंकरबाबुर प्रवेश

दुकड़ि : आरे, एसो एसो हरशंकर एसो। सेइ कलेजे एकसङ्गे पड़ा—तार परे तो आर देखा हय नि—तोमाके देखे की ये आनन्द हल से आर की बलब !

हरशंकर : तोमार सङ्गे सुखदुःखेर अनेक कथा आछे भाइ—से-सब कथा परे हबे, आगे एकटा काजेर कथा बले निइ।

दुकड़ि : **(पुलकित हइया)** काजेर कथा अनेक क्षण शुनि नि भाइ—बलो, शुने कान जुड़ोक।

[शालेर मध्य हइते हरशंकरेर खाता बाहिर-करण]

ओ की ओ, खाता बेरोय ये !

हरशंकर : आमादेर पाड़ार छेलेरा मिले एकटा सभा—
दुकड़ि : **(चमकित हइया)** सभा !
हरशंकर : सभाइ बटे । ता किछु चाँदार जन्ये—
दुकड़ि : चाँदा ! देखो, तोमार सङ्गे आमार बहुकालेर प्रणय— किन्तु ओइ कथाटा यदि आमार सामने उच्चारण कर ता हले चिरकालेर मतो चटाचटि हबे ता बले राखछि ।
हरशंकर : बटे ! तुमि कोथाकार खड़गेछेर 'गानोन्नति'-सभाय पाँच हाजार टाका दान करते पार, आर बन्धुर अनुरोधे पाँच टाका सइ करते पार ना ! कोन् पाषण्ड नराधम एखेने आर पदार्पण करे ।

[**सवेगे प्रस्थान**]

[**खाता-हस्ते एक व्यक्तिर प्रवेश**

दुकिड़ : खाता ? आबार खाता ? पालाओ, पालाओ !
खातावाहक : **(भीत हइया)** आमि नन्दलालबाबुर—
दुकड़ि : नन्दलाल फन्दलाल बुझि ने, पालाओ एखनि ।
खातावाहक : आज्ञे सेइ टाकाटा ।
दुकड़ि : आमि टाका दिते पारवना । बेरोओ बेरोओ ।

[**खातावाहकेर पलायन**]

केरानि : मशाय, करलेन की ? नन्दलालबाबुर काछ थेके आपनार पाओनार टाकाटा निये एसेछे । ओ टाकाटा आदाय ना हले आज ये चलबे ना ।
दुकड़ि : की सर्बनाश ! ओके डाको डाको ।

[**केरानिर प्रस्थान ओ कियत्क्षण परे प्रवेश**

केरानि : से चले गेछे, ताके पाओया गेल ना ।
दुकड़ि : बिषम दाय देखछि ।

[**तम्बुरा-हस्ते एक व्यक्तिर प्रवेश**

की चाओ ?
तम्बुरा : आपनार मतो एमन रसज्ञ के आछे ? गानेर उन्नतिर जन्य

आपनि की ना करछेन ? आपनाके गान शोनाब ।

[तत्क्षणात् तम्बुरा छाड़िया गान]

[इमन कल्याण]

जय जय दुकड़ि दत्त

भुवने अनुपम महत्व—(इत्यादि—)

दुकड़ि : आरे, की सर्बनाश । थाम् थाम् !

[तम्बुरा हस्ते द्वितीय व्यक्तिर प्रवेश

द्वितीय : ओ गानेर की जाने मशाय ? आमार गान शुनुन—

दुकड़ि दत्त तुमि धन्य,

तोमार महिमा के जानिबे अन्य—

प्रथम : जय-अ-ज-अ-अ-अ-अ-अ——

द्वितीय : दु-उ-उ-उ-उ-उ कड़ि-इ-इ—

प्रथम : दुक-अ-अ-अ-अ—

दुकड़ि : **(काने आङुल दिया)** आरे गेलुम, आरे गेलुम !

[बाँया-तबला लइया वादकेर प्रवेश

वादक : मशाय, संगत नेइ गान ! से कि हय !

[वाद्य-आरम्भ ! द्वितीय वादकेर प्रवेश

द्वितीय वादक : ओ बेटा संगतेर की जाने ? ओ तो बाँया धरतेइ जाने ना ।

प्रथम गायक : तुइ बेटा थाम् ।

द्वितीय : तुइ थाम्-ना ।

प्रथम : तुइ गानेर की जानिस ?

द्वितीय : तुइ की जानिस ?

उभये मिलिया ओड़ब खाड़ब प्रणव नाद उदारा तारा लइया तर्क

अवशेषे तम्बुराय तम्बुराय लड़ाइ

दुइ वादकेर मुखे मुखे बोल-काटाकाटि 'धेकेटे देधे घेने गेधे घेने'

अवशेषे तबलाय तबलाय युद्ध

दले दले गायक वादक ओ खाता-हस्ते चाँदाओयालार प्रवेश

प्रथम : मशाय, गान—

द्वितीय : मशाय, चाँदा—

तृतीय : मशाय, सभा—

चतुर्थ : आपनार वदान्यता—

पंचम : इमनकल्याणेर खेयाल—

षष्ठ : देशेर मङ्गल—

सप्तम : सरि मिश्राँर टप्पा—

अष्टम : अरे, तुइ थाम्-ना बापु—

नवम : आमार कथाटा बले निइ, एकटु थाम्-ना भाइ !

सकले मिलिया दुकड़िर चादर धरिया टानाटानि

'शुनुन मशाइ, आमार कथा शुनुन मशाइ' इत्यादि

दुकड़ि : (**सकातरे केरानिर प्रति**) आमि मामार बाड़ि चललुम। किछुकाल सेखाने गिये थाकब। काउके आमार ठिकाना बोलो ना।

प्रस्थान

गृहमध्ये समस्त दिन गायक-वादकेर कुरुक्षेत्र-युद्ध

विवाद मिटाइते गिया सन्ध्याकाले आहत हइया केरानिर पतन

माघ १२९२]

तालगाछ

तालगाछ एक पाये दाँड़िये
सब गाछ छाड़िये
उँकि मारे आकाशे।
मने साध कालो मेघ फुंड़े याय—
एकेबारे उड़े याय—
कोथा पाबे पाखा से ?

ताइ तो से ठिक तार माथाते
गोल गोल पाताते
इच्छाटि मेले तार
मने मने भाबे बुझि डाना एइ
उड़े येते माना नेइ
बासाखनि फेले तार।

सारा दिन झर्झर् थत्थर
काँपे पाता-पत्तर
ओड़े येन भाबे ओ,
मने मने आकाशेते बेड़िये
तारादेर एड़िये
येन कोथा याबे ओ।

तार परे हाश्रोश्रा येइ नेमे याय,
पाता-काँपा थेमे याय,
फेरे तार मनटि—
येइ भावे मा ये हय माटि तार
भालो लागे आरबार
पृथिवीर कोणटि।

२ कार्तिक १३२८

शिक्षारम्भ

आमरा तिनटि बालक एकसङ्गे मानुष हइतेछिलाम। आमार सङ्गीदुटि आमार चेये दुइबछरेर बड़ो। ताँहारा यखन गुरु-महाशयेर काछे पड़ा आरम्भ करिलेन आमारओ शिक्षा सेइ समय शुरु हइल, किन्तु से-कथा आमार मनेओ नाइ।

केवल मने पड़े, 'जल पड़े पाता नड़े।' तखन 'कर खल' प्रभृति बानानेर तुफान काटाइया सबेमात्र कूल पाइयाछि। सेदिन पड़ितेछि, 'जल पड़े पाता नड़े।' आमार जीवने एइटेइ आदिकविर प्रथम कविता। सेदिनेर आनन्द आजओ यखन मने पड़े तखन बुझिते पारि, कवितार मध्ये मिल जिनिसटार एत प्रयोजन केन। मिल आछे बलियाइ कथाटा शेष हइयाओ शेष हयना—ताहार वक्तव्य यखन फुराय तखनो ताहार झङ्कारटा फुराय ना, मिलटाके लइया कानेर सङ्गे मनेर सङ्गे खेला चलिते थाके। एमनि करिया फिरिया फिरिया सेदिन आमार समस्त चैतन्येर मध्ये जल पड़िते ओ पाता नड़िते लागिल।

एइ शिशुकालेर आर एकटा कथा मनेर मध्ये बाँधा पड़िया गेछे। आमादेर एकटि अनेक कालेर खाजाञ्चि छिल, कैलास मुखुज्ये ताहार नाम। से आमादेर घरेर आत्मीयेरइ मतो। लोकटि भारि रसिक। सकलेर सङ्गे ताहार हासितामाशा। बाड़िते नूतनसमागत जामातादिगके से विद्रूप कौतुके विपन्न करिया तुलित। मृत्युर परेओ ताहार कौतुकप्रियता कमे नाइ, एरूप जनश्रुति आछे। एक समय आमार गुरुजनेरा प्ल्याञ्चेटयोगे परलोकेर सहित डाक बसाइबार चेष्टाय प्रवृत्त छिलेन। एकदिन ताँहादेर प्ल्याञ्चेटेर

पेन्सिलेर रेखाय कैलास मुखुज्येर नाम देखा दिल। ताहाके जिज्ञासा करा हइल "तुमि येखाने आछ सेखानकार व्यवस्थाटा किरूप बलो देखि।" उत्तर आसिल, "आमि मरिया याहा जानियाछि आपनारा बाँचियाइ ताहा फाँकि दिये जानते चान ? सेटि हइबेना।"

सेइ कैलास मुखुज्ये आमार शिशुकाले अति द्रुतवेगे मस्त एकटा छड़ार मतो बलिया आमार मनोरञ्जन करित! सेइ छड़ाटार प्रधान नायक छिलाम आमि एवं ताहार मध्ये एकटि भावो नायिकार निःसंशय समागमेर आशा अतिशय उज्ज्वलभावे वर्णित छिल। एइ ये भुवनमोहिनी वधूटि भवितव्यतार कोल आलो करिया विराज करितेछिल, छड़ा शुनिते शुनिते ताहार चित्रटिते मन भारि उत्सुक हइया उठित। आपादमस्तक ताहार ये बहुमूल्य अलङ्कारेर तालिका पाओया गियाछिल एवं मिलनोत्सवेर ये अभूतपूर्व समारोहेर वर्णना शुना याइत, ताहाते अनेक प्रवीण-वयस्क सुविवेचक व्यक्तिर मन चञ्चल हइते पारित—किन्तु, बालकेर मन ये मातिया उठित एवं चोखेर नानावर्णे विचित्र आश्चर्य सुखच्छवि देखित पाइत, ताहार मूल कारण छिल सेइ द्रुत-उच्चारित अनर्गल शब्दच्छटा एवं छन्देर दोला। शिशुकालेर साहित्यरसभोगेर एइ दुटो स्मृति एखनो जागिया आछे; आर मने पड़े, 'वृष्टि पड़े टापुर टुपुर, नदेय एल बान।' ओइ छड़ाटा येन शैशवेर मेघदूत।

ताहार परे ये-कथाटा मने पड़ितेछे ताहा इस्कुले याओयार सूचना। एकदिन देखिलाम दादा एवं आमार वयोज्येष्ठ भागिनेय सत्य इस्कुले गेलेन, किन्तु आमि इस्कुले याइबार योग्य बलिया गण्य हइलाम ना। उच्चैःस्वरे कान्ना छाड़ा योग्यता प्रचार करार आर-कोनो उपाय आमार हाते छिल ना। इहार पूर्वे कोनोदिन गाड़िओ चड़ि नाइ बाड़िर बाहिरओ हइ नाइ, ताइ सत्य यखन इस्कुल-पथेर भ्रमणवृत्तान्तटिके अतिशयोक्ति-अलङ्कारे प्रत्यहइ अत्युज्ज्वल करिया तुलिते लागिल तखन घरे आर मन किछुतेइ टिँकिते चाहिल ना। यिनि आमादेर शिक्षक छिलेन तिनि आमार

मोह विनाश करिबार जन्य प्रबल चपेटाघातसह एइ सारगर्भ कथाटि बलियाछिलेन, "एखन इस्कुले याबार जन्य येमन काँदितेछ, ना याबार जन्य इहार चेये अनेक बेशि काँदिते हइबे।" सेइ शिक्षकेर नामधाम आकृतिप्रकृति आमार किछुइ मने नाइ, किन्तु सेइ गुरु-वाक्य ओ गुरुतर चपेटाघात स्पष्ट मने जागितेछे। एतबड़ो अव्यर्थ भविष्यद्वाणी जीवने आर-कोनोदिन कर्णगोचर हय नाइ।

कान्नार जोरे ओरियेण्टाल सेमिनारिते अकाले भरति हइलाम। सेखाने की शिक्षालाभ करिलाम मने नाइ किन्तु एकटा शासन-प्रणालीर कथा मने आछे। पड़ा बलिते ना पारिले छेलेके बेञ्चे दाँड़ कराइया ताहार दुइ प्रसारित हातेर उपर क्लासेर अनेकगुलि स्लेट एकत्र करिया चापाइया देओया हइत। एरूपे धारणाशक्तिर अभ्यास बाहिर हइते अन्तरे सञ्चारित हइते पारे कि ना ताहा मनस्तत्त्वविद्दिगेर आलोच्य।

एमनि करिया नितान्त शिशुवयसेइ आमार पड़ा आरम्भ हइल। चाकरदेर महले ये-सकल बइ प्रचलित छिल ताहा लइयाइ आमार साहित्यचर्चार सूत्रपात हय। ताहार मध्ये चाणक्यश्लोकेर बांला अनुवाद ओ कृत्तिवास-रामायणइ प्रधान। सेइ रामायण पड़ार एकटा दिनेर छवि मने स्पष्ट जागितेछे।

सेदिन मेघला करियाछे; बाहिरबाड़िते रास्तार धारेर लम्बा बारान्दाटाते खेलितेछि। मने नाइ, सत्य की कारणे आमाके भय देखाइबार जन्य हठात् 'पुलिसम्यान' 'पुलिसम्यान' करिया डाकिते लागिल। पुलिसम्यानेर कर्तव्य सम्बन्धे अत्यन्त मोटामुटि रकमेर एकटा धारणा आमार छिल। आमि जानिताम, एकटा लोकके अपराधी बलिया ताहादेर हाते दिबामात्रइ, कुमिर येमन खाँज-काटा दाँतेर मध्ये शिकारके बिद्ध करिया जलेर तले अदृश्य हइया याय, तेमनि करिया हतभाग्यके चापिया धरिया अतलस्पर्श थानार मध्ये अन्तर्हित हओयाइ पुलिसकर्मचारीर स्वाभाविक धर्म। एरूप निर्मम शासनविधि हइते निरपराध बालकेर परित्राण कोथाय,

ताहा भाबिया ना पाइया एकेबारे अन्तःपुरे दौड़ दिलाम; पश्चाते ताहारा अनुसरण करितेछे एइ अन्धभय आमार समस्त पृष्ठदेशके कुण्ठित करिया तुलिल। माके गिया आमार आसन्न विपदेर संवाद जानाइलाम; ताहाते ताँहार विशेष उत्कण्ठार लक्षण प्रकाश पाइल ना। किन्तु आमि बाहिरे याओया निरापद बोध करिलाम ना। दिदिमा, आमार मातार कोनो एक सम्पर्के खुड़ि, ये कृत्तिवासेर रामायण पड़ितेन सेइ मार्बेलकागज-मण्डित कोणछेंड़ा-मलाट-ओयाला मलिन बइखानि कोले लइया मायेर घरेर द्वारेर काछे पड़िते बसिया गेलाम। सम्मुखे अन्तःपुरेर आङिना घेरिया चौकोण बारान्दा, सेइ बारान्दाय मेघाच्छन्न आकाश हइते अपराह्णेर आलो आसिया पड़ियाछे। रामायणेर कोनो-एकटा करुण वर्णनाय आमार चोख हइते जल पड़ितेछे देखिया, दिदिमा जोर करिया आमार हात हइते बइटा काड़िया लइया गेलेन।

मुर्खु

नेइ वा हलेम येमन तोमार अम्बिके गोँसाइ ।
आमि तो, मा, चाइ ने हते पण्डित-मशाइ ।
नाइ यदि हइ भालो छेले,
केवल यदि बेड़ाइ खेले,
तुँतेर डाले खुँजे बेड़ाइ गुटिपोकार गुटि,
मुर्खु हये रइब तबे ?
आमार ताते कीइ वा हबे—
मुर्खु यारा तादेरइ तो समस्तखन छुटि ।

ताराइ तो सब राखाल छेले गोरु चराय माठे ।
नदीर धारे वने-वने तादेर बेला काटे ।
डिङिर 'परे पाल तुले देय,
ढेउयेर मुखे नाओ खुले देय,
झाउ काटते याय चले सब नदीपारेर चरे ।
ताराइ माठे माचा पेते
पाखि ताड़ाय फसल-खेते,
बाँके करे दइ निये याय पाड़ार घरे घरे ।

कास्ते हाते, चुब्ड़ि माथाय, सन्धे हले परे
फेरे गाँये कृषाण-छेले— मन ये केमन करे ।

यखन गिये पाठशालाते
दागा बुलोइ खातार पाते,
गुरुमशाइ दुपुरबेलाय ब'से ब'से ढोले,
हाँकिये गाड़ि कोन् गाड़ोयान
माठेर पथे याय गेये गान—
शुने आमि पण करि ये मुखु हब ब'ले।

दुपुर बेलाय चिल डेके याय हठात् हाओया आसि
बाँश-बागाने बाजाय येन साप-खेलाबार बाँशि।
पुबेर दिके बनेर कोले,
बादल-बेलार आँचल दोले,
डाले-डाले उछले ओठे शिरीषफुलेर ढेउ।
एरा ये पाठ-भोलार दले
पाठशाला सब छाड़ते बले—
आमि जानि एरा तो, मा, पण्डित नय केउ।

याँरा अनेक पुँथि पड़ेन ताँदेर अनेक मान,
घरे-घरे सबार काछे ताँरा आदर पान।
सङ्गे ताँदेर फेरे चेला,
धुमधामे याय सारा बेला—
आमि तो, मा, चाइ ने आदर तोमार आदर छाड़ा।
तुमि यदि मुखु बले
आमाके मा, ना नाओ कोले
तबे आमि पालिये याब बादला-मेघेर पाड़ा।

सेखान थेके वृष्टि हये भिजिये देब चुल,
घाटे यखन याबे आमि करब हुलुस्थुल ।
रात थाकते अनेक भोरे
आसब नेमे आँधार करे,
झड़ेर हाओयाय ढुकब घरे दुयार ठेले फेले;
तुमि बलबे मेले आँखि
'दुष्टु देया खेपल नाकि',
आमि बलब 'खेपेछे आज तोमार मुर्खु छेले' ।

१० अश्विन १३२८

कविता-रचनारम्भ

आमार वयस तखन सात-आठ बछरेर बेशि हइबे ना। आमार एक भागिनेय श्रीयुक्त ज्योतिःप्रकाश आमार चेये वयसे बेश एकटु बड़ो। तिनि तखन इंरेजि साहित्ये प्रवेश करिया खुब उत्साहेर सङ्गे ह्यामलेटेर स्वगत उक्ति आओड़ाइतेन। आमार मतो शिशुके कविता लेखाइबार जन्य ताँहार हठात् केन ये उत्साह हइल ताहा आमि बलिते पारि ना। एकदिन दुपुरबेला ताँहार घरे डाकिया लइया बलिलेन, "तोमाके पद्य लिखिते हइबे।" बलिया, पयारछन्दे चौद्द अक्षर योगायोगेर रीतिपद्धति आमाके बुझाइया दिलेन।

पद्य-जिनिसटिके ए-पर्यन्त केवल छापार बइतेइ देखियाछि। काटाकुटि नाइ, भाबाचिन्ता नाइ, कोनोखाने मर्तजनोचित दुर्बलतार कोनो चिह्न देखा याय ना। एइ पद्य ये निजे चेष्टा करिया लेखा याइते पारे, ए कथा कल्पना करितेओ साहस हइत ना। एक दिन आमादेर बाड़िते चोर धरा पड़ियाछिल। अत्यन्त भये भये अथच निरतिशय कौतूहलेर सङ्गे ताहाके देखिते गेलाम। देखिलाम, नितान्तइ से साधारण मानुषेर मतो। एमन अवस्थाय दरोयान यखन ताहाके मारिते शुरू करिल, आमार मने अत्यन्त व्यथा लागिल। पद्य सम्बन्धेओ आमार सेइ दशा हइल। गोटाकयेक शब्द निजेर हाते जोड़ातोड़ा दितेइ यखन ताहा पयार हइया उठिल, तखन पद्यरचनार महिमा सम्बन्धे मोह आर टिंकिल ना। एखन देखितेछि, पद्य बेचारार उपरेओ मार सय ना। अनेकसमय दयाओ हय किन्तु मारओ ठेकानो याय ना, हात निस्पिस् करे। चोरेर पिठेओ एत लोकेर एत बाड़ि पड़े नाइ।

भय यखन एक बार भाङिल तखन आर ठेकाइया राखे के। कोनो-एकटि कर्मचारीर कृपाय एक खानि नील कागजेर खाता जोगाड़ करिलाम। ताहाते स्वहस्ते पेन्सिल दिया कतकगुला असमान लाइन काटिया बड़ो बड़ो काँचा अक्षरे पद्य लिखिते शुरू करिया दिलाम।

हरिणशिशुर नूतन शिङ् बाहिर हइबार समय से येमन येखाने-सेखाने गुँता मारिया बेड़ाय, नूतन काव्योद्गम लइया आमि सेइरकम उत्पात आरम्भ करिलाम। विशेषत, आमार दादा आमार एइ-सकल रचनाय गर्व अनुभव करिया श्रोतासंग्रहेर उत्साहे संसारके एकेबारे अतिष्ठ करिया तुलिलेन। मने आछे, एकदिन एकतलाय आमादेर जमिदारि-काछारिर आमलादेर काछे कवित्व घोषणा करिया आमरा दुइ भाइ बाहिर हइया आसितेछि, एमन समय तखनकार 'न्याशनाल पेपार' पत्रेर एडिटार श्रीयुक्त नवगोपाल मित्र सबेमात्र आमादेर बाड़िते पदार्पण करियाछेन। तत्क्षणात् दादा ताँहाके ग्रेफ्तार करिया कहिलेन, "नवगोपालबाबु, रबि एकटा कविता लिखियाछे, शुनुन-ना।" कविकीर्ति कविर जामार पकेटे-पकेटेइ तखन अनायासे फेरे। निजेइ तखन लेखक, मुद्राकर, प्रकाशक, एइ तिने-एक एके-तिन हइया छिलाम। केवल विज्ञापन दिबार काजे आमार दादा आमार सहयोगी छिलेन। पद्मेर उपरे एकटा कविता लिखियाछिलाम, सेटा देउड़िर सामने दाँड़ाइयाइ उत्साहित उच्चकण्ठे नवगोपालबाबुके शुनाइया दिलाम। तिनि एकटा हासिया बलिलेन, "बेश हइयाछे, किन्तु ओइ 'द्विरेफ' शब्दटार माने की।"

'द्विरेफ' एवं 'भ्रमर' दुटोइ तिन अक्षरेर कथा। भ्रमर शब्दटा व्यवहार करिले छन्देर कोनो अनिष्ट हइत ना। ओइ दुरूह कथाटा कोथा हइते संग्रह करियाछिलाम, मने नाइ। समस्त कविताटार मध्ये ओइ शब्दटार उपरेइ आमार आशाभरसा सबचेये बेशि छिल। दफ्तरखानार आमलामहले निश्चयइ ओइ कथाटाते विशेष फल पाइयाछिलाम। किन्तु नवगोपालबाबुके इहातेओ लेशमात्र दुर्बल

करिते पारिल ना। एमन कि, तिनि हासिया उठिलेन। आमार दृढ़ विश्वास हइल, नवगोपालबाबु समजदार लोक नहेन। ताँहाके आर-कखनो कविता शुनाइ नाइ। ताहार परे आमार वयस अनेक हइयाछे, किन्तु के समजदार, के नय, ताहा परख करिबार प्रणालीर विशेष परिवर्तन हइयाछे बलिया मने हय ना। याइ होक, नवगोपालबाबु हासिलेन बटे किन्तु 'द्विरेफ' शब्दटा मधुपानमत्त भ्रमरेरइ मतो स्वस्थाने अविचलित रहिया गेल।

পথহারা

पथहारा

आजके आमि कत दूर ये गियेछिलेम चले !
यत तुमि भाबते पारो
तार चेये से अनेक आरो,
शेष करते पारब ना ता तोमाय ब'ले ब'ले।

अनेक दूर से, आरो दूर से, आरो अनेक दूर।
माझखानेते कत ये बेत,
कत ये बाँश, कत ये खेत—
छाड़िये ओदेर ठाकुरबाड़ि; छाड़िये तालिमपुर।

पेरिये गेलेम येते येते सात-कुशि सब ग्राम।
धानेर गोला गुनब कत
जोद्दारदेर गोलार मतो,
सेखाने ये मोड़ल कारा जानि ने तार नाम।

एके एके माठ पेरोलुम कत माठेर परे।
तार परे, उः, बलि मा, शोन्,
सामने एल प्रकाण्ड वन—
भितरे तार ढुकते गेले गा छम् छम् करे।

जामतलाते बुड़ि छिल— बल्ले, 'खबरदार !'
आमि बललेम वारण शुने,
'छ-पण कड़ि एइ न गुने।'
यतक्षण से गुनते थाके हये गेलेम पार।

किछुरइ शेष नेइ कोत्थाओ आकाश पाताल जुड़ि।
यतइ चलि यतइ चलि
बेड़ेइ चले वनेर गलि,
कालो-मुखोश-परा आँधार साजल जुजुबुड़ि।

खेजुर गाछेर माथाय बसे देखछे कारा झुँकि।
कारा ये सब झोपेर पाशे
एकटुखानि मुच्के हासे,
बेंटे बेंटे मानुषगुलो केवल मारे उँकि।

आमाय येन चोख टिपछे बुड़ो गाछेर गुँड़ि।
लम्बा लम्बा कादेर पा ये
झुलछे डालेर माझे माझे—
मने हच्छे पिठे आमार के दिल सुड़सुड़ि।

फिस्फिसिये कइछे कथा देखते ना पाइ के से।
अंधकारे दुद्दाड़िये,
के ये कारे याय ताड़िये,
की जानि की गा चेटे याय हठात् काछे एसे!

फुरोय ना पथ, भावछि आमि फिरब केमन करे!
सामने देखि किसेर छाया—
डेके बलि, 'शेयाल भाया,
मायेर गाँयेर पथ तोरा केउ देखिये दे-ना मोरे।'

कय ना किछुइ, चुपटि करे केवल माथा नाड़े।
सिङ्गिमामा कोथा थेके
हठात् कखन एसे डेके
के जाने, मा, हालुम क'रे पड़ल ये कार घाड़े।

বল্ দেখি তুই কেমন ক'রে ফিরে পেলেম মাকে।

केउ जाने ना केमन क'रे।
काने काने बलब तोरे ?—
येम्‌नि स्वपन भेङे गेल सिङ्गिमामार डाके।

१५ आश्विन १३२८

आबदुल माझिर गल्प

बेला बेड़े याय, रोद्दुर ओठे कड़ा हये, देउड़िते घण्टा बेजे ओठे, पाल्किर भितरकार दिनटा घण्टार हिसाब माने ना। सेखानकार बारोटा सेइ साबेक कालेर, यखन राजबाड़िर सिंहद्वारे सभाभङ्गेर डङ्का बाजत—राजा येतेन स्नाने, चन्दनेर जले। छुटिर दिन दुपुरबेला यादेर ताँबेदारिते छिलुम तारा खाओया-दाओया सेरे घुम दिच्छे। एकला बसे आछि। चलेछे मनेर मध्ये आमार अचल पाल्कि, हाओयाय-तैरि बेहारागुलो आमार मनेर निमक खेये मानुष। चलार पथटा काटा हयेछे आमारइ खेयाले। सेइ पथे चलेछे पाल्कि दूरे दूरे देशे देशे, से-सब देशेर बइ-पड़ा नाम आमारइ लागिये देओया। कखनओ वा तार पथटा ढुके पड़े घन वनेर भितर दिये। बाघेर चोख ज्वल्-ज्वल् करछे, गा करछे छम्-छम्। सङ्गे आछे विश्वनाथ शिकारी, बन्दुक छुटल दुम्! ब्यस्, सब चुप। तार परे एक समये पाल्किर चेहारा बदले गिये हये ओठे मयूरपङ्खि; भेसे चले समुद्रे, डाङा याय ना देखा। दाँड़ पड़ते थाके छप्-छप् छप्-छप्; ढेउ उठते थाके दुले-दुले, फुले-फुले। माल्लारा बले ओठे, 'सामाल सामाल, झड़ उठल।' हालेर काछे आबदुल माझि, छुँचलो तार दाड़ि, गोंफ तार कामानो, माथा तार नेड़ा। ताके चिनि, से दादाके एने दित पद्मा थेके इलिश माछ आर कच्छपेर डिम।

से आमार काछे गल्प करेछिल—एकदिन चत्तिर मासेर शेषे डिङिते माछ धरते गियेछे, हठात् एल कालबैशाखी। भीषण तुफान, नौका डोबे डोबे। आबदुल दाँते रशि कामड़े धरे झाँपिये

पड़ल जले; साँत्रे उठल चरे, काछि धरे टेने तुलल तार डिङि।
गल्पटा एत शिग्गिर शेष हल, आमार पछन्द हल ना। नौकाटा डुबल ना, अमनिइ बेंचे गेल, ए तो गप्पइ नय। बार बार बलते लागलुम, 'तार पर ?'
से बलल, 'तार पर से एक काण्ड ! देखि एक नेकड़े बाघ। इया तार गोंफ-जोड़ा। झड़ेर समये से उठेछिल ओ पारे गञ्जेर घाटेर पाकुड़ गाछे। दमका हाओया येमनि लागल गाछ पड़ल भेङे पद्माय। बाघभाया भेसे याय जलेर तोड़े। खाबि खेते-खेते उठल एसे चरे। ताके देखेइ आमार रशिते लागालुम फाँस। जानोयारटा एत्तो बड़ो चोख पाकिये दाँड़ालो आमार सामने। साँतार केटे तार जमे उठेछे खिदे। आमाके देखे तार लाल टक्टके जिब दिये नाल झरते लागल। बाइरे भितरे अनेक मानुषेर सङ्गे तार चेनाशोना हये गेछे, किन्तु आबदुलके से चेने ना। आमि डाक दिलुम, आओ बाच्छा ! से सामनेर दु पा तुले उठतेइ दिलुम तार गलाय फाँस आटकिये, छाड़ाबार जन्य यतइ छट्फट् करे ततइ फाँस एँटे गिये तार जिभ बेरिये पड़े।'
एइ पर्यन्त शुनेइ आमि व्यस्त हये बललुम, 'आबदुल, से मरे गेल नाकि ?'
आबदुल बलले, 'मरबे तार बापेर साध्यि की ? नदीते बान एसेछे, बाहादुर गञ्जे फिरते हबे तो ? डिङिर सङ्गे जुड़े बाघेर बाच्छाके दिये गुण टानिये निलेम अन्तत बिश क्रोश रास्ता। गों-गों करते थाके, पेटे दिइ दाँड़ेर खोंचा, दश-पनेरो घण्टार रास्ता देड़ घण्टाय पौंछिये दिले। तार परेकार कथा आर जिग्गेस कोरो ना बाबा, जबाब मिलबे ना।'
आमि बललुम, 'आच्छा, बेश, बाघ तो हल, एबार कुमिर ?'
आबदुल बलले, "जलेर उपर तार नाकेर डगा देखेछि अनेकबार। नदीर ढालु डाङाय लम्बा हये शुये से यखन रोद पोहाय, मने हय, भारि बिच्छिरि हासि हासछे। बन्दुक थाकले

मोकाबिला करा येत। लाइसेन्स् फुरिये गेछे। किन्तु मजा हल एकदिन काँचि बेदेनि डाङाय बसे दा दिये बाखारि चाँचछे, तार छागल-छाना पाशे बाँधा। कखन् नदी थेके उठे कुमिरटा पाँठार ठ्याङ धरे जले टेने निये चलल। बेदेनि एकेबारे लाफ दिये बसल तार पिठेर उपर। दा दिये ऐ दानो-गिरगिटिर गलाय पोंचेर उपर पोंच लागालो। छागल-छाना छेड़े जन्तुटा डुबे पड़ल जले।'

आमि व्यस्त हये बललुम, 'तार पर ?'

आबदुल बलले, 'तार परेकार खबर तलिये गेछे जलेर तलाय, तुले आनते देरि हबे। आसछे बार यखन देखा हबे चर पाठिये खोंज निये आसब।'

किन्तु आर तो से आसे नि, हयतो खोंज निते गेछे।

राजा ओ रानी

	एक ये छिल राजा
से दिन	आमाय दिल साजा।
	भोरे-र राते उठे
आमि	गियेछिलुम छुटे।
	देखते डालिम गाछे
वनेर	पिर्भु केमन नाचे !
	डाले छिलेम च'ड़े
सेटा	भेङेइ गेल प'ड़े।
	से दिन हल माना
आमार	पेयारा पेड़े आना,
	रथ देखते याओया,
आमार	चिँड़ेर पुलि खाओया।
	के दिल सेइ साजा—
जान	के छिल सेइ राजा ?

	एक ये छिल रानी
आमि	तार कथा सब मानि।
	साजार खबर पेये
आमाय	देखल केवल चेये।
	बलले ना तो किछु,
केवल	मुखटि करे निचु
	आपन घरे गिये
से दिन	रइल आगल दिये।

हल ना तार खाओया,
किम्वा रथ देखते याओया।
निल आमाय कोले
साजार समय सारा हले।
गला भाङा-भाङा,
तार चोख-दुखानि राङा।
के छिल सेइ रानी
आमि जानि जानि जानि।

घासे आछे भिटामिन

घासे आछे भिटामिन, गोरु भेड़ा अश्व
घास खेये बेँचे आछे, आँखि मेले पश्य।

अनुकूल बाबु बले, 'घास खाओया धरा चाइ,
किछुदिन जठरेते अभ्येस करा चाइ,
वृथाइ खरच क'रे चाष करा शस्य।

गृहिणी दोहाइ पाड़े माठे यबे चरे से,
ठेला मेरे चले याय पाये यबे धरे से—
मानवहितेर झोँके कथा शोने कस्य;

दुदिन ना येते येते मारा गेल लोकटा,
विज्ञाने बिँधे आछे एइ महा शोकटा,
बाँचले प्रमाण-शेष ह'त ये अवश्य।

गेछो बाबा

उधो : की रे, सन्धान पेलि ?

गोबरा : आरे भाइ, तोमार कथा शुने आज मासखानेक धरे बने-बादाड़े घुरे घुरे हाड़ माटि हल, टिकिओ देखते पेलुम ना ।

पञ्चु : कार सन्धान करछिस रे ।

गोबरा : गेछो बाबार ।

पञ्चु : गेछो बाबा ? से आबार के रे ?

उधो : जानिस ने ? विश्वसुद्ध लोक ताके जाने ।

पञ्चु : ता, गेछो बाबार व्यापारटा की शुनि ।

उधो : बाबा ये-गाछे चड़े बसबे सेइ गाछइ हबे कल्पतरु । तलाय दाँड़िये हात पातलेइ या चाइबि ताइ पाबि रे ।

पञ्चु : खबर पेलि कार काछ थेके ।

उधो : धोकड़ गाँयेर भेकु सर्दारेर काछ थेके । बाबा सेदिन डुमुर गाछे चड़े बसे पा दोलाच्छिल; भेकु जाने ना, तला दिये याच्छे, माथाय छिल एक हाँड़ि चिटेगुड़, तामाक तैरि करबे । बाबार पाये ठेके तार हाँड़ि गेल टले—चिटेगुड़े तार मुख चोख गेल बुजे । बाबार दयार शरीर; बलले, भेकु, तोर मनेर कामना की खुले बल् । भेकुटा बोका; बलले, बाबा, एकखाना ट्याना दाओ, मुखटा मुछे फेलि । येमनि बला अमनि गाछ थेके खसे पड़ल एकखाना गामछा । मुख चोख मुछे उपरे यखन ताकाल तखन आर कारओ देखा नेइ । या चाइबे केवल एक बार । बास्, तार परे केँदे केँदे आकाश फाटालेओ साड़ा मिलबे ना ।

पञ्चु : हाय रे हाय, शाल नय, दोशाला नय, शुधु एकखाना गामछा!

भेकुर आर बुद्धि कत हबे ।

उधो : ता होक, नेपु । ऐ गामछा नियेइ तार दिब्यि चले याच्छे—देखिस नि ? रथतलार काछे अत बड़ो आटचाला बानियेछे । गामछा होक, बाबार गामछा तो ।

पञ्चु : की करे हल । भेल्कि नाकि ।

उधो : होँदपाड़ार मेलाय भेकु सेदिन बाबार गामछा पेते बसल । हाजारे हाजारे लोक एसे जुटल । बाबार नामे टाकाटा सिकेटा आलुटा मुलोटा चार दिक थेके गामछार उपर पड़ते लागल । मेयेरा केउ वा एसे बले, ओ भेकुदादा, आमार छेलेटार माथाय बाबार गामछा एकटु ठेकिये दे, आज तिनमास ध'रे ज्वरे भुगछे। ओर नियम हच्छे नैविद्यि चाइ पाँच सिके, पाँचटा सुपुरि, पाँच कुनके चाल, पाँच छटाक घि ।

पञ्चु : नैविद्यि तो दिच्छे, फल पाच्छे किछु ?

उधो : पाच्छे बै कि । गाजन पाल गामछा भरे पनेरो दिन धरे धान ढेलेछे; तार पर ऐ गामछार कोणे दड़ि लागिये एकटा पाँठाओ दिले बेँधे, ऐ पाँठार डाके चार दिक थेके लोक एसे जमल । की बलब, भाइ, मास एगारो परेइ गाजनेर चाकरि जुटे गेल । आमादेर राजबाड़िर कोतोयालेर सिद्धि घोँटे, तार दाड़ि चुमरिये देय ।

पञ्चु : सत्यि बलछिस ?

उधो : सत्यि ना तो की । गाजन ये आमार मामातो भाइयेर भायरा-भाइ हय ।

पञ्चु : आच्छा भाइ उधो, गामछाटा तुइ देखेछिस ?

उधो : देखेछि बै कि । हट्टगञ्जेर ताँते देड़गज ओसारे-र ये गामछा बुनुनि हय, चाँपार बरन जमि, लाल पाड़, एक्केबारे बेमालुम ताइ ।

पञ्चु : बलिस की । ता, से गाछेर उपर थेके पड़ल की करे ।

उधो : ऐ तो मजा । बाबार दया !

पञ्चु : चल् भाइ, चल्, खोँज करते बेरइ। किन्तु, चिनब की करे।

उधो : सेइ तो मुशकिल। केउ तो ताके देखे नि। आबार हबि ता ह, भेकु बेटार चोख गेल चिटेगुड़े बुजे।

पञ्चु : तबे उपाय ?

उधो : आमि तो हाटे घाटे याके देखछि ताकेइ जोड़हात क'रे जिगेस करछि, दया क'रे जानाओ, तुमिइ कि गेछो बाबा। शुने तारा तेड़े मारते आसे। एक जन तो दिल आमार माथाय हुँकोर जल ढेले।

गोबरा : ता दिक गे। छाड़ा हबे ना। खुँजे बेर करबइ। या थाके कपाले।

पञ्चु : भेकु बले, गाछ चड़लेइ तबे बाबार चेहारा धरा पड़े, यखन निचे थाकेन चेनबारइ जो नेइ।

उधो : गाछ चड़िये चड़िये मानुषके परख करब की करे, भाइ। आमि एक बुद्धि करेछि, आमार आमड़ा गाछ आमड़ाय भरे गेछे, याके देखछि ताकेइ बलछि, आमड़ा पेड़े नाओ— गाछटा प्राय खालि हये एल, डालगुलोओ भेङेछे।

पञ्चु : आर देरि नय रे, चल्। कपालेर जोर यदि थाके तबे दर्शन लाभ हबेइ। एकबार गला छेड़े डाक दे-ना, भाइ! गेछो बाबा, ओ बाबा, दयाल बाबा पारुलवने कोथाओ यदि थाक लुकिये, एक-बार अभागादेर दर्शन दाओ।

गोबरा : ओरे हयेछे रे, दया हल बुझि।

पञ्चु : कइ रे, कइ।

गोबरा : ऐ ये चालता गाछे।

पञ्चु : को रे, चालता गाछे की, देखछि ने तो किछु।

गोबरा : ऐ-ये दुलछे!

पञ्चु : की दुलछे। ओ तो ल्याज रे।

उधो : तोर केमन बुद्धि गोबरा, ओ बाबार ल्याज नय रे, हनुमानेर ल्याज। देखछिस ने मुख भ्याङाच्छे ?

गोबरा : घोर कलि ये ! बाबा ऐ कपिरूप धरेछेन आमादेर भोलाबार जन्ये ।

पञ्चु : भुलछि ने, बाबा, कालामुख देखिये भोलाते पारबे ना। यत पार मुख भ्याङाओ, नड़छि ने—तोमार ऐ श्रील्याजेर शरण निलुम ।

गोबरा : ओरे, बाबा ये लम्बा लाफ दिये पालाते शुरू करल रे ।

पञ्चु : पालाबे कोथाय । आमादेर भक्तिर दौड़ेर सङ्गे पारबे केन।

गोबरा : ऐ बसेछे कयेत्बेल गाछेर डगाय ।

उधो : पञ्चु, उठे पड़्-ना गाछे ।

पञ्चु : आरे, तुइ ओठ्-ना ।

उधो : आरे, तुइ ओठ् ।

पञ्चु : अत उच्चे उठते पारब ना, बाबा, कृपा क'रे नेमे एसो ।

उधो : बाबा, तोमार ऐ श्रील्याज गलाय बेँधे अन्तिमे येन चक्षु मुदते पारि एइ आशीर्वाद करो । [**प्रस्थान**

ओहे कमबुद्धि, हासाते पारले ?

ना । ये-मानुष सबइ बिना विचारे विश्वास करते पारे ताके हासानो सोजा नय ।

भय हच्छे, पुपेदिदि पाछे गेछो बाबार सन्धान करते आमाके पाठाय । मुख देखे आमारओ ताइ बोध हच्छे । गेछो बाबार 'परे ओर टान पड़ेछे । आच्छा, काल परीक्षा क'रे देखब विश्वास ना करियेओ मजा लागाते पारा याय कि ना ।

किछुक्षरण बादे पुपु एसे बलले, आच्छा, दादामशाय, गेछो बाबार काछे तुमि हले की चाइते ।

आमि बललेम, पुपुदिदिर जन्ये एमन एकटा कलम चाइतेम या निये लिखते बसले अङ्क कषते एकटा भुलओ हत ना ।

पुपुदिदि हाततालि दिये बले उठल, आः, से की मजाइ हत ! अङ्के दिदि एबार एकशोर मध्ये साड़े तेरो मार्का पेयेछे ।

दिदि

नदीतीरे माटि काटे साजाइते पाँजा
पश्चिमि मजुर। ताहादेरि छोटो मेये
घाटे करे आनागोना; कत घषा माजा
घटि बाटि थाला लये; आसे धेये धेये
दिवसे शतेक बार; पित्तलकङ्कण
पितलेर थालि-'परे बाजे ठन् ठन्;
बड़ो व्यस्त सारादिन—तारि छोटो भाइ,
नेड़ामाथा, कादामाखा, गाये वस्त्र नाइ,
पोषा प्राणीटिर मतो पिछे पिछे एसे
बसि थाके उच्च पाड़े दिदिर आदेशे
स्थिरधैर्यभरे। भरा घट लये माथे,
वाम कक्षे थालि, याय बाला डान हाते
धरि शिशुकर; जननीर प्रतिनिधि,
कर्मभारे अवनत अति छोटो दिदि।

सार्थक जनम आमार जन्मेछि एइ देशे

सार्थक जनम आमार जन्मेछि एइ देशे ।
सार्थक जनम मागो; तोमाय भालोबेसे ॥

जानि ने तोर धन-रतन
आछे कि ना रानीर मतन,
शुधु जानि आमार अङ्ग जुड़ाय तोमार छायाय एसे ॥

कोन् बनेते जानि ने फुल
गन्धे एमन करे आकुल
कोन् गगने ओठे रे चाँद एमन हासि हेसे ।

आँखि मेले तोमार आलो
प्रथम आमार चोख जुड़ालो,
ओइ आलोतेइ नयन रेखे मुदब नयन शेषे ॥

नकल गड़

राजस्थान

"जलस्पर्श करब ना आर"
चितोर-रानार पण,
"बुंदिर केल्ला माटिर 'परे
थाकबे यत क्षण।"
"की प्रतिज्ञा हाय महाराज,
मानुषेर या असाध्य काज
केमन करे साधबे ता आज"
कहेन मन्त्रीगण ।
कहेन राजा, "साध्य ना हय
साधब आमार पण ।"

बुँदिर केल्ला चितोर हते
योजन-तिनेक दूर
सेथाय हारावंशी सबाइ
महा महा शूर ।
हामु राजा दिच्छे थाना,
भय कारे कय नाइको जाना—
ताहार सद्य प्रमाण राना
पेयेछेन प्रचुर ।
हारावंशीर केल्ला बुँदि
योजन-तिनेक दूर ।

मंत्री कहे युक्ति करि,
"आजके सारा राति
माटि दिये बुँदिर मतो
नकल केल्ला पाति।
राजा एसे आपन करे
दिब्रेन भेङे धुलिर 'परे,
नइले शुधु कथार तरे
हबेन आत्मघाती!"
मंत्री दिल चितोर माझे
नकल केल्ला पाति।

कुम्भ छिल रानार भृत्य
हारावंशी वीर—
हरिण मेरे आसछे फिरे,
स्कंधे धनु तीर।
खबर पेये कहे, "के रे
नकल बुँदि केल्ला मेरे
हारावंशी राजपुतेरे
करबे नतशिर।
नकल बुँदि राखब आमि
हारावंशी वीर।"

माटिर केल्ला भाङ्ते आसेन
राना महाराज।
"दूरे रहो" कहे कुम्भ—
गर्जे येन बाज।

"बुँदिर नामे करबे खेला,
सइब ना से अवहेला—
नकल गड़ेर माटिर ढेला
राखब आमि आज।"
कहे कुम्भ, "दूरे रहो
राना महाराज !"

भूमिर 'परे जानु पाति
तुलि धनुःशर
एका कुम्भ रक्षा करे
नकल बुँदिगड़ ।
रानार सेना घिरि तारे
मुण्ड काटे तरवारे—
खेलागड़ेर सिंहद्वारे
पड़ल भूमि-'पर,
रक्ते ताहार धन्य हल
नकल बुँदिगड़ ।

आमादेर छोटो नदी

आमादेर छोटो नदी चले बाँके बाँके,
वैशाख मासे तार हाँटुजल थाके।
पार हये याय गोरू, पार हय गाड़ि,
दुइ धार उच्चु तार ढालु तार पाड़ि।

चिक् चिक् करे बालि, कोथा नाइ कादा,
एक धारे काशबन फुले फुले सादा।
किचिमिचि करे सेथा शालिकेर झाँक,
राते ओठे थेके थेके शेयालेर हाँक।

आरपारे आमबन तालबन चले,
गाँयेर बामुनपाड़ा तारि छायातले।
तीरे तीरे छेले मेये नाहिबार काले
गामछाय जल भरि गाये तारा ढाले।

सकाले विकाले कभु नाओया हले परे
आँचले छाँकिया तारा छोटो माछ धरे।
बालि दिये माँजे थाला घटिगुलि माजे,
वधूरा कापड़ केचे याय गृहकाजे।

आषाढ़े बादल नामे, नदी भरो भरो—
मातिया छुटिया चले धारा खरतर।
महावेगे कलकल कोलाहल ओठे,
घोला जले पाकगुलि घुरे घुरे छोटे।
दुइ कूले बने बने प'ड़े याय साड़ा,
बरषार उत्सवे जेगे ओठे पाड़ा।

लक्ष्मीर परीक्षा

प्रथम दृश्य

क्षीरो

धनी सुखे करे धर्मकर्म,
गरिबेर पड़े माथार घर्म।
तुमि रानी, आछे टाका शत शत,
खेला छले करो दान ध्यान व्रत;
तोमार तो शुधु हुकुम मात्र,
खाटुनि आमारि दिवसरात्र।
तबुओ तोमारि सुयश पुण्य,
आमार कपाले सकलइ शून्य।

नेपथ्ये

क्षीरि, क्षीरि, क्षीरो !

क्षीरो

केन डाकाडाकि,
नाओया खाओया सब छेड़े देब नाकि ?

[रानी कल्याणीर प्रवेश]

कल्याणी

हल की ! तुइ ये आछिस रेगेइ।

क्षीरो

काज ये पिछने रयेछे लेगेइ।
कतइ वा सय रक्तमांसे,

कत काज करे एकटा मानुषे !
दिने दिने हल शरीर नष्ट—

कल्याणी

केन, एत तोर किसेर कष्ट !

क्षीरो

येथा यत आछे रामी ओ बामी
सकलेरइ येन गोलाम आमि ।
होक ब्राह्मण, होक शुद्दुर,
सेवा करे मरि पाड़ासुद्धुर ।
घरेते कारो तो चड़े ना अन्न,
तोमारि भाँड़ारे निमन्तन्न ।
हाड़ बेर हल बासन मेजे,
सृष्टिर पान-तामाक सेजे ।
एका एका एत खेटे ये मरि,
माया दया नेइ ?

कल्याणी

से दोष तोरि ।
चाकर दासी कि टिँकिते पारे
तोमार प्रखर मुखेर धारे ?
लोक एले तुइ ताड़ाबि तादेर,
लोक गेले शेषे आर्त्तनादेर
धुम पड़े याबे—एर कि पथ्यि
आछे कोनोरूप !

क्षीरो

से कथा सत्यि !
सय ना आमार—ताड़ाइ साधे !
अन्याय देखे परान काँदे ।

কোথা থেকে যত ডাকাত জোটে,
টাকাকড়ি সব দু হাতে লোটে।
আমি না তাদের তাড়াই যদি
তোমারে তাড়াত আমারে বধি।

কল্যাণী

ডাকাত মাধব, ডাকাত মাধু,
সবাই ডাকাত, তুমিই সাধু!

ক্ষীরো

আমি সাধু! মাগো, এমন মিথ্যে
মুখেও আনি নে, ভাবি নে চিত্তে।
নিই-থুই খাই দু হাত ভরি,
দু বেলা তোমায় আশিষ করি।
কিন্তু তবু সে দু হাত-'পরে
দু মুঠোর বেশি কতই ধরে?
ঘরে যত আন' মানুষ-জনকে
তত বেড়ে যায় হাতের সংখ্যে।
হাত যে সৃজন করেছে বিধি
নেবার জন্যে জান তো দিদি!
... ...

কল্যাণী

সে যাই হোক গে, শুধাই তোরে—
কাল বৈকাল, বল্ তা মোরে,
অতিথিসেবায় অনেকগুলি
কম পড়েছিল চন্দ্রপুলি—
কেন বা ছিল ন রস্করা?

ক্ষীরো

কেন কর মিছে মস্করা
দিদিঠাকরুন! আপন হাতে

गुने दियेछिनु सबार पाते
दुटो दुटो क'रे ।

कल्याणी

आपन चोखे
देखेछि पाय नि सकल लोके,
खालि पात—

क्षीरो

ओमा ! ताइ तो बलि—
केथाय तलिये याय ये चलि
यत सामिग्रि दिइ आनिये ।
भोला मयरार शयतानि ए ।

कल्याणी

एक बाटि करे दुध बराद्द,
आध बाटि ताओ पाओआ असाध्य !

क्षीरो

गयला तो नन युधिष्ठिर ।
यत विष तव कुदृष्टिर
पड़ेछे आमारि पोड़ा अदृष्टे,
यत झाँटा सब आमारि पृष्ठे,
हाय हाय—

कल्याणी

ढेर हयेछे, आर ना—
रेखे दाओ तव मिथ्ये कान्ना ।

क्षीरो

सत्यि कान्ना काँदेन याँरा
ओइ आसछेन झेँटिये पाड़ा ।

[प्रतिवेशिनीगणेर प्रवेश]

प्रतिवेशिनीगण

जय जय रानी, हश्रो चिरजयी !
कल्याणी तुमि कल्याणमयी !

क्षीरो

ओगो रानीदिदि, शोन् ओइ शोन्—
पाते यदि किछु हत अकुलोन
एत गला छेड़े एत खुले प्राण
उठित कि तबे जय-जय तान ?
यदि दु-चारटे चन्द्रपुलि
दैवगतिके दिते ना भुलि
ता हले कि आर रक्षे थाकत—
हजम करते बापके डाकत ।

[प्रतिवेशिनीगणेर प्रस्थान]

… … …

ओरे बिनि, ओरे किनि, ओरे काशी !

[बिनि किनि काशीर प्रवेश]

काशी

केनि दिदि ?

किनि

केन खुड़ि ?

बिनि

केन मासि ?

क्षीरो

ओरे खाबि आय ।

बिनि

किछु नाइ खिदे ।

क्षीरो

खेये निते हय पेलेइ सुबिधे ।

बिनि

रसकरा खेये पेट बड़ो भार ।

क्षीरो

बेशि किछु नय, शुधु गोटा चार
भोला मयरार चन्द्रपुलि
देख् देखि ओइ ढाकना खुलि—
ताइ मुखे दिये, दु'बाटिखानिक
दुध खेये शोओो लक्ष्मीमानिक ।

काशी

कत खाब दिदि, समस्त दिन ।

क्षीरो

खाबार तो नय खिदेर अधीन ।
पेटेर ज्वालाय कत लोके छोटे,
खाबार कि तार मुखे एसे जोटे ?
दुःखी गरिब काङाल फतुर
चाषाभुषो मुटे अनाथ अतुर
कारो तो खिदेर अभाव हय ना—
चन्द्रपुलिटा सबार रय ना ।
मने रेखे दिस येटार या दर—
खाबार चाइते खिदेर आदर ।
हाँ रे बिनि, तोर चिरुनि रुपोर
देखछि ने केन खोँपार उपर ?

बिनि

सेटा ओ-पाड़ार खेतुर मेये
केँदेकेटे काल नियेछे चेये ।

क्षीरो

ओइ रे, हयेछे माथाटि खाओया ।
तोमारओ लेगेछे दातार हाओया !

बिनि

आहा, किछु तार नेइ ये मासि !

क्षीरो

तोमारि कि एत टाकार राशि ?
गरिब लोकेर दयामाया रोग
सेटा ये एकटा भारि दुर्योग ।
ना ना, याओ तुमि मायेर बाड़िते—
हेथाकार हाओया सबे ना नाड़िते ।
रानी यत देय फुरोय ना, ताइ
दान क'रे तार कोनो क्षति नाइ ।
तुइ येटा दिलि रइल ना तोर,
एतेओ मनटा हय ना कातर ?
ओरे बोका मेये, आमि आरो तोरे
आनिये निलेम एइ मने क'रे
की करे कुड़ोते हइबे भिक्षे
मोर काछे ताइ करबि शिक्षे ।
के जानत, तुइ पेट ना भरते
उल्टो विद्ये शिखबि मरते !—
दुध ये रइल बाटिर तलाय,
ओइटुकु बुझि गले ना गलाय ?
आमि मरे गेले यत मने आश
कोरो दान ध्यान आर उपवास ।
यतदिन आमि रयेछि बर्ते
देब न करते आत्महत्ये ।
खाओया-दाओया हल, एखन तबे
रात हल ढेर, शोओ गे सबे ।

[किनि बिनि काशीर प्रस्थान]

[कल्याणीर प्रवेश]
ओगो दिदि, आमिबाँचि ने तो आर

कल्याणी

सेटा विश्वास हय ना आमार ।
तबु कि हयेछे शुनि व्यापारटा ।

क्षीरो

माइरि दिदि,ए नयको ठाट्टा ।
देश थेके चिठि पेयेछि मामार,
बाँचे कि ना बाँचे खुड़िटि आमार—
शक्त असुख हयेछे एबार,
टाकाकड़ि नेइ ओषुध देबार ।

कल्याणी

एखनो बछर हय नि गत,
खुड़िर श्राद्धे निलि ये कत !

क्षीरो

हाँ हाँ, बटे बटे, मरेछे बेटि—
खुड़ि गेछे, तबु आछे तो जेठि ।
आहा रानीदिदि, धन्य तोरे
एत रेखेछिस स्मरण करे !
एमन बुद्धि आर कि आछे !
एड़ाय ना किछु तोमार काछे ।
फाँकि दिये खुड़ि बाँचबे आबार,
साध्य कि आछे से तार बाबार !
किन्तु, कखनो आमार से जेठि
मरे नि पूर्वे, मने रेखो सेटि ।

कल्याणी

मरेओ नि बटे, जन्मे नि कभु ।
... ...

[कल्याणीर हासिया प्रस्थान]

क्षीरो

हरि बलो मन ! परेर काछे
आदाय करार सुखओ आछे,
दुःखओ ढेर ।—हे मा लक्ष्मीटि
तोमार वाहन पेंचापक्षीटि
एत भालोबासे ए बाड़िर हाओया,
एत काछाकाछि करे आसा-याओया,
भूले कोनो दिन आमार पाने
तोमारे यदि से बहिया आने—
माथाय ताहार पराइ सिँदुर,
जलपान दिइ आशिटा इँदुर,
खेयेदेये शेषे पेटेर भारे
पड़े थाके बेटा आमारि द्वारे—
सोना दिये डाना बाँधाइ, तबे
ओड़बार पथ बन्ध हबे ।

[लक्ष्मीर आविर्भाव]

के आबार राते एसेछ ज्वालाते,
देश छेड़े शेषे हबे कि पालाते ।
आर तो पारिने ।

लक्ष्मी

पालाब तबे कि ?
येते हबे दूरे ।

क्षीरो

रोसो रोसो, देखि ।
की परेछ ओटा माथार ओपर ?
देखाच्छे येन हीरेर टोपर !
हाते की रयेछे सोनार बाक्से

देखते पारि कि ? आच्छा, थाक् से ।
एत हीरे सोना कारो तो हय ना—
ओगुलो तो नय गिलटि गयना ?
एगुलि तो सब साँचा पाथर ?
गाये कि मेखेछ, किसेर आतर ?
भुर भुर करे पद्मगन्ध—
मने कत कथा हतेछे सन्द ।
बोसो बाछा, केन एले एत राते ?
आमारे तो केउ आस नि ठकाते ?
यदि एसे थाको, क्षीरिके ता हले
चिनते पारो नि सेटा राखि ब'ले ।
नाम की तोमार बलो देखि खाँटि—
माथा खाओ, बोलो सत्य कथाटि ।

लक्ष्मी

एकटा तो नय, अनेक ये नाम ।

क्षीरो

हाँ हाँ, थाके बटे स्वनाम बेनाम
व्यबसा यादेर छलना करा ।
कखनो कोथाओ पड़ नि धरा ?

लक्ष्मी

धरा पड़ि बटे दुइ-दश दिन,
बाँधन काटिये आबार स्वाधीन ।

क्षीरो

हेँयालिटा छेड़े कथा कओ सिधे—
अमन करले हबे ना सुबिधे ।
नामटि तोमार बल अकपटे ।

लक्ष्मी

लक्ष्मी

क्षीरो

तेमनि चेहाराश्रो बटे ।
लक्ष्मी तो श्राछे श्रनेकगुलि,
तुमि कोथाकार बलो तो खुलि ।

लक्ष्मी

सत्यि लक्ष्मी एकेर श्रधिक
नाइ त्रिभुवने ।

क्षीरो

ठिक ठिक ठिक !—
ताइ बलो मा गो, तुमिइ कि तिनि ?
श्रालाप तो नेइ, चिनते पारि नि ।
चिनतेम यदि चरणजोड़ा
कपाल हतो कि एमन पोड़ा !
एसो, बोसो, घर करोसे श्रालो ।
पेँचादादा मोर श्राछे तो भालो ?
एसेछ यखन तखन,मात,
ताड़ाताड़ि येते पारबे ना तो ।
जोगाड़ करछि चरण-सेवार,
सहज हस्ते पड़ नि एबार—
सेयाना लोकेर कर ना माया
केन ये जानि ता विष्णुजाया !
ना खेये मरे ना बुद्धि थाकले,
बोकारइ बिपद तुमि ना राखले ।

लक्ष्मी

प्रतारणा क'रे पेटटि भराश्रो,
धर्मेरे तुमि किछु ना डराश्रो ?
... ...
कल्याणी तोर श्रमन प्रभु—
तारेश्रो, दस्यु, ठकाश्रो तबु !

क्षीरो

अदृष्टे शेषे एइ छिल मोर,
यार लागि चुरि सेइ बले चोर !
ठकाते हय ये कपाल-दोषे,
तोरे भालबासि ब'लेइ तो से।
आर ठकाब ना, आरामे घुमियो—
आमारे ठकिये येयो ना तुमिओ ।

लक्ष्मी

स्वभाव तोमार बड़ोइ रुक्षि ।

क्षीरो

ताहार कारण आमि ये दुःखी ।

... ...

दासि आछि, जानि दासीर या रीति—
रानी करो, पाब रानीर प्रकृति ।
ताँरओ यदि हय मोर अवस्था
सुयश हबे ना एमन सस्ता।
ताँर दयाटुकु पाबे ना अन्ये,
व्यय हबे सेटा निजेरइ जन्ये ।
कथार मध्ये मिष्टि अंश
अनेकखानिइ हबेक ध्वंस ।
दिते गेले कड़ि कभु ना सरबे,
हातेर तेलोय कामड़े धरबे ।
भिक्षे करते, धरते दु पाय
नित्य नतुन उठबे उपाय ।

लक्ष्मी

तथास्तु, रानी करे दिनु तोके ।
दासी छिलि तुइ भुले याबे लोके ।
किन्तु, सदाइ थेको सावधान,
आमार ना येन हय अपमान ।

द्वितीय दृश्य

[रानीवेशे क्षीरो ओ
ताहार पारिषदवर्ग]

क्षीरो

बिनि !

बिनी

केन मासि ?

क्षीरो

मासि की रे मेये ?
देखि नि तो आमि बोका तोर चेये।
काङाल भिखिरि कलु माली चाषि
ताराइ मासिरे बले शुधु 'मासि'।
रानीर बोनझि हयेछ भाग्ये,
जान ना आदर ? मालती !

मालती

आज्ञे !

क्षीरो

रानीर बोनझि रानीरे की डाके
शिखिये दे ओइ बोका मेयेटाके।

मालती

छि छि, शुधु मासि बले कि रानीके !
रानीमासि बले, रेखे दियो शिखे।

क्षीरो

मने थाकबे तो ? कोथा गेल काशि ?

काशी

केन रानीदिदि ?

क्षीरो

चार चार दासी
नेइ ये सङ्गे ?

काशी

एत लोक मिछे
केन दिनरात लेगे थाके पिछे !

क्षीरो

मालती !

मालती

आज्ञे !

क्षीरो

एइ मेयेटाके
शिखिये दे केन एत दासी थाके ।

मालती

तोमरा तो नओ जेलेनि ताँतिनि,
तोमरा हओ ये रानीर नातिनि ।
ये नवाबबाड़ि एनु आमि त्येजि
सेथा बेगमेर छिल पोषा बेजि,
ताहारि एकटा छोटो बाच्छार
पिछनेते छिल दासी चार-चार—
ता छाड़ा सेपाइ ।

क्षीरो

शुनलि तो काशी ?

काशी

शुनेछि ।

क्षीरो

ताहले डाक् तोर दासी ।
किनि पोड़ामुखि !

किनि

केन रानीखुड़ि ?

क्षीरो

हाइ तुललेन, दिलि ने ये तुड़ि ?
मालती !

मालती

आज्ञे !

क्षीरो

शेखाओ कायदा ।

मालती

एत बलि तबु हय ना फायदा ।
बे।म साहेब यखन हाँचेन
तुड़ि भुल हले केह ना बाँचेन ।
तखनि शूलेते चड़िये तारे
नाके काठि दिये हाँचिये मारे ।

... ...

क्षीरो

बिनि !

बिनि

रानीमासि !

क्षीरो

एकगाछि चुड़ि
हात थेके तोर गेछे नाकि चुरि ?

बिनि

चुरि तो याय नि ।

क्षीरो

गियेछे हारिये ?

बिनि

हाराय नि ।

क्षीरो

केउ नियेछे भाँड़िये ।

बिनि

ना गो रानीमासि !

क्षीरो

एटा तो मानिस—
पाखा नेइ तार ! एकटा जिनिस
हय चुरि याय, नय तो हाराय,
नय मारा याय ठगेर द्वाराय,
ता ना हले थाके—ए छाड़ा ताहार
की ये हते पारे जानि ने आर ।

बिनि

दान करेछि से ।

क्षीरो

दियेछिस दाने ?
ठकियेछे केउ, तारि हल माने ।
के नियेछे बल् ।

बिनि

मल्लिका दासी ।
एमन गरिब नेइ रानीमासि !

... ...

क्षीरो

मालती !

मालती

आज्ञे !

क्षीरो

बोका मेयेटि ए,
एरे दुटो कथा दाओ समझिये ।

मालती

रानीर बोनझि रानीर अंश,
तफाते थाकबे उच्च वंश—
दान करा-टरा यत हय बेशि
गरिबेर साथे तत घेँषाघेँषि।
पुरोनो शास्त्रे लिखेछे शोलोक,
गरिबेर मतो नेइ छोटोलोक।

क्षीरो

मालती!

मालती

आज्ञे!

क्षीरो

मल्लिकाटारे
आर तो राखा ना!

मालती

ताड़ाब ताहारे।
छेलेमेयेदेर दयार चर्चा
बेड़े गेले, साथे बाड़बे खरचा।

क्षीरो

ताड़ाबार बेला हये आन्मना
बालाटा-सुद्ध येन ताड़ियो ना—
बाहिरेर पथे के बाजाय बाँशि,
देखे आय मोर छय-छय दासी।

**[तारिणीर प्रस्थान ओ
पुनः प्रवेश]**

तारिणी

मधुदत्तर पौत्रेर बिये,.
धुम क'रे ताइ चले पथ दिये!

क्षीरो

रानीर बाड़ीर सामनेर पथे
बाजिये याच्छे की नियम-मते !
बाँशिर बाजना रानी कि सइबे !
माथा ध'रे यदि थाकत दैवे !
यदि घुमोतेन, काँचा घुमे जेगे
असुख करत यदि रेगेमेगे !
मालती !

मालती

आज्ञे

क्षीरो

नवाबेर घरे
एमन काण्ड घटले की करे ?

मालती

यार बिये याय तारे धरे आने—
दुइ बाँशिओयाला तार दुइ काने
केवलइ बाजाय दुटो-दुटो बाँशि,
तिन दिन परे देय तारे फाँसि।

क्षीरो

डेके दाओ कोथा आछे सर्दार,
निये याक दश जुतोबर्दार—
फि लोकेर पिठे दश घा चाबुक
सपासप वेगे सजोरे नाबुक।

... ...

[दासीर प्रवेश]

दासी

दुयारे रानीमा, दाँड़िये आछे के,
बड़ो लोकेर भि मने हय देखे।

क्षीरो

एसेछे कि हाति किम्बा रथे ?

दासी

मने हल येन हेँटे एल पथे ।

क्षीरो

कोथा तबे तार बड़ोलोकत्व ।

दासी

रानीर मतन मुखटि सत्य ।

क्षीरो

मुखे बड़ोलोक लेखा नाहि थाके,
गाड़िघोड़ा देखे चेना याय ताके ।

[मालतीर प्रवेश]

मालती

रानी कल्याणी एसेछेन द्वारे
रानीजिर साथे देखा करिबारे ।

क्षीरो

हेँटे एसेछेन ?

मालती

शुनछि ताइ तो ।

क्षीरो

ता हले हेथाय उपाय नाइ तो
समान आसन के ताहारे देय ?
निचु आसनटा सेओ अन्याय ।
ए एक विषम हल समिस्ये,
मीमांसा एर के करे विश्वे !

प्रथमा

माझखाने रेखे रानीजिर गदि
ताहार आसन दूरे राखि यदि ?

द्वितीया

घुराये यदि ए आसनखानि
पिछन फिरिया बसेन रानी ?

तृतीया

यदि बला याय 'फिरे याओ आज—
भालो नेइ आज रानिर मेजाज' ?

क्षीरो

मालती !

मालती

आज्ञे !

क्षीरो

की करि उपाय

मालती

दाँड़िये दाँड़िये यदि सारा याय
देखाशोना, तबे सब गोल मेटे ।

क्षीरो

एत बुद्धिओ आछे तोर पेटे !
सेइ भालो । आगे दाँड़ा सार बाँधि
आमार एक-शो-पँचिशटे बाँदि ।
ओ हल ना ठिक—पाँच पाँच क'रे
दाँड़ा भागे भागे—तोरा आय सरे—
ना ना, एइ दिके—ना ना, काज नेइ,
सारि सारि तोरा दाँड़ा सामनेइ—
ना ना, ता हले ये मुख याबे ढेके,
कोनाकुनि तोरा दाँड़ा देखि बेँके ।
आच्छा, ता हले ध'रे हाते हाते
खाड़ा थाक् तोरा एकटु तफाते ।
शशी, तुइ साज छत्रधारिणी

चामरटा निये दोलाओ तारिणी !
मालती !

मालती

आज्ञे !

क्षीरो

एइबार तारे
डेके निये आय मोर दरबारे !

मालतीर प्रस्थान

किनि, बिनि, काशी, स्थिर हये थाको—
खबर्दार केउ नोड़ोचौड़ो नाको ।
मोर दुइ पाशे दाँड़ाओ सकले
दुइ भाग करि ।

[कल्याणी ओ मालतीर प्रवेश]

कल्याणी

आछ तो कुशले ?

क्षीरो

आमार चेष्टा कुशलेइ थाकि,
परेर चेष्टा देबे मोरे फाँकि—
एइभावे चले जगत्सुद्ध
निजेर सङ्गे परेर युद्ध ।

कल्याणी

भालो आछ बिनि ?

बिनि

भालोइ आछि मा—
म्लान केन देखि सोनार प्रतिमा ?

क्षीरो

बिनि करिस ने मिछे गोलयोग—
घुचल ना तोर कथा-कओया रोग ?

कल्याणी

रानी, यदि किछु ना करो मने,
कथा आछे किछु, कब गोपने ।

क्षीरो

आर कोथा याब, गोपन एइ तो,
तुमि आमि छाड़ा केहइ नेइ तो ।

... ...

कल्याणी

कथाटा आमार निइ तबे ब'ले ।
पाठान बादशा अन्याय छले
राज्य आमार नियेछेन केड़े—

क्षीरो

बल की ! ता हले गेछे फुलबेड़े,
गिरिधरपुर, गोपालनगर,
कानाइगञ्ज—

कल्याणी

सब गेछे मोर ।

क्षीरो

हाते आछे किछु नगद टाका कि ?

कल्याणी

सब निये गेछे, किछु नेइ बाकि ।

क्षीरो

अदृष्टे छिल एत दुख तोर !
गयना या छिल हीरे-मुक्तोर,
सेइ बड़ो बड़ो नीलार कण्ठी,
कानबाला-जोड़ा बेड़े गड़नटि,
सेइ-ये चुनीर पाँचनलि हार,
हीरे-देओया सिँथि लक्ष टाकार—
सेगुलो नियेछे बुझि लुटे-पुटे ?

कल्याणी

सब निये गेछे सैन्येरा जुटे ।

क्षीरो

आहा, ताइ बले, धनजनमान
पद्मपत्रे जलेर समान !
दामि तैजस छिल या पुरोनो
चिह्नओ तार नेइ बुझि कोनो ?
से कालेर सब जिनिस-पत्र—
आसासोटागुलो चामर-छत्र,
चाँदोया-कानात, गेछे बुझि सब ?
शास्त्रे ये बले धनवैभव
तड़ित्-समान, मिथ्ये से नय ।
एखन ता हले कोथा थाका हय ?
बाड़िटा तो आछे ?

कल्याणी

फौजेर दल
प्रासाद आमार करेछे दखल ।

क्षीरो

ओमा, ठिक ए ये शोनाय काहिनी—
काल छिल रानी, आज भिखारिनि !
शास्त्रे ताइ तो बले, सब माया—
धन-जन ताल-वृक्षेर छाया ।
की बल मालती !

मालती

ताइ तो बटेइ,
बेशि बाड़ हले पतन घटेइ ।

कल्याणी

किछुदिन यदि हेथाय तोमार
आश्रय पाइ, करि उद्धार
आबार आमार राज्यखानि—
अन्य उपाय नाहिको जानि ।

क्षीरो

आहा, तुमि रबे आमार हेथाय—
ए तो बेश कथा, सुखेरइ कथा ए ।

... ...

किन्तु एकटा कथा आछे बोन—
बड़ो बटे मोर प्रासादभवन,
तेमनि ये ढेर लोकजन बेशि
कोनोमते तारा आछे ठेसाठेसि ।
एखाने तोमार जायगा हबे ना—
से एकटा महा रयेछे भावना ।
तबे किछुदिन यदि घर छेड़े
बाइरे कोथाओ थाकि ताँबु गेड़े—

... ...

कल्याणी

काज नेइ रानी, से असुविधाय—
आजकेर तरे लइनु बिदाय ।

क्षीरो

याबे नितान्त ! की करब भाइ !
छूँच फेलबार जायगाटि नाइ ।
जिनिसपत्र लोक-लस्करे
ठासा आछे घर—कारे फस् क'रे
बसते बलि ये तार जो' टि नेइ ।
भालो कथा ! शोनो, बलि गोपनेइ—
गयनापत्र कोशले राते

दु-दशटा याहा पेरेछ सराते
मोर काछे दिले रबे यतनेइ ।

कल्याणी

किछुइ आनि नि, शुधु हेरो एइ
हाते दुटि चुड़ि, पायेते नूपुर ।

क्षीरो

आज एसो तबे, बेजेछे दुपुर—
शरीर भालो ना, ताइते सकाले
माथा धरे याय अधिक बकाले ।—
मालती !

मालती

आज्ञे !

क्षीरो

जाने ना कानाइ—
स्नानेर समय बाजबे सानाइ ?

मालती

बेटारे उचित करब शासन !

[कल्याणीर प्रस्थान]

क्षीरो

तुले राखो मोर रत्न-आसन—
आजकेर मतो हल दरबार ।
मालती !

मालती

आज्ञे !

क्षीरो

नाम करबार
सुख तो देखलि ?

मालती

हेसे नाहि बाँचि—
ब्याङ थेके केँचे हलेन ब्याङाचि ।

क्षीरो

आमि देखो, बाछा, नाम-करा-करि
येखाने सेखाने टाका-छड़ाछड़ि,
जड़ो करे दल इतर लोकेर
जाँक-जमकेर लोक-चमकेर
यत रकमेर भण्डामि आछे
घेंषि ने कखनो भुले तार काछे ।
... ...
मालती !

मालती

आज्ञे !

क्षीरो

ओदेर गयना
छिलो या एमन काहारओ हय ना ।
दुखानि चुड़िते ठेकेछे शेषे,
देखे आमि आर बाँचि ने हेसे ।
तबु माथा येन नुइते चाय ना,
भिख नेबे तबु कतइ बायना !
पथे बेर हल पथेर भिखिरि,
भुलते पारे ना तबु रानीगिरि ।
नत हये लोक बिपदे ठेकले
पित्ति ज्वले ये देमाक देखले ।—
आबार किसेर शुनि कोलाहल ?

मालती

दुयारे एसेछे भिक्षुकदल—
आकाल पड़ेछे, चालेर बस्ता

मनेर मतन हय नि सस्ता—
ताइते चेँचिये खाच्छे कानटा,
बेतटि पड़ले हबेन ठाण्डा ।

क्षीरो

रानी कल्याणी आछेन दाता,
मोर द्वारे केन हस्त पाता ?
बले दे आमार पाँड़ेजि बेटाके,
धरे निये याक सकल-क'टाके
दाता कल्याणी रानीर घरे—
सेथाय आसुक भिक्षे क'रे ।
सेखाने या पाबे एखाने ताहार
आरो पाँच गुण मिलबे आहार ।

दासीर प्रवेश

दासी

ठाकरुन एक एसेछेन द्वारे,
हुकुम पेलेइ ताड़ाइ ताँहारे ।

क्षीरो

ना ना, डेके दे-ना । आज की जन्य
मन आछे मोर बड़ प्रसन्न ।

ठाकुरानीर प्रवेश

ठाकुरानी

विपदे पड़ेछि ताइ एनु च'ले ।

क्षीरो

से तो जाना कथा । विपदे ना प'ले
शुधु ये आमार चाँदमुखखानि
देखते आस नि, सेटा बेश जानि ।

ठाकुरानी

चुरि हये गेछे घरेते आमार—

क्षीरो

मोर घरे बुझि शोध नेबे तार ?

ठाकुरानी

दया क'रे यदि किछु करो दान
ए यात्रा तबे बेँचे याय प्राण ।

क्षीरो

तोमार या-किछु नियेछे अन्ये
दया चाओ तुमि ताहार जन्ये !
आमार या तुमि निये याबे घरे
तार तरे दया आमाय के करे ?

ठाकुरानी

धनसुख आछे यार भाण्डारे
दानसुखे तार सुख आरो बाड़े ।
ग्रहण ये करे तारि हेँटमुख,
दुःखेर परे भिक्षार दुख ।
तुमि सक्षम, आमि निरुपाय—
अनायासे पारो ठेलिबारे पाय ;
इच्छा ना हय ना'इ कोरो दान,
अपमानितेरे केन अपमान ?
चलिलाम तबे, बलो दया क'रे
वासना पुरिबे गेले कार घरे ।

क्षीरो

रानी कल्याणी नाम शोन नाइ !
दाता ब'ले ताँर बड़ो ये बड़ाइ ।
एइबार तुमि याओ ताँरि घरे,

भिक्षार झुलि निये एसो भरे—
पथ ना जान तो मोर लोकजन
पौंछिये देबे रानीर भवन ।

ठाकुरानी

तबे तथास्तु । याइ ताँरि काछे ।
ताँर घर मोर खुब जाना आछे ।—
आमि से लक्ष्मी, तोर घर एसे
अपमान पेये फिरिलाम शेषे ।
एइ कथा क'टि करियो स्मरण—
धने मानुषेर बाड़े नाको मन ।
आछे बहु धनी, आछे बहु मानी—
सबाइ हय ना रानी कल्याणी ।

क्षीरो

याबे यदि तबे छेड़े याओ मोरे
दस्तुरमत कुर्निश क'रे ।
मालती ! मालती ! कोथाय तारिणी !
कोथा गेल मोर चामरधारिणी
आमार एक-शो-पँचिशटे दासी !
तोरा कोथा गेलि—बिनि ! किनि ! काशी !

कल्याणीर प्रवेश

कल्याणी

पागल हलि कि ! हयेछे की तोर ?
एखनो ये रात हय निको भोर—
बल् देखि की ये काण्ड कल्लि !
डाकाडाकि करे जागालि पल्ली !

क्षीरो

ओमा ,ताइ तो गा ! की जानि केमन

सारा रात ध'रे देखेछि स्वपन ।
बड़ो कुस्वप्न दियेछिल विधि—
स्वपनटा भेङे बाँचलेम दिदि !
एकटु दाँड़ाओ, पदधूलि लब—
तुम रानी, आमि चिरदासौ तव ।

क्षुद्रेर दम्भ

शैवाल दिघिरे बले उच्च करि शिर,
'लिखे रेखो, एक फोंटा दिलेम शिशिर।'

कुटुम्बिताविचार

केरोसिन-शिखा बले माटिर प्रदीपे,
'भाई बले डाक यदि देब गला टिपे।'
हेनकाले गगनेते उठिलेन चाँदा;
केरोसिन बलि उठे, 'एसो मोर दादा!'

भक्तिभाजन

रथयात्रा, लोकारण्य, महा धुमधाम,
भक्तेरा लुटाये पथे करिछे प्रणाम।
पथ भावे 'आमि देव', रथ भावे 'आमि',
मूर्ति भावे 'आमि देव'—हासे अन्तर्यामी।

माझारिर सतर्कता

उत्तम निश्चिन्ते चले अधमेर साथे,
तिनिइ मध्यम यिनि चलेन तफाते ।

मोह

नदीर ए पार कहे छाड़िया निश्वास,
'ओ पारेते सर्वसुख आमार विश्वास ।'
नदीर ओ पार बसि दीर्घश्वास छाड़े ;
कहे, 'याहा-किछु सुख सकलि ओ पारे ।'

बिषम विपति

पाँच दिन भात नेइ,
दुध एक-रत्ति—
ज्वर गेल, याय ना ये
तबु तार पथ्यि ।

सेइ चले जल-साबु,
सेइ डाक्तार-बाबु,
कांँचा कुले आम्ड़ाय
तेम्नि आपत्ति ।

इस्कुले याओआ नेइ
सेइटे या मंगल—
पथ खुँजे घुरि नेको
गणितेर जंगल ।

किन्तु ये बुक फाटे
दूर थेके देखि माठे
फुट्बल-म्याचे जमे
छेलेदर दंगल ।

किनुराम पण्डित,
मने पड़े टाक तार—
समान भीषण जानि
चुनिलाल डाक्तार ।

खुले ओषुधेर छिपि
हेसे आसे टिपिटिपि,
दाँतेर पाटिते देखि
दुटो दाँत फाँक तार ॥

ज्वरे बाँधे डाक्तारे,
पालाबार पथ नेइ—
प्राण करे हाँसफाँस
यत थाकि यत्नेइ ।

ज्वर पेले मास्टारे
गिठ देय फाँस्टारे ।
आमारे फेलेछे सेरे
एइ दुटि रत्नेइ ॥

अग्निकाण्ड

‘तोलपाड़िये उठल पाड़ा
तबु कर्ता देन ना साड़ा।
जागुन शिग्गिर जागुन।’
‘एलारामेर घड़िटा ये
चुप रयेछे, कै से बाजे ?’

‘घड़ि परे बाजबे, एखन
घरे लागल ग्रागुन।’

‘असमये जामले परे
भीषण आमार माथा धरे।’

‘जान्‌लाटा ऐ उठ्‌ल ज्व’ले—
ऊर्ध्वश्वासे भागुन।’

‘बड्ड ज्वालाय तिनकड़िटा।

ज्वले ये छाइ ह’ल भिटा—
फुट्‌पाथे ऐ बाकि घुमटा
शेष करते लागुन।’

छोटोबड़ो

एखनो तो बड़ो हइ नि आमि,
छोटो आछि छेलेमानुष ब' ले।
दादार चेये अनेक मस्त ह्ब
बड़ो हये बाबार मतो ह्ले।
दादा तखन पड़ते यदि ना चाय,
पाखिर छाना पोषे केबल खाँचाय,
तखन तारे एमनि बके देब !
बलब, 'तुमि चुपटि क'रे पड़ो।'
बलब, 'तुमि भारी दुष्टु छेले'
यखन हब बाबार मतो बड़ो।
तखन निये दादार खाँचाखाना
भालो भालो पुषब पाखिर छाना॥

साड़े दशटा यखन याबे बेजे
नाबार जन्ये करब ना तो ताड़ा।
छाता एकटा घाड़े क'रे निये
चटि पाये बेड़िये आसब पाड़ा।
गुरुमशाय दाओयाय एले परे
चौकि एने दिते बलब घरे;
तिनि यदि बलेन 'सेलेट कोथा !
देरि हच्छे, बसे पड़ा करो'

आमि बलब, 'खोका तो आर नेइ,
हयेछि ये बाबार मतो बड़ो ।'
गुरुमशाय शुने तखन कबे,
'बाबुमशाय, आसि एखन तबे ।'

खेला करते निये येते माठे
भुलु यखन आसबे बिकेल बेला
आमि ताके धमक दिये कब,
'काज करछि, गोल कोरो ना मेला ।'
रथेर दिने खुब यदि भिड़ हय
एकला याब, करब ना तो भय;
मामा यदि बलेन छुटे ऐसे
'हारिये याबे, आमार कोले चड़ो ।'
बलब आमि 'देखछ ना कि मामा,
हयेछि ये बाबार मतो बड़ो ।'
देखे देखे मामा बलबे, 'ताइ तो,
खोका आमार से खोका आर नाइ तो ।'

आमि ये दिन प्रथम बड़ो हब
मा से दिने गंगास्नानेर परे
आसबे यखन खिड़कि-दुयोर दिये
भाबबे, 'केन गोल शुनि ने घरे ।'
तखन आमि चाबि खुलते शिखे
यत इच्छे टाका दिच्छि झिके,
मा देखे ताइ बलबे ताड़ाताड़ि
'खोका, तोमार खेला केमनतरो !
आमि बलब, 'माइने दिच्छि आमि,
हयेछि ये बाबार मतो बड़ो ।

फुरोय यदि टाका, फुरोय खाबार,
यत चाइ मा, एने देब आबार।'

आश्विनेते पुजोर छुटि हबे
मेला बसबे गाजन-तलार हाटे,
बाबार नौको कत दूरेर थेके
लागबे एसे बाबुगंजेर घाटे।
बाबा मने भाबबे सोजासुजि,
खोका तेम्नि खोकाइ आछे बुझि—
छोटो-छोटो रङिन जामा जुतो
किने एने बलबे आमाय 'परो'।
आमि बलब, 'दादा परुक एसे,
आमि एखन तोमार मतो बड़ो।
देखछ ना कि ये छोटो माप जामार—
परते गेले आँट हबे ये आमार।'

मुकुट

प्रथम अङ्क

प्रथम दृश्य

त्रिपुरार सेनापति इशा खाँर कक्ष

त्रिपुरार कनिष्ठ राजकुमार राजधर ओ इशा खाँ

इशा खाँ अस्त्र परिष्कार करिते नियुक्त

राजधर : देखो सेनापति, आमि बारबार बलछि, तुमि आमार नाम धरे डेको ना।

इशा खाँ : तबे को धरे डाकब। चुल धरे ना कान धरे ?

राजधर : आमि बले राखछि, आमार सम्मान यदि तुमि ना राख तोमार सम्मानओ आमि राखब ना।

इशा खाँ : आमार सम्मान यदि तोमार हाते थाकबार भार थाकत तबे कानाकड़ार दरे ताके हाटे बिकिये आसतुम। निजेर सम्मान आमि निजेइ राखते पारब।

राजधर : ताइ यदि राखते चाओ ता हले भविष्यते आमार नाम धरे डेको ना।

इशा खाँ : बटे !

राजधर : हाँ।

इशा खाँ : हा हा हा हा ! महाराजाधिराजके की बले डाकते हबे। हजुर, जनाब, जाँहापना !

राजधर : आमि तोमार छात्र बटे, किन्तु आमि राजकुमार से कथा तुमि भुले याओ।

इशा खाँ : सहजे भुलि नि, तुमि ये राजकुमार से कथा मने राखा शक्त करे तुलेछ।

राजधर : तुमि ये आमार ओस्ताद, से कथाओ मने राखते दिले ना देखछि।

इशा खाँ : बस्। चुप।

[द्वितीय राजकुमार इंद्रकुमारेर प्रवेश]

इंद्रकुमार : खाँ-साहेब, व्यापारखाना की ?

इशा खाँ : शोनो तो बाबा। बड़ो तामाशार कथा। तोमादेर मध्ये एइ-ये व्यक्तिटि सकलेर कनिष्ठ, एँके जाँहापना शाहेनशा बले ना डाकले ओँर आर सम्मान थाके ना—ओँर सम्मानेर एत टानाटानि !

इंद्रकुमार : बल की ! सत्यि नाकि ! हा हा हा हा !

राजधर : चुप करो दादा।

इंद्रकुमार : तोमाके की बले डाकते हबे ? जाँहापना ! हा हा हा हा ! शाहेनशा !

राजधर : दादा, चुप करो बलछि।

इंद्रकुमार : जनाब, चुप करे थाका बड़ो शक्त—हासिते ये पेट फेटे याय हजुर।

राजधर : तुमि अत्यन्त निर्बोध।

इंद्रकुमार : ठाण्डा हओ भाइ, ठाण्डा हओ। तोमार बुद्धि तोमारइ थाक्, तार प्रति आमार कोनो लोभ नेइ।

इशा खाँ : ओँर बुद्धिटा सम्प्रति बड़ोइ बेड़े उठेछे।

इंद्रकुमार : नागाल पाओया याच्छे ना—मइ लगाते हबे।

[अनुचरसह युवराज चन्द्रमाणिक्य ओ महाराज अमरमाणिक्येर प्रवेश]

राजधर : महाराजेर काछे आमार नालिश आछे।

महाराज : की हयेछे ?

राजधर : इशा खाँ पुनःपुनः निषेध सत्वे आमार असम्मान करेन। एर विचार करते हबे।

इशा खाँ : असम्मान केउ करे ना—असम्मान तुमि कराओ। आरओ तो राजकुमार आछेन, ताँराओ मने राखेन आमि ताँदेर गुरु, आमिओ मने राखि ताँरा आमार छात्र—सम्मान-असम्मानेर कोनो कथाइ ओठे ना।

महाराज : सेनापति साहेब, कुमारदेर एखन बयस हयेछे, एखन ओँदेर मान रक्षा करे चलते हबे बइ-कि।

इशा खाँ : महाराज यखन आमार काछे युद्ध शिक्षा करेछेन तखन महाराजके ये-रकम सम्मान करेछि, राजकुमारदेर ता अपेक्षा कम करि ने।

राजधर : अन्य कुमारदेर कथा बलते चाइ ने, किन्तु—

इशा खाँ : चुप करो वत्स। आमि तोमार पितार सङ्गे कथा कच्छि। महाराज, माप करबेन, राजवंशेर एइ कनिष्ठ पुत्रटि बड़ो हले मुन्शिर मतो कलम चालाते पारबे, किन्तु तलोयार एर हाते शोभा पाबे ना। (**युवराज एबं इन्द्रकुमारके देखाइया**) चेये देखुन महाराज, एँराइ तो राजपुत्र, राजगृह आलो करे आछेन।

महाराज : राजधर, खाँ-साहेब की बलछेन ! तुमि अस्त्र-शिक्षाय ओँके संन्तुष्ट करते पारो नि ?

राजधर : से आमार भाग्येर दोष, अस्त्रशिक्षार दोष नय। महाराज निजे आमादेर धनुर्विद्यार परीक्षा ग्रहण करुन, एइ आमार प्रार्थना।

महाराज : आच्छा, उत्तम। काल आमादेर अवसर आछे, कालइ परीक्षा हबे। तोमादेर मध्ये ये जितबे ताके आमार एइ हीरे-बाँधानो तलोयार पुरस्कार देब। [**प्रस्थान**]

द्वितीय दृश्य

[इन्द्रकुमारेर अस्त्रशालार द्वारे]

इन्द्रकुमार : की हे प्रताप, व्यापारखाना की। आमाके हठात् अस्त्र-शालार द्वारे ये डाक पड़ल ?

प्रताप : मध्यम बउरानीमा आपनाके खबर दिते बललेन ये, आपनार अस्त्रशालार मध्ये एकटि ज्यान्त अस्त्र ढुकेछेन, तिनि वायु-अस्त्र, ना नागपाश, ना की, सेटा सन्धान नेओया उचित।

इन्द्रकुमार : बल की प्रताप, कलियुगेओ एमन व्यापार घटे नाकि ?

प्रताप : आज्ञे कुमार, कलियुगेइ घटे, सत्ययुगे नय। दरजाटा खुललेइ समस्त बुझते पारबेन।

इन्द्रकुमार : ताइ तो बटे, पायेर शब्द शुनि ये। [**द्वार खुलितेइ राजधरेर निष्क्रमण**] ए की ! राजधर ये ! हा हा हा हा, तोमाके अस्त्र बले केउ भुल करेछिल नाकि ! हा हा हा हा !

राजधर : मेजबउरानी तामाशा करे आमाके एखाने बन्ध करे रेखे-छिलेन।

इन्द्रकुमार : ए घरटा तो सहज तामाशार घर ना—एखानकार तामाशा ये भङ्कर धारालो तामाशा—एखाने तोमार आगमन हल ये ?

राजधर : आज रात्रे शिकारे याब बले अस्त्र खुँजते गिये देखलुम, आमार अस्त्रगुलोते सब मरचे पड़े रयेछे। कालकेर अस्त्रपरी-क्षार जन्ये सेगुलोके समस्त साफ करते दिये एसेछि। ताइ बउ-रानीर काछे एसेछिलुम तोमार किछु अस्त्र धार नेबार जन्ये।

इन्द्रकुमार : ताइ तिनि बुझि समस्त अस्त्रशालासुद्धइ तोमाके धार दिये बसे आछेन ! हा हा हा हा ! ता बेरिये एले केन ? याओ, ढुके पड़ो। धारेर मेयाद फुरियेछे नाकि ? हा हा हा हा !

राजधर : हासो, हासो। ए तामाशाय आमिओ हासब। किन्तु एखन नय। चललुम दादा, आज आर शिकारे याच्छि ने। [**प्रस्थान**]

प्रताप : छोटो कुमारके निये आपनादेर एसमस्त ठाट्टा आमार भालो बोध हय ना।

इन्द्रकुमार : ठाट्टा निये भय किसेर। उनिओ ठाट्टा करुन-ना।

प्रताप : ओँर ठाट्टा बड़ो सहज हबे ना।

तृतीय दृश्य

परीक्षाभूमि

राजा, राजकुमारगण, इशा खाँ, निशानधारी ओ भाट

इन्द्रकुमार : दादा, आज तोमाके जिततेइ हबे, नइले चलबे ना।

युवराज : चलबे ना तो की। आमार तीरटा लक्ष्यभ्रष्ट हलेओ जगत्‌संसार येमन चलछिल ठिक तेमनिइ चलबे। आर, यदिवा नाइ चलत तबु आमार जेतबार कोनो सम्भावना देखछि ने।

इन्द्रकुमार : दादा, तुमि यदि हारो तबे आमि इच्छापूर्वक लक्ष्य-भ्रष्ट हब।

युवराज : ना भाइ, छेलेमानुषि कोरो ना। ओस्तादेर नाम राखते हबे।

इशा खाँ : युवराज, समय हयेछे— धनुक ग्रहण करो। मनोयोग कोरो। देखो, हात ठिक थाके येन। [**युवराजेर तीर निक्षेप**] या:, फसके गेल।

युवराज : मनोयोग करेछिलुम खाँ-साहेब, तीरयोग करतेइ पारलुम ना।

इन्द्रकुमार : कखनो ना। मन दिले तुमि निश्चयइ पारते। दादा, तुमि केवल उदासीन हये सब जिनिस ठेले फेले दाओ, एते आमार भारी कष्ट हय।

इशा खाँ : तोमार दादार बुद्धि तीरेर मुखे केन खेले ना ता जान? बुद्धिटा तेमन सूक्ष्म नय।

इन्द्रकुमार : सेनापति-साहेब, तुमि अन्याय बलछ।

इशा खाँ [राजधरेर प्रति] : कुमार, एबार तुमि लक्ष्य भेद करो,

महाराज देखुन ।

राजधर : आगे दादार होक ।

इशा खाँ : एखन उत्तर करबार समय नय, आमार आदेश पालन करो । [**राजधरेर तीर-निक्षेप**]

याक, तोमार तीरओ तोमार दादार तीरेरइ अनुसरण करेछे —लक्ष्येर दिके लक्षओ करे नि ।

युबराज : भाइ, तोमार बाण अनेकटा निकट दियेइ गेछे, आर एकटु हलेइ लक्ष्य बिद्ध करते पारत ।

राजधर . लक्ष्य बिद्ध तो हयेछे । दूर थेके तोमरा स्पष्ट देखते पाच्छ ना । ऐ-ये बिद्ध हयेछे ।

युवराज : ना राजधर, तोमार दृष्टिर भ्रम हयेछे—लक्ष्य बिद्ध हय नि ।

राजधर : आमार धनुर्विद्यार प्रति तोमादेर विश्वास नेइ बलेइ तोमरा देखेओ देखते पाच्छ ना । आच्छा, काछे गेलेइ प्रमाण हबे । [**इन्द्रकुमारेर धनुक ग्रहण**]

युवराज : [**इन्द्रकुमारेर प्रति**] भाइ, आमि अक्षम, सेजन्ये आमार उपर तोमार राग करा उचित ना । तुमि यदि लक्ष्यभ्रष्ट हओ ता हले तोमार भ्रष्टलक्ष्य तीर आमार हृदय विदीर्ण करबे, ए तुमि निश्चय जेनो । [**इन्द्रकुमारेर तीर-निक्षेप**]

[**नेपथ्ये जनता**] : जय, कुमार इन्द्रकुमारेर जय । [**वाद्य बाजिया उठिल । युवराज इन्द्रकुमारके आलिगन करिलेन**]

इशा खाँ : पुत्र, आल्लार कृपाय तुमि दीर्घजीवी हये थाको । महाराज, मध्यम कुमार पुरस्कारेर पात्र । येरुप प्रतिश्रुत आछेन ता पालन करुन ।

राजधर : ना महाराज, पुरस्कार आमारइ प्राप्य । आमारइ तीर लक्ष्यभेद करेछे ।

महाराज : कखनोइ ना ।

राजधर : सेनापति-साहेब, परीक्षा करे आसुन क़ार तीर लक्ष्ये बिंधे

আছে।

ইশা খাঁ : আচ্ছা আমি দেখে আসি। [**প্রস্থান। তীর হাতে লইয়া ইশা খাঁর পুনঃপ্রবেশ। ইন্দ্র কুমারের প্রতি**] বাবা, আমি বুড়ো-মানুষ, চোখে তো ভুল দেখছি নে? এই তীরের ফলায় যেন রাজ-ধরের নাম দেখা যাচ্ছে।

ইন্দ্রকুমার : হাঁ, রাজধরেরই নাম।

মহারজ : দেখি। তাই তো! একসঙ্গে আমাদের সকলেরই ভুল হল।

রাজধর : আজ নয় মহারাজ, আমার প্রতি বরাবরই ভুল হয়ে আসছে।

ইশা খাঁ : কিছু বোঝা যাচ্ছে না।

ইন্দ্রকুমার : আমি বুঝেছি।

রাজধর : মহারাজ, আজ বিচার করুন।

ইন্দ্রকুমার [**জনান্তিকে**] : বিচার! তুমি বিচার চাও! তা হলে যে মুখে চুনকালি পড়বে। বংশের লজ্জা প্রকাশ করব না—অন্তর্যামী তোমার বিচার করবেন।

ইশা খাঁ : কী হয়েছে বাবা। এর মধ্যে একটা রহস্য আছে। শিলা কখনও জলে ভাসে না, বানরে কখনো সংগীত গায় না। বাবা ইন্দ্রকুমার, ঠিক কথা বলো তো, কী হয়েছে। তূণ বদল হয় নি তো?

রাজধর : কখনোই না। পরীক্ষা করে দেখো।

ইশা খাঁ : তাই তো দেখছি—তূণ তো ঠিকই আছে। আচ্ছা, বাবা ইন্দ্রকুমার, সত্য করে বলো, এর মধ্যে তোমার অস্ত্রশালায় কেউ কি প্রবেশ করেছিল?

ইন্দ্রকুমার : সে কথায় প্রয়োজন নেই খাঁ-সাহেব।

ইশা খাঁ : ঠিক করে বলো বাবা, তুমি নিশ্চয় জান, কেউ তোমার অস্ত্রশালায় গিয়ে তোমার সঙ্গে তীর বদল করেছে।

ইন্দকুমার : চুপ করো খাঁ-সাহেব। ও কথা থাক্।

ইশা খাঁ : তা হলে তুমি হার মানছ?

इन्द्रकुमार : हाँ, आमि हार मानछि।

इशा खां : शाबाश बाबा, शाबाश ! तुमि राजार छेले बटे। महाराज, आमार एकटि निवेदन आछे। खेलार परीक्षा तो चुकेछे, एबार काजेर परीक्षा होक। देखा याबे, ताते आपनार कोन् पुत्र पुरस्कार आनते पारे।

महाराज : कोन् काजेर कथा बलछ सेनापति।

इशा खां : आराकान-राजेर सङ्गे महाराजेर युद्धेर मतलब आछे। सैन्यओ तो प्रस्तुत हयेछे। एइबार कुमारदेर सेइ युद्धे पाठानो होक।

महाराज : भालो कथाइ बलेछ, सेनापति। खबर पेयेछि, आराकानेर राजा चट्टग्रामेर सीमानार काछे एसेछेन। बारबार शिक्षा दियेछि किन्तु मूर्खेर शिक्षार शेष तो किछुतेइ हय ना, यमराजेर पाठशालाय ना पाठाले गति नेइ। की बल वत्सगण ? आमादेर सेइ चिरशत्रुर सङ्गे लड़ाइये यात्रा करे क्षात्रचर्ये दीक्षा ग्रहण करते राजि आछ कि ?

इन्द्रकुमार : आछि। दादाओ याबेन।

राजधर : आमिओ याब ना मने करछ नाकि ?

महाराज : तबे इशा खाँ, तुमि सैन्याध्यक्ष हये एँदेर सकलके शत्रु-विजये निये याओ। त्रिपुरेश्वरी तोमादेर सहाय होन।

द्वितीय अङ्क

प्रथम दृश्य

राजधरेर शिबिर

राजधर ओ धुरन्धर

धुरन्धर : तुमि पाँच हजार सैन्य निये तफाते थाकबे नाकि ?

राजधर : हाँ—इशा खाँर काछे आमि एइ प्रस्ताव पाठियेछिलुम।

धुरन्धर : से तो आमि जानि; आमि तखन सेखाने उपस्थित छिलुम।

ताइ निये अनेक कथावार्ता हये गेल ।

राजधर : किरकम ?

धुरन्धर : प्रथमेइ तो इन्द्रकुमार अट्टहास्य करे उठलेन । तिनि बललेन, राजधरेर युद्धप्रणालीटाइ ओइरकम—युद्धक्षेत्र थेके बहुदूरे थेकेइ तिनि युद्ध करते भालोबासेन ।

राजधर : से कथा ठिक । क्षेत्रे थेके युद्ध करे मजुररा—दूर थेके ये युद्ध करते पारे सेइ योद्धा । इशा खाँ की बललेन ?

धुरन्धर : तोमार उपर ताँर विश्वास किरकम से तो तुमि जानइ—तुमि यदि पाये धरते याओ ता हलेओ तिनि सन्देह करेन निश्चय जुताजोड़ाटा तोमार सराबार मत्लब आछे । ताइ इशा खाँ बललेन, युद्धक्षेत्र थेके राजधर तफाते थाकते चान सेटा ताँर पक्षे आश्चर्य नय, किन्तु पाँच हजार सैन्य सङ्गे राखते चान सेइटे आमार भालो ठेकछे ना ।

राजधर : युबराज किछु बललेन ना ?

धुरन्धर : युवराज काउके ये सन्देह करबेन से परिमाण बुद्धि भगवान ताँके देन नि—एमन-कि, तुमि ये तुमि, तोमार उपरेओ ताँर सन्देह हय ना ।

राजधर : देखो धुरन्धर, दादार कथा तुमि अमन करे बोलो ना ।

धुरन्धर : ओः, ऐ जायगाटा तोमार एकटु नरम आछे, सेटा माझे माझे भुले याइ । या होक, तिनि बललेन, ना ना, राजधरेर प्रति तोमरा अन्याय अविचार करछ, ताँर प्रस्तावटा तो आमार भालोइ ठेकछे । युद्धे यदि संकट उपस्थित हय ता हले तिनि ताँर सैन्य निये आमादेर साहाय्य करते पारबेन । युवराजेर अनुरोधेइ तो इशा खाँ तोमार प्रस्तावे राजी हलेन, नइले ताँर बड़ो इच्छे छिल ना । याइ होक—किन्तु आमि तोमार आलादा थाकबार मत्लब भालो बुझते पारछि ने ।

राजधर : ओंदेर संगे एकत्रे मिले युद्ध करे आमार लाभ की—जित हले से जितके केउ आमार जित बलबे ना तो ।

धुरन्धर : तबु भुलेओ केउ तोमार नाम करते पारे। किन्तु तफाते बसे थाकले युद्धे जय हलेओ तोमार अपयश, हारले तो कथाइ नेइ।

राजधर : आमार एइ पाँच हाजार सैन्य नियेइ आमि युद्ध जितब एवं आमि एकलाइ जितब। [**दूतेर प्रवेश**] की रे युद्धेर खबर की ?

दूत : आज्ञे, लड़ाइ तो समस्तदिन धरेइ चलछे, किन्तु ए पर्यन्त एँरा शत्रुदेर व्यूहभेद करते पारेन नि। सूर्य अस्त याबार आर तो बेशि देरि नेइ—अन्धकार हये एले बोध हय युद्ध आजकेर मतो बन्ध राखते हबे। [**द्वितीय दूतेर प्रवेश**]

राजधर : के तुमि ?

द्वितीय दूत : आज्ञे आमि व्योमकेश। युवराज आमाके पाठिये दियेछेन—सेओ प्राय दुइ प्रहर हये गेल। आपनार येखाने सैन्य निये थाकबार कथा छिल सेखाने आपनार कोनो चिह्न ना पेये बहु सन्धाने एखाने एसेछि।

राजधर : युवराजेर आदेश की ?

दूत : शत्रुसैन्येर संख्या आमरा ये-रकम अनुमान करेछिलुम तार चेये अनेक बेशि देखा याच्छे—युद्ध खुब कठिन हये एसेछे। कुमार इन्द्रकुमार ताँर अश्वारोहीदल निये शत्रुसैन्येर उत्तर दिक आक्रमण करेछिलेन, आर किछुक्षण समय पेलेइ तिनि से दिक थेके शत्रुसैन्यके एकेबारे नदीर किनारा पर्यन्त हठिये आनते पारतेन।

राजधर : सत्यि नाकि ! समय पेले की करते पारतेन से कथा कल्पना करे विशेष लाभ देखि ने—किन्तु समय पान नि बलेइ बोध हच्छे।

दूत : शत्रुसैन्यके यखन प्राय टलिये एनेछेन एमन-समय खबर पेलेन ये, युवराज संकटे पड़ेछेन, शत्रु ताँके घिरे फेलेछे। इशा खाँ तखन अन्य दिके युद्धे नियुक्त छिलेन, तिनि खबर पेये बललेन, युवराजके उद्धार करबार जन्ये आमि एखाने आसि नि, आमाके

युद्धे जितते हबे; आमि एखान थेके नड़ते गेलेइ शत्रुरा सुविधा पाबे।

राजधर : दादा कि तबे—

दूत : ना ताँर कोनो बिपद एखनो घटे नि। इन्द्रकुमार सैन्य निये ताँके उद्धार करेछेन। किन्तु एइ गोलमाले युद्धे आमादेर असुविधा घटल। आपनाके सन्धान करबार जन्ये नाना दिके दूत गियेछे —आपनार साहाय्य ना हले बिपद घटतेओ पारे, अतएव आपनि आर किछुमात्र विलम्ब करबेन ना।

राजधर : ना, किछुमात्र विलम्ब करब ना। याओ तुमि विश्राम करो गे याओ—आमि प्रस्तुत हच्छि। [**दूतेर प्रस्थान**]

द्वितीय दृश्य

आराकान-राजेर शिविर

आराकान-राज ओ राजधर

आराकान-राज : देखुन राजकुमार, आमाके बन्दी करे आपनादेर कोनो लाभ नेइ।

राजधर : केन लाभ नेइ, राजन्। एइ युद्धेर मध्ये आपनाके लाभ कराइ तो सब चेये बड़ो लाभ।

आराकान-राज : ताते युद्धेर अवसान हबे ना। आमार भाइ हाम्चु रयेछे, सैन्येरा ताकेइ राजा करबे, युद्ध येमन चलछिल तेमनि चलबे।

राजधर : आपनाके मुक्तिइ देब, किन्तु सेटा तो एकेबारे बिना मूल्ये देओया चलबे ना।

आराकान-राज : से आमि जानि—मूल्य दिते हबे। आमि आपनार काछे पराजय स्वीकार करे सन्धिपत्र लिखे दिते राजी आछि।

राजधर : शुधु सन्धिपत्र दिले तो हबे ना, महाराज। आपनि ये पराजय स्वीकार करलेन तार किछु निदर्शन तो देशे निये येते हबे।

आराकान-राज : आपनाके पाँचशत ब्रह्मदेशेर घोड़ा ओ तिनटि हाति उपहार देब।

राजधर : से उपहारे आमार प्रयोजन नेइ—महाराजेर माथार मुकुट आमाके दिते हबे।

आराकान-राज : तार चेये प्राण देओया सहज छिल।

राजधर : प्राण दिलेओ मुकुटटि तो बाँचाते पारबेन ना, माझेर थेके प्राणटाइ वृथा याबे।

आराकान-राज : तबे मुकुट निन, किन्तु एइ मुकुटेर सहित आराकानेर चिरस्थायी शत्रुता आपनि घरे निये याच्छेन। एइ मुकुट यतदिन-ना आबार फिरे पाब ततदिन आमार राजवंशे शान्ति थाकबे ना।

राजधर : एइ तो राजार मत कथा। आमराओ तो शान्ति चाइ ने महाराज, आमरा क्षत्रिय। आर-एकटि कर्त्तव्य बाकि आछे। शीघ्र युद्ध निवारण करे एक आदेशपत्र आपनार सेनापतिर निकट पाठिये दिन, ओपारे एतक्षण युद्धेर उद्योग हच्छे।

आराकान-राज : एखनइ आमार आदेश निये दूत याबे।

राजधर : तबे चलुन; सन्धिपत्र लेखार व्यवस्था करा याक।

तृतीय दृश्य

रणक्षेत्र

युवराज ओ इन्द्रकुमार

युवराज : आजकेर युद्धेर गतिकटा भालो बोझा याच्छे ना। आमार मने हच्छे, आमादेर सैन्येरा कालकेर व्यापारे आजओ निरुत्साह हये रयेछे—ओरा येन भालो करे लड़छे ना। इशा खाँ कोन् दिके?

इन्द्रकुमार : ऐ-ये पूर्वकोणे ताँर निशान देखा याच्छे।

युवराज : भाइ, तुमि केन आज आमार सङ्गे सङ्गे रयेछ। तोमार बोध हय ऐ उत्तरेर दिके याओयाइ कर्त्तव्य।

इन्द्रकुमार : ना, आमार एइ जायगाइ भालो।

युवराज : इन्द्रकुमार, तुमि तोमार दादाके आज निर्बुद्धिता थेके बाँचाबार जन्ये सतर्क हये काछे काछे फिरछ। खाँ-साहेब ये आबार कोनो सुयोगे आमार बुद्धिर दोष धरबेन एटा तोमार भालो लागछे ना। किन्तु भाइ, आमारओ निर्बुद्धितार सीमा आछे—आमि आज बोध हय सावधाने काज करते पारब। ऐ देखो, चेये देखो, आमार किन्तु भालो बोध हच्छे ना। ऐ देखो—ऐ पाशे आमादेर सैन्येरा येन टलेछे, एखनइ पालाते आरम्भ करबे—तुमि ना हले केउ ओदेर ठेकाते पारबे ना। इन्द्रकुमार, देरि कोरो ना, आमार जन्ये तोमार कोनो भय नेइ। ए की! ए की! ए की!

इन्द्रकुमार : ताइ तो ए की! शत्रुसैन्येरा हठात् युद्ध बन्ध करले येन! [**इशा खाँ प्रवेश**] खाँ-साहेब, शत्रुसैन्य हठात् युद्ध थामिये दिले केन तार कोनो खबर पेयेछ?

इशा खाँ : पेयेछि बइकि। राजधर आराकान-राजके बन्दी करेछे।

इन्द्रकुमार : राजधर! मिथ्या कथा!

इशा खाँ : काल संध्यार परे आमरा यखन युद्धे क्षान्त दिये शिविरे फिरे एलेम तखन से अन्धकारे गोपने नदी पार हये हठात् आराकानराजेर शिविर आक्रमण करे ताँके बन्दी करेछे। आमादेर साहाय्य करबार जन्ये आमि ताके येखाने प्रस्तुत थाकते बलेछिलुम सेखाने से छिलइ ना। आमि सेनापति, आमार आदेश से मान्यइ करे नि।

इन्द्रकुमार : असह्य! ए जन्ये तार शास्ति पाओया उचित।

इशा खाँ : शुधु ताइ! युवराज उपस्थित थाकते से किना निजेर इच्छामत सन्धिपत्र रचना करेछे।

इन्द्रकुमार : एर शास्ति ना दिले अन्याय हबे।

इशा खाँ : तोमार दादाके एइ सहज कथाटि बुझिये दाओ देखि।

[**राजधरेर प्रवेश**]

इन्द्रकुमार : राजधर ! तुमि कापुरुषता प्रकाश करेछ ।

राजधर : तोमार मतो युद्धे भङ्ग दिये पुरुषकार प्रकाश करते आमि एत दूरे आसि नि—आमि युद्धे जय करते एसेछिलुम ।

इन्द्रकुमार : तुमि युद्ध करेछ ! एबं जय करेछ ! जयलक्ष्मीर मुख ये लज्जाय लाल करे तुलेछ ।

राजधर : ता हते पारे, सेटा प्रणयेर लज्जा । किन्तु तिनि ये आमाके वरण करेछेन तार साक्षी एइ ।

इन्द्रकुमार : ए मुकुट कार ।

राजधर : ए मुकुट आमार । ए आमार जयेर पुरस्कार ।

इन्द्रकुमार : युद्ध थेके पालियेछ तुमि—तुमि पुरस्कार पाबे किसेर । ए मुकुट युवराज परबेन ।

राजधर : आमि जिते एनेछि, आमिइ परब ।

युवराज : राजधर ठिक कथाइ बलछेन । ओंर जयेर धन तो उनिइ परबेन ।

इशा खाँ : सेनापतिर आदेश लङ्घन करे उनि अन्धकारे शृगालवृत्ति अवलम्बन करलेन—आर उनि परबेन मुकुट ! भाङा हाँड़िर काना परे यदि देशे यान तबेइ ओंके साजबे ।

राजधर : आमि यदि ना थाकतुम भाङा हाँड़िर काना तोमादेर परते हत । एतक्षण थाकते कोथाय ।

इन्द्रकुमार : येखानेइ थाकि तोमार मतो पालिये थाकतुम ना ।

युवराज : इन्द्रकुमार, तुमि अन्याय बलछ भाइ । सत्य बलते की, राजधर ना थाकले आज आमादेर बिपद हत ।

इन्द्रकुमार : किच्छु विपद हत ना । राजधर सैन्य लुकिये रेखेइ आमादेर बिपदे फेलबार चेष्टा करेछिल । राजधर ना थाकले ए मुकुट आमि युद्ध करे आनतुम । राजधर चुरि करे एनेछे । दादा, ए मुकुट एने आमि तोमाकेइ परातुम, निजे परतुम ना ।

युवराज [**राजधरेर प्रति**] : भाइ, तुमिइ आज जितेछ । तुमि ना थाकले अल्प सैन्य निये आमादेर की बिपद हत बला याय ना ।

ए मुकुट आमि तोमाकेइ परिये दिच्छि।

इन्द्रकुमार [रुद्धकण्ठे] : राजधर क्षात्रधर्म लङ्घन करेछे बले तोमार काछ थेके आज पुरस्कार पेले आर आमि ये प्राणके तुच्छ करे बिपदेर मुखे दाँड़िये युद्ध करलुम, तोमार मुख थेके एकटा प्रशंसार कथाओ शुनते पेलुम ना। एमन कथा तोमार मुख थेके आज शुनते हल ये, राजधर ना थाकले केउ तोमाके बिपद हते उद्धार करते पारत ना। केन दादा, आमि कि प्रत्युष थेके आर सन्ध्या पर्यन्त तोमार चोखेर सामने दाँड़िये लड़ाइ करि नि। आमि कि रणक्षेत्र छेड़े पालियेछिलुम। आमि कि शत्रुसैन्येर वेष्टन छिन्न करे तोमार साहाय्येर जन्ये आसि नि। की देखे तुमि बलले, तोमार स्नेहेर राजधर छाड़ा केउ तोमाके बिपद थेके उद्धार करते पारत ना!

युवराज : भाइ, आमि निजेर बिपदेर कथा बलछि ने।

इन्द्रकुमार : थाक् दादा, थाक्। आर किछुइ बलते हबे ना। राजधरेर मतो एमन असाधारण वीरके यखन तुमि सहाय पेयेछ तखन आमार आर प्रयोजन नेइ—आमि चललेम।

युवराज : भाइ, आबार! आबार तुमि आत्मबिस्मृत हच्छ!

इन्द्रकुमार : येखाने आमार प्रयोजन नेइ सेखाने आमार पक्षे थाकाइ अपमान। **[प्रस्थान]**

इशा खाँ : युवराज, ए मुकुट तोमार काउके देबार अधिकार नेइ। आमि सेनापति, आमि याके देब ए तारइ हबे। **[राजधरेर माथा हइते मुकुट लइया युवराजके पराइया दिते उद्यत हइलेन।]**

युवराज [सरिया गिया] : ना, ए मुकुट आमि निते पारि ने।

इशा खाँ : तबे थाक्। ए मुकुट केउ पाबे ना। ए कर्णफुलिर जले याक। **[मुकुट निक्षेप]** राजधर युद्धेर नियम लङ्घन करेछेन, उनि शास्तिर योग्य।

राजधर : दादा, तुमि साक्षी रइले। ए आमि भुलब ना।

चतुर्थ दृश्य

शिविर

राजधर श्रो धुरन्धर

राजधर : धुरन्धर, आमार मुकुट येखाने गियेछे आमादेर युद्धजयकेओ सेइ कर्णफुलिर जले जलाञ्जलि देब ।

धुरन्धर : आबार हारबे नाकि ।

राजधर : हाँ, एबार हेरे जितब । इन्द्रकुमारेर अहङ्कारके धुलोय ना लुटिये दिये आमि फिरब ना। आमार हातेर जितके तिनि ग्रहण करबेन ना । देखि, एबार निजे तिनि केमन जितते पारेन ।

धुरन्धर : अत बेशि निश्चिन्त होयो ना—दैवात् जिते येतेओ पारे । सत्यि कथाय राग करले चलबे ना, युद्धविद्याटा इन्द्रकुमार एकटु शिखेछे ।

राजधर : आच्छा, सेसब तर्क परे हबे । एखन तोमाके एकटि काज करते हबे । आराकानराज सैन्य निये कालप्रातेइ यात्रा करबेन । कथा आछे, यतदिन ना तिनि चट्टग्रामेर सीमाना पेरिये याबेन ततदिन ताँर सेनापतिरा आमार शिविरे बन्दी थाकबेन । तिनि शिविर तोलबार पूर्वेइ आज रात्रे गोपने ताँर काछे तुमि आमार एइ चिठिखानि निये याबे ।

धुरन्धर : चिठिते कि आछे सेटा तो आमार जाना भालो । केनना, यदि दुटो-एकटा कथा बलबार दरकार हय ता हले ब'ले काजटा चुकिये आसते पारब ।

राजधर : आमि लिखेछि—आमि अपमानित हयेछि, एइजन्य आमार भाइदेर काछ थेके आमि अवसर निलुम । आमार पाँच हाजार सैन्य निये आमि गृहे फेरबार छले दूरे चले याब । इन्द्रकुमारओ दादार उपर अभिमान करे चले गेछे । सैन्येराओ युद्ध शेष हये गेछे जेने फेरबार जन्ये प्रस्तुत हच्छे—एइ अवकाशे यदि आरा-

कानराज सहसा आक्रमण करेन ता हले त्रिपुरार सैन्यदेर निश्चय हार हबे ।

तृतीय अङ्क

प्रथम दृश्य

रणक्षेत्र

इन्द्रकुमार ओ सैनिक

इन्द्रकुमार : कोथाय—कोथाय—कोथाय । ओरे, दादा कोथाय ।

सैनिक : ताँकेइ तो खुँजछि, प्रभु ।

इन्द्रकुमार : आर, इशा खाँ ?

सैनिक : आज बेला चार प्रहरेर समय युवराज स्वहस्ते इशा खाँर कबरे माटि दियेछेन—सेइ माटिते ताँर निजेरओ रक्त तखन मिशछिल ।

इन्द्रकुमार : धिक् धिक् धिक्, इन्द्रकुमार । धिक् तोके । धिक् तोर चण्डाल रागके ! दादा ! दादा ! एइ नराधमके एक बार माप चाइतेओ समय देबे ना ? [**उच्चैःस्वरे**] दादा ! साड़ा दाओ ! केवल एक मुहूर्तेर जन्येओ साड़ा दाओ । ओरे, आर केउ नेइ नाकि । ये येखाने आछिस सकले मिले ताँके खोंज्—आज आमार दादाके चाइइ ये । [**द्वितीय सैनिकेर प्रवेश**]

द्वितीय : एइ दिके चलुन, कुमार । ताँर देखा पेयेछि ।

इन्द्रकुमार : कोथाय । कोथाय ।

द्वितीय : कर्णफुलिर तीरे अर्जुनगाछेर तलाय ।

इन्द्रकुमार : सत्य करे बल् तिनि कि—

द्वितीय : तिनि बेंचे आछेन—तोमार जन्यइ अपेक्षा करे रयेछेन ।

द्वितीय दृश्य

कर्णफुलिर तीर। तरुतले ज्योत्स्नार क्षीणालोके

युवराज : ओरे, सरिये दे रे, एकटु सरिये दे! गाछेर डालगुलो एकटु सरिये दे, आज आकाशेर चाँदके एकटु देखे निइ। केउ नेइ। ए कि गाछेरइ छाया, ना आमार चोखेर उपरे छाया पड़े आसछे। एखनओ कर्णफुलिर स्रोतेर शब्द तो शुनते पाच्छि। एइ शब्दटितेइ कि पृथिवीर शेष विदायसम्भाषण शुनब। इन्द्रकुमार! भाइ इन्द्रकुमार! एखनओ तोमार राग गेल ना!

[**इन्द्रकुमारेर प्रवेश**]

इन्द्रकुमार : दादा! दादा!

युवराज : आः, बाँचलुम, भाइ। तुमि आसबे जेनेइ एत देरि क'रेइ बेंचेछिलुम। तुमि अभिमान करे गियेछिले बलेइ आमि येते पाच्छिलुम ना। किन्तु अनेक रात हये गेछे भाइ, एबार तबे घुमोइ—मा कोल पेतेछेन।

इन्द्रकुमार : दादा, मार्जना करले कि!

युवराज : समस्तइ, समस्तइ! एखानकार या-किछु छिल एइ रक्त दिये मार्जना करे गेलुम। किछुइ बाकि राखि नि। केवल एकटि दुःख रइल, महाराजेर काछे खबर पाठाते हबे, आमार पराजय हयेछे।

इन्द्रकुमार : पराजय तोमार हय नि दादा—आमारइ पराजय हयेछे।

[**सैनिकेर प्रवेश**]

सैनिक : कुमार राजधर युवराजेर पदधूलि नेबार जन्ये प्रार्थना जानिये पाठियेछेन।

इन्द्रकुमार : कखनओ ना। किछुतेइ ना।

युवराज : डाको, डाको, ताके डाको।

इन्द्रकुमार [रागिया] : दादा, राजधरके—

युवराज : आबार, भाइ! आबार!

इन्द्रकुमार : ना, ना, ना, आर नय। आमार आर राग नेइ।

[**राजधरेर प्रवेश ओ प्रणाम**]

राजधर : आमि नराधम। ए मुकुट तोमार पाये राखलुम। ए तोमारइ।

युवराज : आमार समय नेइ! इन्द्रकुमार के दाओ, भाइ।

राजधर : दादार आदेश माथाय करलेम। ए मुकुट तुमि नाओ।

इन्द्रकुमार : आमि पराजित—ए मुकुट आमार नय। ए आमि तोमाकेइ परिये दिलुम।—दादा!

प्रार्थना

चित्त येथा भयशून्य, उच्च येथा शिर,
ज्ञान येथा मुक्त, येथा गृहेर प्राचीर
आपन प्राङ्गणतले दिवसशर्वरी
वसुधारे राखे नाइ खण्ड क्षुद्र करि,
येथा वाक्य हृदयेर उतसमुख हते
उच्छ्वसिया उठे, येथा निर्वारित स्रोते
देशे देशे दिशे दिशे कर्मधारा धाय
अजस्र सहस्रविध चरितार्थताय—

येथा तुच्छ आचारेर मरुबालुराशि
विचारेर स्रोतःपथ फेले नाइ ग्रासि,
पौरुषेरे करे नि शतधा—नित्य येथा
तुमि सर्व कर्म चिन्ता आनन्देर नेता—

निज हस्ते निर्दय आघात करि, पितः,
भारतेरे सेइ स्वर्गे करो जागरित।

तोमार पताका यारे दाओ तारे

तोमार पताका यारे दाओ तारे
बहिबारे दाओ शकति ।
तोमार सेवार महत्प्रयास
सहिबारे दाओ भकति ।

आमि ताइ चाइ भरिया परान
दुःखेरइ साथे दुःखेर त्राण,
तोमार हातेर वेदनार दान
एड़ाये चाहि ना मुकति
दुख हबे मोर माथार मानिक
साथे यदि दाओ भकति ।

यदि दिते चाओ काज दियो, यदि
तोमारे ना दाओ भुलिते—
अन्तर यदि जड़ाते ना दाओ
जालजञ्जालगुलिते ।

बाँधियो आमाय यत खुशि डोरे,
मुक्त राखियो तोमा-पाने मोरे,
धुलाय राखियो पवित्र क'रे
तोमार चरणधुलिते ।
भुलाये राखियो संसारतले
तोमारे दियो ना भुलिते ।

ये पथे घुरिते दियेछ घुरिब,
याइ येन तव चरणे ।
सब श्रम येन बहि लय मोरे
सकल-श्रान्ति-हरणे ।

दुर्गमपथ ए भवगहन,
कत त्याग शोक विरहदहन,
जीवने मरण करिया वहन
प्राण पाइ येन मरणे ।
सन्ध्यावेलाय लभि गो कुलाय
निखिलशरण चरणे ।

राजर्षि

गुजुरपाड़ा ब्रह्मपुत्रेर तीरे क्षुद्र ग्राम। एकजन क्षुद्र जमिदार आछेन, नाम पीताम्बर राय—बासिन्दा अधिक नाइ। पीताम्बर आपनार पुरातन चण्डीमण्डपे बसिया आपनाके राजा बलिया थाकेन। ताँहार प्रजाराओ ताँहाके राजा बलिया थाकेन। ताँहार राजमहिमा एइ आम्र-पियाल-वन-वेष्टित क्षुद्र ग्रामटुकुर मध्येइ विराजमान। ताँहार यश एइ ग्रामेर निकुञ्जगुलिर मध्ये ध्वनित हइया एइ ग्रामेरइ सीमानार मध्येइ विलीन हइया याय। जगतेर बड़ो बड़ो राजाधिराजेर प्रखर प्रताप एइ छायामय नीड़ेर मध्ये प्रवेश करिते पाय ना। केवल तीर्थस्नानेर उद्देशे नदीतीरे त्रिपुरार राजादेर एक बृहत् प्रासाद आछे, किन्तु अनेक काल हइते राजारा केह स्नाने आसेन नाइ, सुतरां त्रिपुरार राजार सम्बन्धे ग्रामवासीदेर मध्ये एकटा अस्पष्ट जनश्रुति प्रचलित आछे मात्र।

एकदिन भाद्रमासेर दिने संवाद आसिल, त्रिपुरार एक राजकुमार नदीतीरेर पुरातन प्रासादे वास करिते आसितेछेन। किछु दिन परे विस्तर पागड़िबाँधा लोक आसिया प्रासादे भारि धुम लागाइया दिल। ताहार प्राय एक सप्ताह परे हाति-घोड़ा लोक-लस्कर लइया स्वयं नक्षत्रराय गुजुरपाड़ा ग्रामे आसिया उपस्थित हइलेन। समारोह देखिया ग्रामवासीदेर मुखे रा सरिल ना। पीताम्बरके एतदिन भारि राजा बलिया मने हइत, किन्तु आज आर ताहा काहारओ मने हइल ना—नक्षत्ररायके देखिया सकलेइ एकवाक्ये बलिल, "हाँ, राजपुत्र एइ रकमइ हय बटे।"

एइरूपे पीताम्बर ताँहार पाका दालान ओ चण्डीमण्डप-सुद्ध

एकेबारे लुप्त हइया गेलेन बटे, किन्तु ताँहार आनन्देर आर सीमा रहिल ना। नक्षत्ररायके तिनि एमनि राजा बलिया अनुभव करिलेन ये, निजेर क्षुद्र राजमहिमा नक्षत्ररायेर चरणे सम्पूर्ण विसर्जन दिया तिनि परम सुखी हइलेन। नक्षत्रराय कदाचित् हाति चड़िया बाहिर हइले पीताम्बर आपनार प्रजादेर डाकिया बलितेन, "राजा देखेछिस? ऐ देख, राजा देख्।" माछ-तरकारि आहार्यद्रव्य उपहार लइया पीताम्बर प्रतिदिन नक्षत्ररायके देखिते आसितेन—नक्षत्ररायेर तरुण सुन्दर मुख देखिया पीताम्बरेर स्नेह उच्छ्वसित हइया उठित। नक्षत्र-रायइ ग्रामेर राजा हइया उठिलेन। पीताम्बर प्रजादेर मध्ये गिया भर्ति हइलेन।

प्रतिदिन तिन बेला नहबत बाजिते लागिल, ग्रामेर पथे हाति घोड़ा चलिते लागिल, राजद्वारे मुक्त तरबारिर विद्युत् खेलिते लागिल, हाटबाजार बसिया गेल। पीताम्बर एवं ताँहार प्रजारा पुलकित हइया उठिलेन। नक्षत्रराय एइ निर्वासनेर राजा हइया उठिया समस्त दुःख भुलिलेन। एखाने राजत्वेर भार किछुमात्र नाइ, अथच राजत्वेर सुख सम्पूर्ण आछे। एखाने तिनि सम्पूर्ण स्वाधीन, स्वदेशे ताँहार एत प्रबल प्रताप छिल ना। ताहा छाड़ा एखाने रघुपतिर छाया नाइ। मनेर उल्लासे नक्षत्रराय विलासे मग्न हइलेन। ढाका नगरी हइते नटनटी आसिल, नृत्यगीतवाद्ये नक्षत्र-रायेर तिलेक अरुचि नाइ।

नक्षत्रराय त्रिपुरार राज-अनुष्ठान समस्तइ अवलम्बन करिलेन। भृत्यदेर मध्ये काहारओ नाम राखिलेन मन्त्री, काहारओ नाम राखिलेन सेनापति, पीताम्बर देओयानजि नामे चलित हइलेन। रीतिमत राजदरबारे बसिया नक्षत्रराय परम आड़म्बरे विचार करितेन। नकुड़ आसिया नालिश करिल, "मथुर आमाय 'कुत्तो' कयेछे।" ताहार विधिमत विचार बसिल। विविध प्रमाण-संग्रहेर पर मथुर दोषी साव्यस्त हइले नक्षत्रराय परम गम्भीरभावे विचारासन हइते आदेश करिलेन—नकुड़ मथुरके दुइ कानमला देय। एइरूपे सुखे

समय काटिते लागिल। एक-एकदिन हाते नितान्त काज ना थाकिले सृष्टिछाड़ा एकटा कोनो नूतन आमोद उद्भावनेर जन्य मन्त्रीके तलब पड़ित। मन्त्री राजसभासद्-दिगके समवेत करिया नितान्त उद्विग्न व्याकुल भावे नूतन खेला बाहिर करिते प्रवृत्त हइतेन, गभीर चिन्ता ओ परामर्शेर अवधि थाकित ना। एकदिन सैन्यसामन्त लइया पीताम्बरेर चण्डीमण्डप आक्रमण करा हइयाछिल, एवं ताँहार पुकुर हइते माछ ओ ताँहार बागान हइते डाब ओ पालं शाक लुठेर द्रव्येर स्वरूप अत्यन्त धुम करिया वाद्य बाजाइया प्रासादे आना हइयाछिल। एइरूप खेलाते नक्षत्ररायेर प्रति पीतम्बरेर स्नेह आरओ गाढ़ हइत।

आज प्रासादे बिड़ाल-शावकेर विवाह। नक्षत्ररायेर एकटि शिशु बिड़ाली छिल, ताहार सहित मण्डलदेर बिड़ालेर विवाह हइबे। चुड़ोमणिघटक घटकालिर स्वरूप तिन शत टाका ओ एकटा शाल पाइयाछे। गायेहलुद प्रभृति समस्त उपक्रमणिका हइया गियाछे। आज शुभ लग्ने सन्ध्यार समय विवाह हइबे। ए कयदिन राजबाटीते काहारओ तिलार्ध अवसर नाइ।

सन्ध्यार समय पथघाट आलोकित हइल, नहबत बसिल। मण्डलदेर बाड़ि हइते चतुर्दोलाय चड़िया किंखाबेर वेश परिया पात्र अति कातरस्वरे मिउ-मिउ करिते करिते यात्रा करियाछे। मण्डलदेर बाड़िर छोटो छेलेटि मित-वरेर मतो ताहार गलार दड़िटि धरिया ताहार सङ्गे सङ्गे आसितेछे। उलु-शङ्खध्वनिर मध्ये पात्र सभास्थ हइल।

पुरोहितेर नाम केनाराम, किन्तु नक्षत्रराय ताहार नाम राखिया-छिलेन रघुपति। नक्षत्रराय आसल रघुपतिके भय करितेन, एइ-जन्य नकल रघुपतिके लइया खेला करिया सुखी हइतेन। एमन-कि, कथाय कथाय ताहाके उत्पीड़न करितेन; गरिब केनाराम समस्त नीरवे सह्य करित। आज दैवदुर्विपाके केनाराम सभाय अनु-पस्थित—ताहार छेलेटि ज्वरविकारे मरितेछे।

नक्षत्रराय अधीर स्वरे जिज्ञासा करिलेन, "रघुपति कोथाय ?"

भृत्य बलिल, "ताँहार बाड़िते ब्यामो।"

नक्षत्रराय द्विगुण हाँकिया बलिलेन, "बोलाओ उस्को।"

लोक छुटिल। ततक्षण रोरुद्यमान बिड़ालेर समक्षे नाचगान चलिते लागिल।

नक्षत्रराय बलिलेन, "साहाना गाओ।" साहाना गान आरम्भ हइल।

कियत्क्षण परे भृत्य आसिया निवेदन करिल, "रघुपति आसियाछेन।"

नक्षत्रराय सरोषे बलिलेन, "बोलाओ।"

तत्क्षणात् पुरोहित गृहे प्रवेश करिलेन। पुरोहितके देखियाइ नक्षत्ररायेर भ्रुकुटि कोथाय मिलाइया गेल, ताँहार सम्पूर्ण भावान्तर उपस्थित हइल। ताँहार मुख विवर्ण हइया गेल, कपाले घर्म देखा दिल। साहाना गान सारङ्ग ओ मृदङ्ग सहसा बन्ध हइल, केवल बिड़ालेर मिउ-मिउ ध्वनि निस्तब्ध घरे द्विगुण जागिया उठिल।

ए रघुपतिइ बटे। ताहार आर सन्देह नाइ। दीर्घ, शीर्ण, तेजस्वी, बहुदिनेर क्षुधित कुकुरेर मतो चक्षु दुटो ज्वलितेछे। धुलाय परिपूर्ण दुइ पा तिनि किंखाब-मछलन्देर उपर स्थापन करिया माथा तुलिया दाँड़ाइलेन। बलिलेन, "नक्षत्रराय !"

नक्षत्रराय चुप करिया रहिलेन।

रघुपति बलिलेन, "तुमि रघुपतिके डाकियाछ। आमि आसियाछि।"

नक्षत्रराय अस्पष्ट स्वरे कहिलेन, "ठाकुर—ठाकुर !"

रघुपति कहिलेन, "उठिया एसो।"

नक्षत्रराय धीरे-धीरे सभा हइते उठिया गेलेन। बिड़ालेर बिये साहाना एवं सारङ्ग एकेबारे बन्ध हइल।

रघुपति जिज्ञासा करिलेन, "ए-सब की हइतेछिल ?"

नक्षत्रराय माथा चुलकाइया कहिलेन, "नाच हइतेछिल।"

रघुपति घृणाय कुञ्चित हइया कहिलेन, "छी छि।"

नक्षत्रराय अपराधीर न्याय दाँड़ाइया रहिलेन।

रघुपति कहिलेन, "काल एखान हइते यात्रा करिते हइबे। ताहार उद्योग करो।"

नक्षत्रराय कहिलेन, "कोथाय याइते हइबे ?"

रघुपति : से कथा परे हइबे। आपातत आमार सङ्गे बाहिर हइया पड़ो।

नक्षत्रराय कहिलेन, "आमि एखाने बेश आछि।"

रघुपति : 'बेश आछि' ! तुमि राजवंशे जन्मियाछ, तोमार पूर्बपुरुषेरा सकले राजत्व करिया आसियाछेन। तुमि किना आज एइ बनगाँये शेयाल-राजा हइया बसियाछ आर बलितेछ 'बेश आछि'!

रघुपति तीव्र वाक्ये ओ तीक्ष्ण कटाक्षे प्रमाण करिया दिलेन ये, नक्षत्रराय भालो नाइ। नक्षत्ररायओ रघुपतिर मुखेर तेजे कतकटा सेइ रकमइ बुझिलेन। तिनि बलिलेन, "बेश आर की एमन आछि ! किन्तु आर की करिब ? उपाय की आछे ?"

रघुपति : उपाय ढेर आछे, उपायेर अभाव नाइ। आमि तोमाके उपाय देखाइया दिब—तुमि आमार सङ्गे चलो।

नक्षत्रराय : एकबार देओयानजिके जिज्ञासा करि।

रघुपति : ना।

नक्षत्रराय : आमार एइ-सब जिनिसपत्र—

रघुपति : किछु आवश्यक नाइ।

नक्षत्रराय : लोकजन—

रघुपति : दरकार नाइ।

नक्षत्रराय : आमार हाते एखन यथेष्ट नगद टाका नाइ।

रघुपति : आमार आछे। आर अधिक ओजर आपत्ति करियो ना—आज शयन करिते याओ, काल प्रातःकालेइ यात्रा करिते हइबे।

बलिया रघुपति कोनो उत्तरेर अपेक्षा ना करिया चलिया गेलेन।

ताहार परदिन भोरे नक्षत्रराय उठियाछेन। तखन बन्दीरा

ललित रागिणीते मधुर गान गाहितेछे। नक्षत्रराय बहिर्भवने आसिया जानाला हइते बाहिरे चाहिया देखिलेन। पूर्वतीरे सूर्योदय हइतेछे, अरुणरेखा देखा दियाछे। उभय तीरेर घन तरुस्रोतेर मध्य दिया, छोटो छोटो निद्रित ग्रामगुलिर द्वारेर काछ दिया, ब्रह्मपुत्र ताहार विपुल जलराशि लइया अबाधे बहिया याइतेछे। प्रासादेर जानाला हइते नदी तीरेर एकटि छोटो कुटिर देखा याइतेछे। एकटि मेये प्राङ्गण झाँट दितेछे—एकजन पुरुष ताहार सङ्गे दुइ-एकटा कथा कहिया, माथाय चादर बाँधिया, एकटा बड़ो बाँशेरलाठिर अग्रभागे पुँटुलि बाँधिया, निश्चिन्त मने कोथाय बाहिर हइल। श्यामा ओ दोयेल शिस् दितेछे, बेने-बउ बड़ो काँठाल गाछेर घन पल्लवेर मध्ये बसिया गान गाहितेछे। वातायने दाँडाइया बाहिरेर दिके चाहिया नक्षत्ररायेर हृदय हइते एक गभीर दीर्घनिश्वास उठिल, एमन समये पश्चात् हइते रघुपति आसिया नक्षत्ररायके स्पर्श करिलेन। नक्षत्रराय चमकिया उठिलेन। रघुपति मृदुगम्भीर स्वरे कहिलेन, "यात्रार समस्त प्रस्तुत।"

नक्षत्रराय जोड़हाते अत्यन्त कातर स्वरे कहिलेन, "ठाकुर, आमाके माप करो, ठाकुर—आमि कोथाओ याइते चाहि ना। आमि एखाने बेश आछि।"

रघुपति एकटि कथा ना बलिया नक्षत्ररायेर मुखेर दिके ताँहार अग्निदृष्टि स्थिर राखिलेन। नक्षत्रराय चोख नामाइया कहिलेन, "कोथाय याइते हइबे?"

रघुपति : से कथा एखन हइते पारे ना।

नक्षत्र : दादार विरुद्धे आमि कोनो चक्रांत करिते पारिब ना।

रघुपति : ज्वलिया उठिया कहिलेन, "दादा तोमार की महत उपकारटा करियाछेन शुनि।"

नक्षत्र मुख फिराइया, जानालार उपर आँचड़ काटिया बलिलेन, "आमि जानि, आमाके भालोबासेन।"

रघुपति तीव्र शुष्क हास्येर सहित कहिलेन, "हरि हरि! की

प्रेम ! ताइ बुझि निर्विघ्ने ध्रुवके यौवराज्ये अभिषिक्त करिबार जन्य मिछा छुता करिया दादा तोमाके राज्य हइते ताड़ाइलेन—पाछे राज्येर गुरुभारे ननिर पुतलि स्नेहेर भाइ कखनो व्यथित हइया पड़े। से राज्ये आर कि कखनो सहजे प्रवेश करिते पारिबे ? निर्बोध ?"

नक्षत्रराय ताड़ाताड़ि बलिलेन, "आमि कि एइ सामान्य कथाटा आर बुझि ना ? आमि समस्तइ बुझि—किन्तु आमि की करिब बलो ठाकुर, उपाय की ?"

रघुपति : सेइ उपायेर कथाइ तो हइतेछे। सेइजन्यइ तो आसियाछि। इच्छा हय तो आमार सङ्गे चलिया आइस, नय तो एइ बाँशवनेर मध्ये बसिया बसिया तोमार हिताकांक्षी दादार ध्यान करो। आमि चलिलाम।

बलिया रघुपति प्रस्थानेर उद्योग करिलेन। नक्षत्रराय ताड़ाताड़ि ताँहार पश्चात् पश्चात् गिया कहिलेन, "आमिओ याइब ठाकुर, किन्तु देओयानजि यदि याइते चान ताँहाके आमादेर सङ्गे लइया याइते कि आपत्ति आछे ?"

रघुपति कहिलेन, "आमि छाड़ा आर केह सङ्गे याइबे ना।"

बाड़ि छाड़िया नक्षत्ररायेर पा सरिते चाय ना। एइ-समस्त सुखेर खेला छाड़िया, देओयानजिके छाड़िया, रघुपतिर संगे एकला कोथाय याइते हइबे ! किन्तु रघुपति येन ताँहार केश धरिया टानिया लइया चलिलेन। ताहा छाड़ा नक्षत्ररायेर मने एकप्रकार भयमिश्रित कौतूहलओ जन्मिते लागिल। ताहारओ एकटा भीषण आकर्षण आछे।

नौका प्रस्तुत आछे। नदीतीरे उपस्थित हइया नक्षत्रराय देखिलेन, काँधे गामछा फेलिया पीताम्बर स्नान करिते आसितेछेन। नक्षत्रके देखियाइ पीताम्बर हास्यविकशित मुखे कहिलेन, "जयोस्तु महाराज, शुनिलाम नाकि काल कोथा हइते एक अलक्षमन्त बिटल ब्राह्मण आसिया शुभविवाहेर व्याघात करियाछे !"

नक्षत्रराय अस्थिर हइया पड़िलेन। रघुपति गम्भीर स्वरे कहिलेन, "आमिइ सेइ बिटल ब्राह्मण।"

पीताम्बर हासिया उठिलेन; कहिलेन, "तबे तो आपनार साक्षाते आपनार वर्णना कराटा भालो हय नाइ। जानिले कोन् पितार पुत्र एमन काज करित। किछु मने करिबेन ना ठाकुर, असाक्षाते लोके की ना बले? आमाके याहारा सम्मुखे बले राजा ताहारा आड़ाले बले पितु। मुखेर सामने किछु ना बलिलेइ हइल, आमि तो एइ बुझि। आसल कथा की जानेन, आपनार मुखटा केमन भारि अप्रसन्न देखाइतेछे, काहारओ एमन मुखेर भाव देखिले लोके ताहार नामे निन्दा रटाय।—महाराज, एत प्राते ये नदीतीरे?"

नक्षत्रराय किछु करुण स्वरे कहिलेन, "आमि ये चलिलाम देओयानजि!"

पीताम्बर : चलिलेन? कोथाय? न-पाड़ाय मण्डलदेर बाड़ि?

नक्षत्र : ना देओयानजि, मण्डलदेर बाड़ि नय। अनेक दूर।

पीताम्बर : अनेकदूर! तबे कि पाइकघाटाय शिकारे याइतेछेन?

नक्षत्रराय एकबार रघुपतिर मुखेर दिके चाहिया केवल विषण्णभावे घाड़ नाड़िलेन।

रघुपति कहिलेन, "बेला बहिया याय, नौकाय उठा हउक।"

पीताम्बर अत्यन्त सन्दिग्ध ओ क्रुद्ध भावे ब्राह्मणेर मुखेर दिके चाहिलेन; कहिलेन, "तुमि के हे ठाकुर? आमादेर महाराजके हुकुम करिते आसियाछ!"

नक्षत्र व्यस्त हइया पीताम्बरके एक पाशे टानिया लइया कहिलेन, "उनि आमादेर गुरुठाकुर।"

पीताम्बर बलिया उठिलेन, "होक-ना गुरुठाकुर। उनि आमादेर चण्डीमण्डपे थाकुन, चाल-कला बराद्द करिया दिब, समादरे थाकिबेन—महाराजके उँहार किसेर आवश्यक?"

रघुपति : वृथा समय नष्ट हइतेछे—आमि तबे चलिलाम।

पीताम्बर : ये आज्ञे, विलम्बे फल की, मशाय चट्पट् सरिया पड़ुन। महाराजके लइया आमि प्रासादे याइतेछि।

नक्षत्रराय एकबार रघुपतिर मुखेर दिके चाहिया, एकबार

पीताम्बरेर मुखेर दिके चाहिया, मृदुस्वरे कहिलेन, "ना देश्रोयानजि, श्रामि याइ।"

पीताम्बर : तबे श्रामिश्रो याइ, लोकजन संगे लउन। राजार मतो चलुन। राजा याइबेन, संगे देश्रोयानजि याइबे ना ?

नक्षत्रराय केवल रघुपतिर मुखेर दिके चाहिलेन। रघुपति कहिलेन, "केह संगे याइबे ना।"

पीताम्बर उग्र हइया कहिलेन, "देखो ठाकुर, तुमि—"

नक्षत्रराय ताँहाके ताड़ाताड़ि बाधा दिया बलिलेन, "देश्रोयानजि, श्रामि याइ, देरि हइतेछे।"

पीताम्बर म्लान हइया नक्षत्रेर हात धरिया कहिलेन, "देखो बाबा, श्रामि तोमाके राजा बलि, किन्तु श्रामि तोमाके सन्तानेर मतो भालोबासि—श्रामार सन्तान केह नाइ; तोमार उपर श्रामार जोर खाटे ना। तुमि चलिया याइतेछ, श्रामि जोर करिया धरिया राखिते पारि ना। किन्तु श्रामार एकटि श्रनुरोध एइ श्राछे, येखानेइ याश्रो श्रामि मरिबार श्रागे फिरिया श्रासिते हइबे। श्रामि स्वहस्ते श्रामार राजत्व समस्त तोमार हाते दिया याइब, श्रामार एइ एकटि साध श्राछे।"

नक्षत्रराय श्रो रघुपति नौकाय उठिलेन। नौका दक्षिणमुखे चलिया गेल। पीताम्बर स्नान भुलिया, गामछा काँधे श्रन्यमनस्के बाड़ि फिरिया गेलेन। गुजुरपाड़ा येन शून्य हइया गेल; ताहार श्रामोद-उत्सव समस्त श्रवसान। केवल प्रतिदिन प्रकृतिर नित्य-उत्सव; प्रातेर पाखिर गान, पल्लवेर मर्मरध्वनि श्रो नदीतरंगेर करतालिर विराम नाइ।

भारततीर्थ

हे मोर चित्त, पुण्यतीर्थे जागो रे धीरे—
एइ भारतेर महामानवेर सागरतीरे।

हेथाय दाँड़ाये दु बाहु बाड़ाये नमि नरदेवतारे,
उदार छन्दे परमानन्दे वंदन करि ताँरे।
ध्यानगंभीर एइ-ये भूधर,
नदी-जपमाला-धृत प्रान्तर,
हेथाय नित्य हेरो पवित्र धरित्रीरे
एइ भारतेर महामानवेर सागरतीरे

केह नाहि जाने, कार आह्वाने कत मानुषेर धारा
दुर्वार स्रोते एल कोथा हते, समुद्रे हल हारा।
हेथाय आर्य, हेथा अनार्य, हेथाय द्राविड़ चीन—
शक-हुन-दल पाठान मोगल एक देहे हल लीन।
पश्चिम आजि खुलियाछे द्वार,
सेथा हते सबे आने उपहार
दिबे आर निबे, मिलाबे मिलिबे, याबे ना फिरे—
एइ भारतेर महामानवेर सागरतीरे॥

रणधारा बाहि जयगान गाहि उन्मादकलरवे
भेदि मरुपथ गिरिपर्वत यारा एसेछिल सबे,
तारा मोर माझे सबाइ विराजे, केह नहे नहे दूर,
आमार शोणिते रयेछे ध्वनिते तारि विचित्र सुर॥

हे रुद्रवीणा, बाजो बाजो बाजो,
घृणा करि दूरे आछे यारा आजओ
बन्ध नाशिबे—ताराओ आसिबे दाँड़ाबे घिरे
एइ भारतेर महामानवेर सागरतीरे ।।

हेथा एकदिन विरामविहीन महा-ओंकारध्वनि
हृदयतन्त्रे एकेर मन्त्रे उठेछिल रनरनि
तपस्याबले एकेर अनले बहुरे आहुति दिया
विभेद भुलिल, जागाये तुलिल एकटि विराट हिया ।
सेइ साधनार से आराधनार
यज्ञशलार खोला आजि द्वार
हेथाय सबारे हबे मिलिबारे आनतशिरे
एइ भारतेर महामानवेर सागरतीरे ।।

सेइ होमानले हेरो आजि ज्वले दुखेर रक्तशिखा—
हबे ता सहिते, मर्मे दहिते आछे से भाग्ये लिखा
ए दुखवहन करो मोर मन, शोनो रे एकेर डाक—
यत लाज भय करो करो जय, अपमान दूरे याक
दुःसह व्यथा हये अवसान
जन्म लभिबे की विशाल प्राण—
पोहाय रजनी, जागिछे जननी विपुल नीड़े
एइ भारतेर महामानवेर सागरतीरे ।

एसो हे आर्य, एसो अनार्य, हिन्दु मुसलमान—
एसो एसो आज तुमि इंराज, एसो एसो खृस्टान ।
एसो ब्राह्मण, शुचि करि मन धरो हात सबाकार—
एसो हे पतित, करो अपनीत सब अपमान भार ।

मार अभिषेके एस एस त्वरा,
मङ्गलघट हय नि ये भरा
सबार-परशे-पवित्र करा तीर्थनीरे
आजि भारतेर महामानवेर सागरतीरे।

विपदे मोरे रक्षा करो

विपदे मोरे रक्षा करो
ए नहे मोर प्रार्थना,
विपदे आमि ना येन करि भय।
दुःखतापे व्यथित चिते
नाइ वा दिले सान्त्वना,
दुःखे येन करिते पारि जय।
सहाय मोर ना यदि जुटे
निजेर बल ना येन टुटे,
संसारेते घटिले क्षति
लभिले शुधु वंचना
निजेर मने ना येन मानि क्षय।

आमारे तुमि करिबे त्राण
ए नहे मोर प्रार्थना,
तरिते पारि शकति येन रय।
आमार भार लाघव करि
नाइ वा दिले सान्त्वना,
बहिते पारि एमनि येन हय।
नम्रशिरे सुखेर दिने
तोमारि मुख लइब चिने,
दुखेर राते निखिल धरा
येदिन करे वञ्चना
तोमारे येन ना करि संशाय।

स्वादेशिकता

बाहिर हइते देखिले आमादेर परिवारे अनेक विदेशी प्रथार चलन छिल किन्तु आमादेर परिवारेर हृदयेर मध्ये एकटा स्वदेशाभिमान स्थिर दीप्तते जागितेछिल। स्वदेशेर प्रति पितृदेवेर ये एकटि आन्तरिक श्रद्धा ताँहार जीवनेर सकलप्रकार बिप्लवेर मध्येओ अक्षुण्ण छिल, ताहाइ आमादेर परिवारस्थ सकलेर मध्ये एकटि प्रबलस्वदेशप्रेम सञ्चार करिया राखियाछिल। वस्तुत, से-समयटा स्वदेशप्रेमेर समय नय। तखन शिक्षित लोके देशेर भाषा एवं देशेर भाव उभयकेइ दूरे ठेकाइया राखियाछिलेन। आमादेर बाड़िते दादार ताँहार चिरकाल मातृभाषार चर्चा करिया आसियाछेन। आमार पिताके कोनो नूतन आत्मीय इंराजिते पत्र लिखियाछिलेन, से पत्र लेखकेर निकट तखनइ फिरिया आसियाछिल।

आमादेर बाड़िर साहाय्ये हिन्दुमेला बलिया एकटि मेला सृष्ट हइयाछिल। नवगोपाल मित्र महाशय एइ मेलार कर्मकर्तारूपे नियोजित छिलेन। भारतवर्ष के स्वदेश बलिया भक्तिर सहित उपलब्धिर चेष्टा सेइ प्रथम हय। मेजदादा सेइ समये बिख्यात जातीय संगीत 'मिले सब भारतसन्तान' रचना करियाछिलेन। एइ मेलाय देशेर स्तवगान गीत, देशानुरागेर कविता पठित, देशी शिल्प ब्यायाम प्रभृति प्रदर्शित ओ देशी गुणीलोक पुरस्कृत हइत।

लर्ड कर्जनेर समय दिल्लिदरबार सम्बन्धे एकटा गद्यप्रबन्ध लिखियाछि, लर्ड लिटनेर समय लिखियाछिलाम पद्ये—तखनकार इंरेज गवर्मेण्ट रुसियाकेइ भय करित, किन्तु चोद्द-पनेरो बछर वयसेर बालक कविर लेखनीके भय करित ना। एइजन्य सेइ काव्ये वय-

सोचित उत्तेजना प्रभूत परिमाणे थाका सत्त्वेओ तखनकार प्रधान सेनापति हइते आरम्भ करिया पुलिसेर कर्तृपक्ष पर्यन्त केह किछुमात्र विचलित हइबार लक्षण प्रकाश करेन नाइ। टाइम्स् पत्रेओ कोनो पत्रलेखक एइ बालकेर धृष्टतार प्रति शासनकर्तादिर औदासीन्येर उल्लेख करिया बृटिश राजत्वेर स्थायित्व सम्बन्धे गभीर नैराश्य प्रकाश करिया अत्युष्ण दीर्घनिश्वास परित्याग करेन नाइ। सेटा पड़ियाछिलाम हिन्दुमेलाय गाछेर तलाय दाँड़ाइया। श्रोतादेर मध्ये नवीन सेन महाशय उपस्थित छिलेन। आमार बड़ो वयसे तिनि एकदिन ए कथा आमाके स्मरण कराइया दियाछिलेन।

ज्योतिदादार उद्योगे आमादेर एकटि सभा हइयाछिल, वृद्ध राजनारायणबाबु छिलेन ताहार सभापति। इहा स्वादेशिकेर सभा। कलिकातार एक गलिर मध्ये एक पोड़ो बाड़िते सेइ सभा बसित। सेइ सभार समस्त अनुष्ठान रहस्ये आवृत छिल। वस्तुत, ताहार मध्ये ओइ गोपनीयताटाइ एकमात्र भयंकर छिल। आमादेर व्यवहारे राजार वा प्रजार भयेर विषय किछुइ छिल ना। आमरा मध्याह्ने कोथाय की करिते याइतेछि, ताहा आमादेर आत्मीयराओ जानितेन ना। द्वार आमादेर रुद्ध, घर आमादेर अन्धकार, दीक्षा आमादेर ऋक्‌मन्त्रे, कथा आमादेर चुपिचुपि—इहातेइ सकलेर रोमहर्षण हइत, आर बेशि-किछुर प्रयोजन छिल ना। आमार मतो अर्वाचीनओ एइ सभार सभ्य छिल। सेइ सभाय आमरा एमन एकटि ख्यापामिर तप्त हाओयार मध्ये छिलाम ये, अहरह उत्साहे येन आमरा उड़िया चलिताम। एइ सभाय आमादेर प्रधान काज उत्तेजनार आगुन पोहानो। वीरत्व जिनिसटा कोथाओ-वा सुविधाकर कोथाओ-वा असुविधाकर हइतेओ पारे, किन्तु ओटार प्रति मानुषेर एकटा गभीर श्रद्धा आछे। सेइ श्रद्धाके जागाइया राखिबार जन्य सकल देशेर साहित्येइ प्रचुर आयोजन देखिते पाइ। काजेइ ये-अवस्थाते मानुष थाक्-ना, मनेर मध्ये इहार धाक्का ना लागिया तो निष्कृति नाइ। आमरा सभा करिया, कल्पना करिया, वाक्यालाप करिया,

मान गाहिया, सेइ धाक्काटा सामलाइबार चेष्टा करियाछि। मानुषेर याहा प्रकृतिगत एवं मानुषेर काछे याहा चिर-दिन आदरणीय, ताहार सकलप्रकार रास्ता मारिया, ताहार सकल-प्रकार छिद्र बन्ध करिया दिले एकटा ये विषम विकारेर सृष्टि करा हय से सम्बन्धे कोनो सन्देहइ थाकिते पारे ना। एकटा बृहत् राज्य-व्यबस्थार मध्ये केवल केरानिगिरिर रास्ता खोला राखिले मानव-चरित्रेर विचित्र शक्तिके ताहार स्वाभाविक स्वास्थ्यकर चालनार क्षेत्र देओया हय ना। राज्येर मध्ये वीरधर्मेरओ पथ राखा चाइ, नहिले मानवधर्मके पीड़ा देओया हय। ताहार अभावे केवलइ गुप्त उत्तेजना अन्तःशीला हइया बहिते थाके—सेखाने ताहार गति अत्यन्त अद्भुत एवं परिणाम अभावनीय। आमार विश्वास सेकाले यदि गवर्मेण्टेर सन्दिग्धता अत्यन्त भीषण हइया उठित तबे तखन आमादेर सेइ सभार बालकेरा ये वीरत्वेर प्रहसनमात्र अभिनय करितेछिल, ताहा कठोर ट्राजेडिते परिणत हइते पारित। अभिनय साङ्ग हइया गियाछे, फोर्ट उइलियमेर एकटि इष्टकओ खसे नाइ एवं सेइ पूर्वस्मृतिर आलोचना करिया आज आमरा हासितेछि।

भारतवर्षेर एकटा सर्वजनीन परिच्छद की हइते पारे, ए सभाय ज्योतिदादा ताहार नानाप्रकारेर नमुना उपस्थित करिते आरम्भ करिलेन। धुतिटा कर्मक्षेत्रेर उपयोगी नहे अथच पायजामाटा विजातीय, एइजन्य तिनि एमन एकटा आपोस करिबार चेष्टा करिलेन येटाते धुतिओ क्षुण्ण हइल, पायजामाओ प्रसन्न हइल ना। अर्थात्, तिनि पायजामार उपर एकखण्ड कापड़ पाट करिया एकटा स्वतन्त्र कृत्रिम मालकोँचा जुड़िया दिलेन। सोलार टुपिर सङ्गे पागड़िर सङ्गे मिशाल करिया एमन एकटा पदार्थ तैरि हइल येटाके अत्यन्त उत्साही लोकेओ शिरोभूषण बलिया गण्य करिते पारे ना। एइरूप सर्वजनीन पोशाकेर नमुना सर्वजने ग्रहण करिबार पूर्वेइ एकला निजे व्यवहार करिते पारा ये-से लोकेर साध्य नहे। ज्योतिदादा अम्लानवदने एइ कापड़ परिया मध्याह्नेर प्रखर आलोके गाड़िते गिया उठितेन—

आत्मीय एवं बान्धव, द्वारी एवं सारथि सकलेइ अवाक हइया ताकाइत, तिनि भ्रूक्षेप मात्र करितेन ना। देशेर जन्य अकातरे प्राण दिते पारे एमन वीरपुरुष अनेक थाकिते पारे किन्तु देशेर मङ्गलेर जन्य सर्वजनीन पोशाक परिया गाड़ि करिया कलिकातार रास्ता दिया याइते पारे एमन लोक निश्चयइ विरल।

रविवारे रविवारे ज्योतिदादा दलबल लइया शिकार करिते बाहिर हइतेन। रवाहूत अनाहूत याहारा आमादेर दले आसिया जुटित ताहादेर अधिकांशकेइ आमरा चिनिताम ना। ताहादेर मध्ये छुतार कामार प्रभृति सकल श्रेणीरइ लोक छिल। एइ शिकारे रक्त-पातटाइ सबचेये नगण्य छिल, अन्तत सेरूप घटना आमारतो मने पड़े ना। शिकारेर अन्य समस्त अनुष्ठानइ बेश भरपूर मात्राय छिल—आमरा हत-आहत पशु-पक्षीर अतितुच्छ अभाव किछुमात्र अनुभव करिताम ना। प्रातःकालेइ बाहिर हइताम। बउठाकुरानी राशीकृत लुचि तरकारि प्रस्तुत करिया आमादेर सङ्गे दितेन। ओइ जिनिसटाके शिकार करिया संग्रह करिते हइत ना बलियाइ, एकदिनओ आमादिगके उपवास करिते हय नाइ।

मानिकतलाय पोड़ोबागानेर अभाव नाइ। आमरा ये-कोनो एकटा बागाने ढुकिया पड़िताम। पुकुरेर बाँधानो घाटे बसिया उच्च-नीचनिर्विचारे सकले एकत्र मिलिया लुचिर उपरे पड़िया मुहूर्त्तेर मध्ये केवल पात्रटाके मात्र बाकि राखिताम।

ब्रजबाबुओ आमादेर अहिंस्रक शिकारिदेर मध्ये एकजन प्रधान उत्साही। इनि मेट्रोपलिटन कलेजेर सुपरिण्टेण्डेण्ट एवं किछुकाल आमादेर घरेर शिक्षक छिलेन। इनि एकदिन शिकार हइते फिरिबार पथे एकटा बागाने ढुकियाइ मालीके डाकिया कहिलेन, "ओरे इतिमध्ये मामा कि बागाने आसियाछिलेन।" माली ताँहाके शशव्यस्त हइया प्रणाम करिया कहिल, "आज्ञा ना, बाबु तो आसे नाइ।" ब्रजबाबु कहिलेन, "आच्छा, डाब पाड़िया आन्।" सेदिन लुचिर अन्ते पानीयेर अभाव हय नाइ।

आमादेर दलेर मध्ये एकटि मध्यवित्त जमिदार छिलेन। तिनि निष्ठावान हिन्दु। ताहार गंगार धारे एकटि बागान छिल। सेखाने गिया आमरा सकल सभ्य एकदिन जातिवर्णनिर्विचारे आहार करिलाम। अपराह्णे विषम झड़। सेइ झड़े आमरा गंगार घाटे दाँड़ाइया चीत्कार शब्दे गान जुड़िया दिलाम। राजनारायणबाबुर कण्ठे सातटा सुर ये बेश विशुद्धभावे खेलित ताहा नहे किन्तु तिनिओ गला छाड़िया दिलेन, एवं सूत्रेर चेये भाष्य येमन अनेक बेशी हय तेमनि ताँहार उत्साहेर तुमुल हातनाड़ा ताँर क्षीण कण्ठके बहुदूरे छाड़ाइया गेल; तालेर झोंके माथा नाड़िते लागिलेन एवं ताँहार पाका दाड़िर मध्ये झड़ेर हाओया मातामाति करिते लागिल। अनेक रात्रे गाड़ि करिया बाड़ि फिरिलाम। तखन झड़बादल थामिया तारा फुटियाछे। अन्धकार निबिड़, आकाश निस्तब्ध, पाड़ागाँयेर पथ निर्जन, केवल दुइधारेर वनश्रेणीर मध्ये दले दले जोनाकि येन निःशब्दे मुठा मुठा आगुनेर हरिर लुठ छड़ाइतेछे।

स्वदेशे दियाशालाइ प्रभृतिर कारखाना स्थापन करा आमादेर सभार उद्देश्येर मध्ये एकटि छिल। एजन्य सभ्येरा ताँहादेर आयेर दशमांश एइ सभाय दान करितेन। देशालाइ तैरि करिते हइबे, ताहार काठि पाओया शक्त। सकलेइ जानेन, आमादेर देशे उपयुक्त हाते खेङ्‌राकाठिर मध्य दिया सस्ताय प्रचुरपरिमाणे तेज प्रकाश पाय किन्तु से-तेजे याहा ज्वले ताहा देशालाइ नहे। अनेक परीक्षार पर बाक्सकयेक देशालाइ तैरि हइल। भारतसन्तानदेर उत्साहेर निदर्शन बलियाइ ये ताहारा मूल्यवान ताहा नहे—आमादेर एक बाक्से ये-खरच पड़िते लागिल ताहाते एकटा पल्लीर सम्वत्सरेर चुला-धरानो चलित। आरओ एकटु सामान्य असुविधा एइ हइयाछिल ये, निकटे अग्निशिखा ना थाकिले ताहादिगके ज्वालाइया तोला सहज छिल ना। देशेर प्रति ज्वलन्त अनुराग यदि ताहादेर ज्वलनशीलता बाड़ाइते पारित, तबे आज पर्यन्त ताहारा बाजारे चलित।

खबर पाओया गेल, एकटि कोनो अल्पवयस्क छात्र कापड़ेर

कल तैरि करिबार चेष्टाय प्रवृत्त; गेलाम ताहार कल देखिते। सेटा कोनो काजेर जिनिस हइतेछे कि ना ताहा किछुमात्र बुझिबार शक्ति आमादेर काहारओ छिल ना, किन्तु विश्वास करिबार ओ आशा करिबार शक्तिते आमरा काहारो चेये खाटो छिलाम ना। यन्त्र तैरि करिते किछु देना हइया छिल, आमरा ताहा शोध करिया दिलाम। अवशेषे एक दिन देखि ब्रजबाबु माथाय एकखाना गामछा बाँधिया जोड़ासाँकोर बाड़िते आसिया उपस्थित। कहिलेन, "आमादेर कले एइ गामछार टुकरा तैरि हइयाछे।" बलिया दुइ हात तुलिया ताण्डव नृत्य!—तखन ब्रजबाबुर माथार चुले पाक धरियाछे।

अवशेषे दुटि-एकटि सुबुद्धि लोक आसिया आमादेर दले भिड़िलेन, आमादिगके ज्ञानबृक्षेर फल खाओयाइलेन एवं एइ स्वर्ग-लोक भाङिया गेल।

छेलेबेलाय राजनारायणबाबुर सङ्गे यखन आमादेर परिचय छिल तखन सकल दिक हइते ताँहाके बुझिबार शक्ति आमादेर छिल ना। ताँहार मध्ये नाना वैपरीत्येर समावेश घटियाछिल। तखनइ ताँहार चुलदाड़ि प्राय सम्पूर्ण पाकियाछे किन्तु आमादेर दलेर मध्ये वयसे सकलेर चेये ये-व्यक्ति छोटो ताहार सङ्गेओ ताँहार वयसेर कोनो अनैक्य छिल ना। ताँहार बाहिरेर प्रवीणता शुभ्र मोड़कटिर मतो हइया ताँहार अन्तरेर नवीनताके चिरदिन ताजा करिया राखिया दियाछिल। एमन-कि प्रचुर पाण्डित्येओ ताँहार कोनो क्षति करिते पारे नाइ, तिनि एकेबारेइ सहज मानुषटिर मतोइ छिलेन। जीवनेर शेष पर्यन्त अजस्र हास्योच्छ्वास कोनो बाधाइ मानिल ना—ना वयसेर गाम्भीर्य, ना अस्वास्थ्य, ना संसारेर दुःखकष्ट, न मेधया न बहुना श्रुतेन, किछुतेइ ताँहार हासिर वेगके ठेकाइया राखिते पारे नाइ। एकदिके तिनि आपनार जीवन एवं संसारटिके ईश्वरेर काछे सम्पूर्ण निवेदन करिया दियाछिलेन, आर-एकदिके देशेर उन्नतिसाधन करिबार जन्य तिनि सर्वदाइ कतरकम साध्य ओ असाध्य प्ल्यान करितेन ताहार आर अन्त नाइ। रिचार्डसनेर तिनि प्रिय छात्र,

इंरेजि विद्यातेइ बाल्यकाल हइते तिनि मानुष किन्तु तबु अनभ्यासेर समस्त बाधा ठेलिया फेलिया बांलाभाषा ओ साहित्येर मध्ये पूर्ण उत्साह ओ श्रद्धार वेगे तिनि प्रवेश करियाछिलेन। एदिके तिनि माटिर मानुष किन्तु तेजे एकेबारे परिपूर्ण छिलेन। देशेर प्रति ताँहार ये प्रबल अनुराग से ताँहार सेइ तेजेर जिनिस। देशेर समस्त खर्बता दीनता अपमानके तिनि दग्ध करिया फेलिते चाहितेन। ताँहार दुइ चक्षु ज्वलिते थाकित, ताँहार हृदय दीप्त हइया उठित, उत्साहेर सङ्गे हात नाड़िया आमादेर सङ्गे मिलिया तिनि गान धरितेन—गलाय सुर लागुक आर ना लागुक से तिनि खेयालइ करितेन ना—

एक सूत्रे बाँधियाछि सहस्रटि मन,
एक कार्ये सँपियाछि सहस्र जीवन।

एइ भगवद्भक्त चिरबालकटिर तेजःप्रदीप्त हास्यमधुर जीवन, रोगे शोके अपरिम्लान ताँहार पवित्र नवीनता, आमादेर देशेर स्मृति-भाण्डारे समादरेर सहित रक्षा करिबार सामग्री ताहाते सन्देह नाइ।

कत अजानारे जानाइले तुमि

कत अजानारे जानाइले तुमि, कत घरे दिले ठाँइ—
दूरके करिले निकट, बन्धु, परके करिले भाइ।
पुरानो आवास छेड़े याइ यबे मने भेबे मरि की जानि की हबे—
नूतनेर माझे तुमि पुरातन से कथा ये भुले याइ।

जीवने मरणे निखिल भुवने यखनि येखाने लबे,
चिरजनमेर परिचित ओहे तुमिइ चिनाबे सबे।
तोमारे जानिले नाहि केह पर, नाहि कोनो माना, नाहि कोनो डर—
सबारे मिलाये तुमि जागितेछ देखा येन सदा पाइ।

प्रवासी

सब ठाँइ मोर घर आछे, आमि
सेइ घर मरि खुँजिया ।
देशे देशे मोर देश आछे, आमि
सेइ देश लब युझिया ।
परवासी आमि ये दुयारे चाइ—
तारि माझे मोर आछे येन ठाँइ,
कोथा दिया सेथा प्रवेशिते पाइ
सन्धान लब बुझिया ।
घरे घरे आछे परमात्मीय
तारे आमि फिरि खुँजिया ।

रहिया रहिया नव वसन्ते
फुलसुगन्ध गगने
केँदे फेरे हिया मिलनविहीन
मिलनेर शुभ लगने ।
आपनार यारा आछे चारि भिते
पारि नि तादेर आपन करिते,
तारि निशिदिशि जगाइछे चिते
विरहवेदना सघने ।
पाशे आछे यारा तादेरि हाराये
फिरे प्राण सारा गगने ।

तृणे-पुलकित ये माटिर धरा
लुटाय आमार सामने

से ग्रामाय डाके एमन करिया
केन ये, कब ता केमने !
मने हय येन से धुलिर तले
युगे युगे ग्रामि छिनु तृणे जले,
से दुयार खुलि कबे कोन् छले
बाहिर हयेछि भ्रमणे ।
सेइ मूक माटि मोर मुख चेये
लुटाय ग्रामार सामने ।

निशार ग्राकाश केमन करिया
ताकाय आमार पाने से !
लक्ष योजन दूरेर तारका
मोर नाम येन जाने से ।
ये भाषाय तारा करे कानाकानि
साध्य की ग्रार मने ताहा ग्रानि—
चिरदिवसेर भुले-याग्रोया वाणी
कोन् कथा मने ग्राने से !
ग्रनादि उषार बन्धु ग्रामार
ताकाय ग्रामार पाने से ।

ए सात-महला भवने ग्रामार
चिरजनमरे भिटाते
स्थले जले ग्रामि हाजार बाँधने
बाँधा ये गिँठाते गिँठाते ।
तबु हाय भुले याइ बारे बारे,
दूरे एसे घर चाइ बाँधिबारे,
ग्रापनार बाँधा घरेते कि पारे
घरेर वासना मिटाते !

प्रवासीर वेशे केन फिरि हाय
चिर-जनमेर भिटाते !

यदि चिनि, यदि जानिबारे पाइ,
धुलारेओ मानि आपना—
छोटो बड़ो हीन सबार माझारे
करि चित्तेर स्थापना ।
हइ यदि माटि, हइ यदि जल,
हइ यदि तृण, हइ फुलफल,
जीवसाथे यदि फिरि धरातल
किछुतेइ नाइ भावना—
येथा याब सेथा असीम बाँधने
अन्तविहीन आपना ।

विशाल विश्वे चारि दिक हते
प्रति कणा मोरे टानिछे ।
आमार दुयारे निखिल जगत्
शतकोटि कर हानिछे ।
ओरे माटि, तुइ आमारे कि चास ?
मोर तरे जल दु हात बाड़ास ?
निश्वासे बुके पशिया वातास
चिर-आह्वान आनिछे ।
पर भाबि यारे तारा बारे बारे
सबाइ आमारे टानिछे ।

आछे आछे प्रेम धुलाय धुलाय,
आनन्द आछे निखिले ।
मिथ्याय घेरे छोटो कणाटिरे
तुच्छ करिया देखिले ।

जगतेर यत अणु रेणु सब
आपनार माझे अचल नीरव
बहिछे एकटि चिरगौरव—
ए कथा ना यदि शिखिले
जीवने मरणे भये भये तबे
प्रवासी फिरिबे निखिले।

धुला-साथे आमि धुला हये रब
से गौरवेर चरणे।
फुल-माझे आमि हब फुलदल
ताँर पूजारतिवरणे।
येथा याइ आर येथाय चाहि रे
तिल ठाँइ नाइ ताँहार बाहिरे,
प्रवास कोथाओ नाहि रे नाहि रे
जनमे जनमे मरणे।
याहा हइ आमि ताइ हये रब
से गौरवेर चरणे।

धन्य रे आमि अनन्त काल,
धन्य आमार धरणी।
धन्य ए माटि, धन्य सुदूर
तारका हिरणवरणी।
येथा आछि आमि आछि ताँरि द्वारे,
नाहि जानि त्राण केन बल कारे।
आछे ताँरि पारे ताँरि पारावारे
विपुल भुवनतरणी।
या हयेछि आमि धन्य हयेछि,
धन्य ए मोर धरणी।

यदि तोर डाक शुने केउ न आसे

यदि तोर डाक शुने केउ ना आसे तबे एकला चलो रे ।
एकला चलो, एकला चलो, एकला चलो रे ॥
यदि केउ कथा न कय, ओरे ओरे ओ अभागा,
यदि सबाइ थाके मुख फिराये, सबाइ करे भय—
तबे परान खुले
ओ तुइ मुख फुटे तोर मनेर कथा एकला बलो रे ॥
यदि सबाइ फिरे याय, ओरे ओरे ओ अभागा,
यदि गहन पथे याबार काले केउ फिरे ना चाय—
तबे पथेर काँटा
ओ तुइ रक्तमाखा चरणतले एकला दलो रे ॥
यदि आलो ना धरे, ओरे ओरे ओ अभागा,
यदि झड़बादले आँधार राते दुयार देय घरे—
तबे वज्रानले
आपन बुकेर पाँजर ज्वालिये निये एकला ज्वलो रे ॥

ऐखाने मा पुकुरपाड़े

ऐखाने मा पुकुर-पाड़े
जियल गाछेर बेड़ार धारे
होथाय हब वनवासी
केउ कोत्थाओ नेइ।
ऐखाने झाउतला जुड़े
बाँधब तोमार छोट्ट कुँड़े
शुक्नो पाता बिछिये घरे
थाकब दुजनेइ।
बाघ भाल्लुक अनेक आछे—
आसबे ना केउ तोमार काछे,
दिन रात्तिर कोमर बेँधे
थाकब पाहाराते।
राक्षसेरा झोपे-झाड़े
मारबे उँकि आड़े आड़े,
देखबे आमि दाँड़िये आछि
धनुक निये हाते।
आँचलेते खइ निये तुइ
येइ दाँड़ाबि द्वारे
अमनि यत वनेर हरिण
आसबे सारे सारे।
शिंगुलि सब आँका-बाँका
गायेते दाग चाका चाका

लुटिये तारा पड़बे भुँये
पायेर काछे एसे।
ओरा सबाइ आमाय बोझे,
करबे ना भय एकटुओ ये,
हात बुलिये देब गाये,
बसबे काछे घेँषे।
फलसाबने गाछे गाछे
फूल ध'रे मेघ घनिये आछे,
ऐखानेते मयूर एसे
नाच देखिये याबे।
शलिखरा सब मिछिमिछि
लागिये देबे किचिमिचि,
काठबेड़ालि लेजटि तुले
हात थेके धान खाबे।

अनधिकार प्रवेश

एकदा प्रात:काले पथेर धारे दाँड़ाइया एक बालक आर-एक बालकेर सहित एकटि असमसाहसिक अनुष्ठान सम्बन्धे बाजि राखियाछिल। ठाकुरबाड़िर माधवीवितान हइते फुल तुलिया आनिते पारिबे कि ना, इहाइ लइया तर्क। एकटि बालक बलिल 'पारिब', आर-एकटि बालक बलिल "कखनोइ पारिबे ना"।

काजटि शुनिते सहज अथच करिते केन सहज नहे ताहार वृत्तान्त आर-एकटु विस्तारित करिया बला आवश्यक।

परलोकगत माधवचन्द्र तर्कवाचस्पतिर विधवा स्त्री जयकाली देवी एइ राधानाथ जीउर मन्दिरेर अधिकारिणी।

जयकाली दीर्घाकार दृढ़शरीर तीक्ष्णनासा प्रखरबुद्धि स्त्री-लोक। ताँहार स्वामीर वर्तमाने ताँहादेर देवोत्तर सम्पत्ति नष्ट हइ-बार जो हइयाछिल। विधवा ताहार समस्त बाकिबकेया आदाय, सीमासरहद्द स्थिर एवं बहुकालेर बेदखल उद्धार करिया समस्त परिष्कार करियाछिलेन। ताँहार प्राप्य हइते केह ताँहाके एक कड़ि वञ्चित करिते पारित ना।

एइ स्त्रीलोकटिर प्रकृतिर मध्ये बहुलपरिमाणे पौरुषेर अंश थाकाते ताँहार यथार्थ संगी केह छिल ना। स्त्रीलोकेरा ताँहाके भय करित। परनिन्दा, छोटो कथा वा नाकि-कान्ना ताँहार असह्य छिल। पुरुषेराओ ताँहाके भय करित; कारण, पल्लीवासी भद्रपुरुषदेर चण्डीमण्डपगत अगाध आलस्यके तिनि एकप्रकार नीरव घृणापूर्ण तीक्ष्ण कटाक्षेर द्वारा धिक्कार करिया याइते पारितेन याहा ताँहादेर स्थूल जड़त्व भेद करियाओ अन्तरे प्रवेश करित।

प्रबलरूपे घृणा करिबार एवं से घृणा प्रबलरूपे प्रकाश करिबार असाधारण क्षमता एइ प्रौढ़ा विधवाटिर छिल। विचारे याहाके अपराधी करितेन ताहाके तिनि कथाय एवं बिना कथाय, भावे एवं भंगीते दग्ध करिया याइते पारितेन।

पल्लीर समस्त क्रियाकर्मे विपदे-सम्पदे ताँहार निरलस हस्त छिल। सर्वत्रइ तिनि निजेर एकटि गौरवेर स्थान बिना चेष्टाय अति सहजेइ अधिकार करिया लइतेन। येखाने तिनि उपस्थित थाकितेन सेखाने तिनिइ ये सकलेर प्रधान-पदे, से सम्बन्धे ताँहार निजेर अथवा उपस्थित कोनो व्यक्तिर मने किछुमात्र सन्देह थाकित ना।

रोगीर सेवाय तिनि सिद्धहस्त छिलेन, किन्तु रोगी ताँहाके यमेर मतो भय करित। पथ्य वा नियमेर लेशमात्र लङ्घन हइले ताँहार क्रोधानल रोगेर ताप अपेक्षा रोगीके अधिक उत्तप्त करिया तुलित।

एइ दीर्घाकार कठिन विधवाटि विधातार कठोर नियम-दण्डेर न्याय पल्लीर मस्तकेर उपर उद्यत छिलेन; केह ताँहाके भाल-बासिते अथवा अवहेला करिते साहस करित ना। पल्लीर सकलेर संगेइ ताँहार योग छिल अथच ताँहार मत अत्यन्त एकाकिनी केह छिल ना।

विधवा निःसन्तान छिलेन। पितृमातृहीन दुइटि भ्रातुष्पुत्र ताँहार गृहे मानुष हइत। पुरुष-अभिभावक-अभावे ताहादेर ये कोनो-प्रकार शासन छिल ना एवं स्नेहान्ध पिसिमार आदरे ताहारा ये नष्ट हइया याइतेछिल एमन कथा केह बलिते पारित ना। ताहादेर मध्ये बड़ोटिर वयस आठारो हइयाछिल। माझे माझे ताहार विवा-हेर प्रस्तावओ आसित एवं परिणय-बन्धन सम्बन्धे बालकटिर चित्तओ उदासीन छिल ना। किन्तु पिसिमा ताहार सेइ सुखवासनाय एक दिनेर जन्यओ प्रश्रय देन नाइ। तिनि कठिन भावे बलितेन, पुलिन आगे उपार्जन करिते आरम्भ करुक, तार परे बधु घरे आनिबे। पिसिमार मुखेर सेइ कठोर वाक्ये प्रतिवेशिनीदेर हृदय विदीर्ण हइया याइत।

ठाकुरबाड़िटि जयकालीर सर्वापेक्षा यत्नेर धन छिल। ठाकुरेर शयन वसन स्नानाहारेर तिलमात्र त्रुटि हइते पारित ना। पूजक ब्राह्मण दुटि देवतार अपेक्षा एइ एकटि मानवीके अनेक बेशि भय करित। पूर्वे एक समय छिल यखन देवतार बराद्द देवता पुरा पाइतेन ना। कारण, पूजक ठाकुरेर आर-एकटि पूजार प्रतिमा गोपन मन्दिरे छिल; ताहार नाम छिल निस्तारिणी। गोपने घृत दुग्ध छाना मयदार नैवेद्य स्वर्गे नरके भागाभागि हइया याइत। किन्तु आजकाल जयकालीर शासने पूजार षोलो आना अंशइ ठाकुरेर भोगे आसितेछे।

विधवार यत्ने ठाकुरबाड़िर प्राङ्गणटि परिष्कार तक्तक् करितेछे—कोथाओ एकटि तृणमात्र नाइ। एक पार्श्वे मञ्च अवलम्बन करिया माधवीलता उठियाछे, ताहार शुष्क पत्र पड़िबा-मात्र जयकाली ताहा तुलिया लइया बाहिरे फेलिया देन। ठाकुर-बाड़िते पारिपाट्य परिच्छन्नता ओ पवित्रतार किछुमात्र व्याघात हइले विधवा ताहा सह्य करिते पारितेन ना। पाड़ार छेलेरा पूर्वे लुकाचुरि खेला उपलक्ष्ये एइ प्राङ्गणेर प्रान्ते आसिया आश्रय ग्रहण करित एवं मध्ये मध्ये पाड़ार छागशिशु आसिया माधवीलतार वल्कलांश किछु किछु भक्षण करिया याइत। एखन आर से सुयोग नाइ। पर्वकाल व्यतीत अन्य दिने छेलेरा प्राङ्गणे प्रवेश करिते पाइत ना एवं क्षुधातुर छागशिशुके दण्डाघात खाइयाइ द्वारेर निकट हइते तारस्वरे आपन अज-जननीके आह्वान करिते करिते फिरिते हइत।

अनाचारी व्यक्ति परमात्मीय हइलेओ देवालयेर प्राङ्गणे प्रवेश करिते पाइत ना। जयकालीर एकटि यवनकरपक्व कुक्कुटमांस-लोलुप भगिनीपति आत्मीयसन्दर्शन उपलक्ष्ये ग्रामे उपस्थित हइया मन्दिर-अङ्गने प्रवेश करिबार उपक्रम करियाछिलेन, जयकाली ताहाते त्वरित ओ तीव्र आपत्ति प्रकाश कराते सहोदरा भगिनीर सहित ताँहार विच्छेद-सम्भावना घटियाछिल। एइ देवालय सम्बन्धे विधवार एतइ अतिरिक्त अनावश्यक सतर्कता छिल ये, साधारणेर

निकट ताहा अनेकटा वातुलतारूपे प्रतीयमान हइत।

जयकालीर आर-सर्वञ्जइ कठिन उन्नत स्वतन्त्र, केवल एइ मन्दिरेर सम्मुखे तिनि परिपूर्णभावे आत्मसमर्पण करियाछिलेन। एइ विग्रहटिर निकट तिनि एकान्तरूपे जननी, पत्नी, दासी—इहार काछे तिनि सतर्क, सुकोमल, सुन्दर एवं सम्पूर्ण अवनम्र। एइ प्रस्तरेर मन्दिर एवं प्रस्तरेर मूर्तिटि ताँहार निगूढ़ नारीस्वभावेर एकमात्र चरितार्थतार विषय छिल। इहाइ ताँहार स्वामी, पुत्र, ताँहार समस्त संसार।

इहा हइतेइ पाठकेरा बुझिबेन, ये बालकटि मन्दिरप्राङ्गण हइते माधवीमञ्जरी आहरण करिबार प्रतिज्ञा करियाछिल ताहार साहसेर सीमा छिल ना। से जयकालीर कनिष्ठ भ्रातुष्पुत्र नलिन। से ताहार पिसिमाके भालो करियाइ जानित, तथापि ताहार दुर्दान्त प्रकृति शासनेर वश हय नाइ। येखाने बिपद सेखानेइ ताहार एकटा आकर्षण छिल, एवं येखाने शासन सेखानेइ लङ्घन करिबार जन्य ताहार चित्त चञ्चल हइया थाकित। जनश्रुति आछे, बाल्यकाले ताहार पिसिमार स्वभावटिओ एइरूप छिल।

जयकाली तखन मातृस्नेहमिश्रित भक्तिर सहित ठाकुरेर दिके दृष्टि निबद्ध करिया दालाने बसिया एकमने माला जपिते-छिलेन।

बालकटि निःशब्दपदे पश्चात् हइते आसिया माधवीतलाय दाँड़ाइल। देखिल, निम्नशाखार फुलगुलि पूजार जन्य निःशोषित हइयाछे। तखन अति धीरे धीरे सावधाने मञ्चे आरोहण करिल। उच्च शाखाय दुटि-एकटि विकचोन्मुख कुँड़ि देखिया येमन से शरीर एवं बाहु प्रसारित करिया तुलिते याइबे अमनि सेइ प्रबल चेष्टार भरे जीर्ण मञ्च सशब्दे भाङिया पड़िल। आश्रित लता एवं बालक एकत्रे भूमिसात् हइल।

जयकाली ताड़ाताड़ि छुटिया आसिया ताँहार भ्रातुष्पुत्रटिर कीर्ति देखिलेन, सबले बाहु धरिया ताहाके माटि हइते तुलिलेन।

आघात ताहार यथेष्ट लागियाछिल, किन्तु से आघातके शास्ति बला याय ना, कारण, ताहा अज्ञान जड़ेर आघात। सेइजन्य पतित बालकेर व्यथित देहे जयकालीर सज्ञान शास्ति मुहुर्मुहु सबले बर्षित हइते लागिल। बालक एकबिन्दु अश्रुपात ना करिया नीरवे सह्य करिल। तखन ताहार पिसिमा ताहाके टानिया लइया घरेर मध्ये रुद्ध करिलेन। ताहार सेदिनकार वैकालिक आहार निषिद्ध हइल।

आहार बन्ध हइल शुनिया दासी मोक्षदा कातरकण्ठे छलछलनेत्रे बालकके क्षमा करिते अनुनय करिल। जयकालीर हृदय गलिल ना। ठाकुरानीर अज्ञातसारे गोपने क्षुधित बालकके केह ये खाद्य दिबे, बाड़िते एमन दुःसाहसिक केह छिल ना।

विधवा मञ्चसंस्कारेर जन्य लोक डाकिते पाठाइया पुनर्बार माला हस्ते दालाने आसिया बसिलेन। मोक्षदा किछुक्षण परे सभये निकटे आसिया कहिल, "ठाकुरमा, काकाबाबु क्षुधाय काँदितेछेन, ताँहाके किछु दुध आनिया दिब कि।"

जयकाली अविचलित मुखे कहिलेन, "ना।" मोक्षदा फिरिया गेल। अदूरवर्ती कुटिरेर कक्ष हइते नलिनेर करुण क्रन्दन क्रमे क्रोधेर गर्जने परिणत हइया उठिल—अवशेषे अनेकक्षण परे ताहार कातरतार श्रान्त उच्छ्वास थाकिया थाकिया जपनिरता पिसिमार काने आसिया ध्वनित हइते लागिल।

नलिनेर आर्तकण्ठ यखन परिश्रान्त ओ मौनप्राय हइया आसियाछे एमन समये आर-एकटि जीवेर भीत कातरध्वनि निकटे ध्वनित हइते लागिल एवं सेइ सङ्गे धावमान मनुष्येर दूरवर्ती चीत्कार शब्द मिश्रित हइया मन्दिरेर सम्मुखस्थ पथे एकटि तुमुल कलरव उत्थित हइल।

सहसा प्राङ्गणेर मध्ये एकटा पदशब्द शोना गेल। जयकाली पश्चाते फिरिया देखिलेन, भूपर्यस्त माधवीलता आन्दोलित हइतेछे।

सरोषकण्ठे डाकिलेन, "नलिन!"

केह उत्तर दिल ना। बुझिलेन अबाध्य नलिन बन्दीशाला

हइते कोनोक्रमे पलायन करिया पुनराय ताँहाके रागाइते आसियाछे।

तखन अत्यन्त कठिनभावे अधरेर उपरे ओष्ठ चापिया विधवा प्राङ्गणे नामिया आसिलेन ।

लताकुञ्जेर निकट पुनराय डाकिलेन, "नलिन ।"

उत्तर पाइलेन ना। शाखा तुलिया देखिलेन, एकटा अत्यन्त मलिन शूकर प्राणभये घन पल्लवेर मध्ये आश्रय लइयाछे ।

ये लतावितान एइ इष्टकप्राचीरेर मध्ये बृन्दाविपिनेर संक्षिप्त प्रतिरूप, याहार विकसित कुसुममञ्जरी सौरभ गोपीवृन्देर सुगन्धि निश्वास स्मरण कराइया देय एवं कालिन्दीतीरवर्ती सुखविहारेर सौन्दर्यस्वप्न जाग्रत करिया तोले—विधवार सेइ प्राणाधिक यत्नेर सुपवित्र नन्दनभूमिते अकस्मात् एइ वीभत्स व्यापार घटिल !

पुजारि ब्राह्मण लाठि हस्ते ताड़ा करिया आसिल ।

जयकाली तत्क्षणात् अग्रसर हइया ताहाके निषेध करिलेन एवं द्रुतवेगे भितर हइते मन्दिरेर द्वार रुद्ध करिया दिलेन ।

अनतिकाल परेइ सुरापान-उन्मत्त डोमेर दल मन्दिरेर द्वारे उपस्थित हइया ताहादेर बलिर पशुर जन्य चीत्कार करिते लागिल ।

जयकाली रुद्ध द्वारेर पश्चाते दाँड़ाइया कहिलेन, "या बेटारा, फिरे या ! आमार मन्दिर अपवित्र करिस ने ।"

डोमेर दल फिरिया गेल । जयकाली ठाकुरानी ये ताँहार राधानाथ जीउर मन्दिरेर मध्ये अशुचि जन्तुके आश्रय दिबेन, इहा ताहार प्राय प्रत्यक्ष देखियाओ विश्वास करिते पारिल ना ।

जगत् जुड़े उदार सुरे

जगत् जुड़े उदार सुरे
आनन्दगान बाजे,
से गान कबे गभीर रवे
बाजिबे हिया माझे ।

बातास जल आकाश आलो
सबारे कबे बासिब भालो,
हृदयसभा जुड़िया तारा
बसिबे नाना साजे ।

नयन दुटि मेलिले कबे
परान हबे खुशि,
ये पथ दिया चलिया याब
सबारे याब तुषि ।

रयेछ तुमि, ए कथा कबे
जीवनमाझे सहज हबे—
आपनि कबे तोमारि नाम
ध्वनिबे सब काजे ।

पुरातन भृत्य

भूतेर मतन चेहारा येमन, निर्बोध अति घोर—
या-किछु हाराय गिन्नि बलेन, "केष्टा बेटाइ चोर।"
उठिते बसिते करि बापान्त, शुनेओ शोने ना काने।
यत पाय बेत ना पाय वेतन, तबु ना चेतन माने।
बड़ो प्रयोजन, डाकि प्राणपण, चीत्कार करि "केष्टा—"
यत करि ताड़ा नाहि पाइ साड़ा, खुँजे फिरि सारा देशटा।
तिनखाना दिले एकखाना राखे, बाकि कोथा नाहि जाने;
एकखाना दिते निमेष फेलिते तिनखाना करि आने।
ये खाने सेखाने दिवसे दुपरे निद्राटि आछे साधा;
महाकलरवे गालि देइ यबे "पाजि हतभागा गाधा—"
दरजार पार दाँड़िये से हासे, देखे ज्वले याय पित्त।
तबु माया तार त्याग करा भार— बड़ो पुरातन भृत्य।

घरेर कर्त्री रुक्षमूर्ति ब'ले, "आर पारि नाको,
रहिल तोमार ए घर-दुयार केष्टारे लये थाको।
ना माने शासन; वसन बासन अशन आसन यत
कोथाय की गेल, शुधु टाकागुलो येतेछे जलेर मतो
गेले से बाजार सारा दिने आर देखा पाओया तार भार—
करिले चेष्टा केष्टा छाड़ा कि भृत्य मेले ना आर!"
शुने महा रेगे छुटे याइ वेगे, आनि तारि टिकि धरे;
बलि तारे, "पाजि, बेरो तुइ आजइ, दूर करे दिनु तोरे।"
धीरे चले याय, भाबि गेल दाय; पर दिने उठे देखि,

हुँकाटि बाड़ाये रयेछे दाँड़ाये बेटा बुद्धिर ढेँकि—
प्रसन्न मुख, नाहि कोनो दुख, अति अकातर चित्त ।
छाड़ाले ना छाड़े, की करिब तारे— मोर पुरातन भृत्य ।

से बछरे फाँका पेनु किछु टाका करिया दालालगिरि ।
करिलाम मन, श्रीवृन्दावन बारेक आसिब फिरि ।
परिवार ताय साथे येते चाय, बुझाय बलिनु तारे—
पतिर पुण्ये सतीर पुण्य, नहिले खरच बाड़े ।
लये रशारशि करि कषाकषि पोँटला-पुँटलि बाँधि
वलय बाजाये बाक्स साजाये गृहिणी कहिल काँदि,
"परदेशे गिये केष्टारे निये कष्ट अनेक पाबे ।"
आमि कहिलाम, "आरे राम राम ! निवारण साथे याबे ।"
रेलगाड़ि धाय; हेरिलाम हाय नामिया बर्धमाने
कृष्णकान्त अति प्रशान्त, तामाक साजिया आने !
स्पर्धा ताहार हेनमते आर कतबा सहिब नित्य !
यत तारे दुषि तबु हनु खुशि हेरि पुरातन भृत्य !

नामिनु श्रीधामे—दक्षिणे वामे पिछने समुखे यत
लागिल पाण्डा, निमेषे प्राणटा करिल कण्ठागत ।
जन छय-साते मिलि एक-साथे परम बन्धु भावे
करिलाम बासा; मने हल आशा, आरामे दिवस याबे ।
कोथा ब्रजबाला, कोथा बनमाला, कोथा बनमाली हरि !
कोथा हा हन्त चिरबसन्त ! आमि बसन्ते मरि ।
बन्धु ये यत स्वप्नेर मतो बासा छेड़े दिल भङ्ग;
आमि एका घरे, व्याधि-खरशरे भरिल सकल अङ्ग ।
डाकि निशिदिन सकरुण क्षीण, "केष्ट, आय रे काछे ।
एत दिने शेषे आसिया विदेशे प्राण बुझि नाहि बाँचे ।"
हेरि तार मुख भरे होठे बुक, से येन परम वित्त—
निशिदिन धरे दाँड़ाय शियरे मोर पुरातन भृत्य ।

मुखे देय जल, शुधाय कुशल, शिरे देय मोर हात;
दाँड़ाय निझुम, चोखे नाइ घुम, मुखे नाइ तार भात।
बले बारबार, "कर्त्ता, तोमार कोनो भय नाइ, शुन—
याबे देशे फिरे, माठाकुरानीरे देखिते पाइबे पुन।"
लभिया आराम आमि उठिलाम; ताहारे धरिल ज्वरे;
निल से आमार कालव्याधिभार आपनार देह-'परे।
हये ज्ञानहीन काटिल दु दिन, बन्ध हइल नाड़ी;
एतबार तारे गेनु छाड़बारे, एत दिने गेल छाड़ि।
बहु दिन परे आपनार घरे फिरिनु सारिया तीर्थ;
आज साथे नेइ चिरसाथी सेइ मोर पुरातन भृत्य।

आमि ये रोज सकाल हले

आमि ये रोज सकाल ह'ले
याइ शहरेर दिके च'ले
तमिज मिआर गोरुर गाड़ि च'ड़े;
सकाल थेके सारा दुपर
इँट साजिये इँटेर उपर
खेयाल-मत देयाल तुलि ग'ड़े।
समस्त दिन छात-पिटुनी
गान गेये छात पिटोय शुनि,
अनेक नीचे चलछे गाड़ि-घोड़ा।
बासनओयाला थाला बाजाय;
सुर क'रे ऐ हाँक दिये याय
आताओयाला निये फलेर झोड़ा।
साड़े चारटे बेजे ओठे,
छेलेरा सब बासाय छोटे
हो हो क'रे उड़िये दिये धुलो।
रोद्दुरे येइ आसे प'ड़े
पुबेर मुखे कोथा ओड़े
दले दले डाक दिये काकगुलो।
आमि तखन दिने शेषे
भारार थेके नेमे एसे
आबार फिरे आसि आपन गाँये—
जानो ना कि आमार पाड़ा
येखाने ओइ खुँटि गाड़ा
पुकुर-पाड़े गाजन-तलार बाँये॥

इच्छापूरण

सुबलचन्द्रेर छेलेटिर् नाम सुशीलचन्द्र। किन्तु सकल समये नामेर मतो मानुषटि हय ना सेइजन्यइ सुबलचन्द्र किछु दुर्बल छिलेन एवं सुशीलचन्द्र बड़ो शान्त छिलेन ना।

छेलेटि पाड़ासुद्ध लोकके अस्थिर करिया बेड़ाइत, सेइजन्य बाप माझे माझे शासन करिते छुटितेन; किन्तु बापेर पाये छिल बात, आर छेलेटि हरिणेर मतो दौड़िते पारित; काजेइ किल चड़ चापड़ सकल समय ठिक जायगाय गिया पड़ित ना। किन्तु सुशीलचन्द्र दैवात् येदिन धरा पड़ितेन, सेदिन ताँहार आर रक्षा थाकित ना।

आज शनिवारेर दिने दुटो समय स्कुलेर छुटि छिल, किन्तु आज स्कुल याइते सुशीलेर किछुतेइ मन उठितेछिल ना। ताहार अनेकगुला कारण छिल। एके तो आज स्कुले भूगोलेर परीक्षा, ताहाते आबार ओ पाड़ार बोसेदेर बाड़ि आज सन्ध्यार समय बाजि पोड़ानो हइबे। सकाल हइते सेखाने धुमधाम चलितेछे। सुशीलेर इच्छा, सेइखानेइ आज दिनटा काटाइया देय।

अनेक भाबिया, शेषकाले स्कुले याइबार समय बिछानाय गिया शुइया पड़िल। ताहार बाप सुबल गिया जिज्ञासा करिलेन, "की रे, बिछानाय पड़े आछिस ये। आज इस्कुले याबि ने ?"

सुशील बलल, "आमार पेट कामड़ाच्छे, आज आमि इस्कुले येते पारब ना।"

सुबल ताहार मिथ्या कथा समस्त बुझिते पारिलेन। मने मने बलिलेन, रोसो, एके आज जब्द करते हबे। एइ बलिया कहिलेन, "पेट कामड़ाच्छे ? तबे आर तोर कोथाओ गिये काज नेइ। बोसेदेर

बाड़ि बाजि देखते हरिके एकलाइ पाठिये देब एखन। तोर जन्य आज लजञ्जुस किने रेखेछिलुम, सेओ आज खेये काज नेइ। तुइ एखाने चुप करे पड़े थाक्, आमि खानिकटा पाँचन तैरि करे निये आसि।"

एइ बलिया ताहार घरे शिकल दिया सुबलचन्द्र खुब तितो पाँचन तैयार करिया आनिते गेलेन। सुशील महा मुशकिले पड़िया गेल। लजञ्जुस से येमन भालोबासित पाँचन खाइते हइले ताहार तेमनि सर्वनाश बोध हइत। ओ दिके आबार बोसेदेर बाड़ि याइबार जन्य काल रात हइते ताहार मन छट्‌पट्‌ करितेछे, ताहाओ बुझि बन्ध हइल।

सुबलबाबु यखन खुब बड़ो एक बाटि पाँचन लइया घरे ढुकिलेन सुशील बिछाना हइते धड़फड़् करिया उठिया बलिल, "आमार पेट कामड़ानो एकेबारे सेरे गेछे, आमि आज इस्कुले याब।"

बाबा बलिलेन, "ना ना, से काज नेइ, तुइ पाँचन खेये एइखाने चुपचाप करे शुये थाक्।" एइ बलिया ताहाके जोर करिया पाँचन खाओयाइया घरे ताला लागाइया बाहिर हइया गेलेन।

सुशील बिछानाय पड़िया काँदिते काँदिते समस्तदिन धरिया केवल मने करिते लागिल ये, आहा, यदि कालइ आमार बाबार मतो वयस हय, आमि या इच्छे ताइ करते पारि, आमाके केउ बन्ध करे राखते पारे ना।

ताहार बाप सुबलबाबु बाहिरे एकला बसिया वसिया भाबिते लागिलेन ये, आमार बाप मा आमाके बड़ो बेशि आदर दितेन बलेइ तो आमार भालोरकम पड़ाशुनो किछु हल ना। आहा, आबार यदि सेइ छेलेबेला फिरे पाइ ता हले आर किछुतेइ समय नष्ट ना करे केवल पड़ाशुनो करे निइ।

इच्छाठाकरुन सेइ समय घरेर बाहिर दिया याइतेछिलेन। तिनि बापेर ओ छेलेर मनेर इच्छा जानिते पारिया भाबिलेन, आच्छा, भालो, किछुदिन इहादेर इच्छा पूर्ण करियाइ देखा याक।

एइ भाबिया बापके गिया बलिलेन, "तोमार इच्छा पूर्ण

हइबे। काल हइते तुमि तोमार छेलेर वयस पाइबे।" छेलेके गिया बलिलेन, "काल हइते तुमि तोमार बापेर वयसी हइबे।" शुनिया दुइजने भारि खुशि हइया उठिलेन।

बृद्ध सुबलचन्द्र रात्रे भालो घुमाइते पारितेन ना, भोरेर दिकटाय घुमाइतेन। किन्तु आज ताँहार की हइल, हठात् खुब भोरे उठिया एकेबारे लाफ दिया बिछाना हइते नामिया पड़िलेन। देखिलेन, खुब छोटो हइया गेछेन; पड़ा दाँत सबगुलि उठियाछे; मुखेर गोंफदाड़ि समस्त कोथाय गेछे, ताहार आर चिह्न नाइ। रात्रे ये धुति एवं जामा परिया शुइयाछिलेन, सकालवेलाय ताहा एत ढिला हइया गेछे ये, हातेर दुइ आस्तिन प्राय माटि पर्यन्त झुलिया पड़ियाछे, जामार गला बुक पर्यन्त नाबियाछे, धुतिर कोँचाटा एतइ लुटाइतेछे ये, पा फेलिया चलाइ दाय।

आमादेर सुशीलचन्द्र अन्यदिन भोरे उठिया चारि दिके दौरात्म्य करिया बेड़ान, किन्तु आज ताहार घुम आर भाङे ना; यखन ताहार बाप सुबलचन्द्रेर चेँचामिचिते से जागिया उठिल, तखन देखिल, कापड़चोपड़गुलो गाये एमनि आँटिया गेछे ये, छिँड़िया फाटिया कुटिकुटि हइबार जो हइयाछे, शरीरटा समस्त बाड़िया उठियाछे; काँचा-पाका गोंफ-दाड़िते अर्धेकटा मुख देखाइ याय ना; माथाय एकमाथा चुल छिल, हात दिया देखे, सामने चुल नाइ— परिष्कार टाक तक् तक् करितेछे।

आज सकाले सुशीलचन्द्र बिछाना छाड़िया उठितेइ चाय ना। अनेकबार तुड़ि दिया उच्चैःस्वरे हाइ तुलिल; अनेकबार एपाश-ओपाश करिल; शेषकाले बाप सुबलचन्द्रेर गोलमाले भारि विरक्त हइया उठिया पड़िल।

दुइजनेर मनेर इच्छा पूर्ण हइल बटे, किन्तु भारि मुशकिल बाधिया गेल। आगेइ बलियाछि, सुशीलचन्द्र मने करित ये, से यदि ताहार बाबा सुबलचन्द्रेर मतो बड़ो एवं स्वाधीन हय, तबे येमन इच्छा गाछे चड़िया, जले झाँप दिया, काँचा आम खाइया, पाखिर

बाच्छा पाड़िया, देशमय घुरिया बेड़ाइबे; यखन इच्छा घरे आसिया याहा इच्छा ताहाइ खाइबे, केह वारण करिबार थाकिबे ना। किन्तु आश्चर्य एइ, सेदिन सकाले उठिया ताहार गाछे चड़िते इच्छाइ हइल ना। पानापुकुरटा देखिया ताहार मने हइल, इहाते झाँप दिलेइ आमार काँपुनि दिया ज्वर आसिबे। चुपचाप करिया दाओयाय एकटा मादुर पातिया बसिया बसिया भाबिते लागिल।

एकबार मने हइल, खेलाधुलोगुलो एकेबारेइ छाड़िया देओयाटा भालो हय ना, एकबार चेष्टा करियाइ देखा याक। एइ भाबिया, काछे एकटा आमड़ा गाछ छिल, सेइटाते उठिबार जन्य अनेकरकम चेष्टा करिल। काल ये गाछटाते काठबिड़ालिर मतो तर्तर् करिया चड़िते पारित, आज बुड़ा शरीर लइया से गाछे किछु-तेइ उठिते पारिल ना; निचेकार एकटा कचि ड़ाल धरिबामात्र सेटा ताहार शरीरेर भारे भाङ्गिया गेल एवं बुड़ा सुशील धप् करिया माटिते पड़िया गेल। काछे रास्ता दिया लोक चलतेछिल, ताहारा बुड़ाके छेलेमानुषेर मतो गाछ चड़िते ओ पड़िते देखिया हासिया अस्थिर हइया गेल। सुशीलचन्द्र लज्जाय मुख निचु करिया आबार सेइ दाओयाय मादुरे आसिया बसिल। चाकरके बलिल, "ओरे बाजार थेके एक टाकार लजञ्जुस किने आन्।"

लजञ्जुसेर प्रति सुशीलचन्द्रेर बड़ो लोभ छिल। स्कुलेर धारे दोकाने से रोज नाना रङेर लजञ्जुस साजानो देखित, दु-चार पयसा याहा पाइत, ताहातेइ लजञ्जुस किनिया खाइत; मने करित, यखन बाबार मतो टाका हइबे, तखन केवल पकेट भरिया भरिया लजञ्जुस किनिबे एवं खाइबे। आज चाकर एक टाकाय एकराश लजञ्जुस किनिया आनिया दिल; ताहारइ एकटा लइया से दन्तहीन मुखेर मध्ये पुरिया चुषिते लागिल; किन्तु बुड़ार मुखे छेलेमानुषेर लजञ्जुस किछुतेइ भालो लागिल ना। एकबार भाबिल, एगुलो आमार छेलेमानुष बाबाके खाइते देओया याक; आबार तखनेइ मने हइल, काज नाइ, एत लजञ्जुस खाइले उहार आबार असुख करिबे।

काल पर्यन्त ये-सकल छेले सुशीलचन्द्रेर सङ्गे कपाटि खेलियाछे, आज ताहारा सुशीलेर सन्धाने आसिया बुड़ो सुशीलके देखिया दूरे छुटिया गेल।

सुशील भाबियाछिल, बापेर मतो स्वाधीन हइले ताहार समस्त छेले-बन्धुदेर सङ्गे समस्तदिन धरिया केवलइ डुडु डुडु शब्दे कपाटि खेलिया बेड़ाइबे; किन्तु आज राखाल गोपाल अक्षय निवारण हरिश एवं नन्दके देखिया मने मने विरक्त हइया उठिल; भाबिल, चुपचाप करिया बसिया आछि, एखनइ बुझि छोँड़ागुलो गोलमाल बाधाइया दिबे।

आगेइ बलियाछि, बाबा सुबलचन्द्र प्रतिदिन दाओयाय मादुर पातिया बसिया बसिया भाबितेन, यखन छोटो छिलाम तखन दुष्टामि करिया समय नष्ट करियाछि, छेलेवयस फिरिया पाइले समस्तदिन शान्त शिष्ट हइया, घरे दरजा बन्ध करिया बसिया, केवलइ बइ लइया पड़ा मुखस्थ करि। एमन कि, सन्ध्यार परे ठाकुरमार काछे गल्प शोनाओ बन्ध करिया प्रदीप ज्वालिया रात्रि दशटा एगारोटा पर्यन्त पड़ा तैयारि करि।

किन्तु छेलेवयस फिरिया पाइया सुबलचन्द्र किछुतेइ स्कुलमुखो हइते चाहेन ना। सुशील विरक्त हइया आसिया बलित, "बाबा इस्कुले याबे ना ?" सुबल माथा चुलकाइया मुख निचु करिया आस्ते आस्ते बलितेन, "आज आमार पेट कामड़ाच्छे, आमि इस्कुले येते पारब ना।" सुशील राग करिया बलित, "पारबे ना बइकि ! इस्कुले याबार समय आमारओ अमन ढेर पेट कामड़ेछे, आमि ओ-सब जानि।"

वास्तविक सुशील एतरकम उपाये स्कुल पलाइत एवं से एत अल्पदिनेर कथा ये, ताहाके फाँकि देओया ताहार बापेर कर्म नहे। सुशील जोर करिया क्षुद्र बापटिके स्कुले पाठाइते आरम्भ करिल। स्कुलेर छुटिर परे सुबल बाड़ि आसिया खुब एकचोट छुटाछुटि करिया खेलिया बेड़ाइबार जन्य अस्थिर हइया पड़ितेन; किन्तु ठिक

सेइ समयटिते वृद्ध सुशीलचन्द्र चोखे चशमा दिया एकखाना कृत्तिवासेर रामायण लइया सुर करिया करिया पड़ित, सुबलेर छुटाछुटि-गोलमाले ताहार पड़ार व्याघात हइत। ताइ से जोर करिया सुबलके धरिया सम्मुखे बसाइया हाते एकखाना स्लेट दिया आँक कषिते दित। आँकगुलो एमनि बड़ो बड़ो बाछिया दित ये, ताहार एकटा कषितेइ ताहार बापेर एक घण्टा चलिया याइत। सन्ध्याबेलाय बुड़ो सुशीलेर घरे अनेक बुड़ाय मिलिया दाबा खेलित। से समयटाय सुबलके ठाण्डा राखिबार जन्य सुशील एकजन मास्टार राखिया दिल; मास्टार रात्रि दशटा पर्यन्त ताहाके पड़ाइत।

खाओयार विषये सुशीलेर बड़ो कड़ाक्कड़ छिल। कारण ताहार बाप सुबल यखन वृद्ध छिलेन, तखन ताँहार खाओया भालो हजम हइत ना, एकटु बेशि खाइलेइ अम्बल हइत—सुशीलेर से कथाटा बेश मने आछे; सेइजन्य से ताहार बापके किछुतेइ अधिक खाइते दित ना। किन्तु हठात् अल्पवयस हइया आजकाल ताँहार एमनि क्षुधा हइयाछे ये, नुड़ि हजम करिया फेलिते पारितेन। सुशील ताँहाके यतइ अल्प खाइते दित, पेटेर ज्वालाय तिनि ततइ अस्थिर हइया बेड़ाइतेन। शेषकाले रोगा हइया शुकाइया ताँहार सर्वाङ्गेर हाड़ बाहिर हइया पड़िल। सुशील भाबिल, शक्त ब्यामो हइयाछे; ताइ केवलइ औषध गिलाइते लागिल।

बुड़ा सुशीलेरओ बड़ो गोल बाधिल। से ताहार पूर्वकालेर अभ्यासमत याहा करे ताहाइ ताहार सह्य हय ना। पूर्वे से पाड़ाय कोथाओ यात्रागानेर खबर पाइलेइ, बाड़ि हइते पालाइया, हिमे होक, वृष्टिते होक, सेखाने गिया हाजिर हइत। आजिकार बुड़ा सुशील सेइ काज करिते गिया, सर्दि हइया, काशि हइया, गाये माथाय व्यथा हइया, तिन हप्ता शय्यागत हइया पड़िया रहिल। चिरकाल से पुकुरे स्नान करिया आसियाछे, आजओ ताहाइ करिते गिया हातेर गाँट, पायेर गाँट फुलिया विषम बात उपस्थित हइल; ताहार चिकित्सा करिते छय मास गेल। ताहार पर हइतेइ दुइ दिन

अन्तर से गरम जले स्नान करित एवं सुबलकेओ किछुतेइ पुकुरे स्नान करिते दित ना। पूर्वेकार अभ्यासमत, भुलिया भुलिया तक्तपोष हइते से लाफ दिया नामिते याय, आर हाड़गुलो टन्टन् भन्भन् करिया उठे। मुखेर मध्ये आस्त पान पुरियाइ हठात् देखे, दाँत नाइ, पान चिबानो असाध्य। भुलिया चिरुनि ब्रुश लइया आँचड़ाइते गिया देखे, प्राय सकल माथातेइ टाक। एक-एकदिन हठात् भुलिया याइत ये, से ताहार बापेर वयसी बुड़ा हइयाछे एवं भुलिया पूर्वेर अभ्यास मत दुष्टामि करिया पाड़ार बुड़ि आन्दिपिसिर जलेर कलसे हठात् ठन् करिया ढिल छुँड़िया मारित—बुड़ो मानुषेर एइ छेलेमानुषि दुष्टामि देखिया, लोकेरा ताहाके मार मार करिया ताड़ाइया याइत, से'ओ लज्जाय मुख राखिबार जायगा पाइत ना।

सुबलचन्द्रओ एक-एकदिन दैवात् भुलिया याइत ये, से आजकाल छेलेमानुष हइयाछे। आपनाके पूर्वेर मतो बुड़ो मने करिया, येखाने बुड़ामानुषेरा तासपाशा खेलितेछे सेइखाने गिया से बसित एवं बुड़ार मतो कथा बलित; शुनिया सकलेइ ताहाके "या या, खेला कर्‌गे या, ज्याठामि करते हबे ना" बलिया कान धरिया विदाय करिया दित। हठात् भुलिया मास्टारके गिया बलित, "दाओ तो, तामाकटा दाओ तो, खेये निइ।" शुनिया मास्टार ताहाके बेञ्चेर उपर एकपाये दाँड़ कराइया दित। नापितके गिया बलित, "ओरे बेजा, कदिन आमाके कामाते आसिस नि केन।" नापित भाबित, छेलेटि खुब ठाट्टा करिते शिखियाछे। से उत्तर दित, "आर बर दशेक बादे आसब एखन।" आबार एक-एकदिन ताहार पूर्वेर अभ्यासमत ताहार छेले सुशीलके गिया मारित। सुशील भारि राग करिया बलित, "पड़ाशुनो करे तोमार एइ बुद्धि हच्छे? एकरत्ति छेले हये बुड़ोमानुषेर गाये हात तोल।" अमनि चारि दिक हइते लोकजन छुटिया आसिया, केह किल केह चड़ केह गालि दिते आरम्भ करे।

तखन सुबल एकान्तमने प्रार्थना करिते लागिल ये, "आहा, यदि

আমি আমার ছেলে সুশীলের মতো বড়ো হই এবং স্বাধীন হই, তাহা হইলে বাঁচিয়া যাই।"

সুশীলও প্রতিদিন জোড়হাত করিয়া বলে, "হে দেবতা, বাপের মতো আমাকে ছোটো করিয়া দাও, মনের সুখে খেলা করিয়া বেড়াই। বাবা যেরকম দুষ্টামি আরম্ভ করিয়াছেন, উঁহাকে আর আমি সামলাইতে পারি না, সর্বদা ভাবিয়া অস্থির হইলাম।"

তখন ইচ্ছাঠাকরুন আসিয়া বলিলেন, "কেমন, তোমাদের শখ মিটিয়াছে ?"

তাঁহারা দুইজনেই গড় হইয়া প্রণাম করিয়া কহিলেন, "দোহাই ঠাকরুন, মিটিয়াছে। এখন আমরা যে যাহা ছিলাম আমাদিগকে তাহাই করিয়া দাও।"

ইচ্ছাঠাকরুন বলিলেন, "আচ্ছা, কাল সকালে উঠিয়া তাহাই হইবে।"

পরদিন সকালে সুবল পূর্বের মতো বুড়া হইয়া এবং সুশীল ছেলে হইয়া জাগিয়া উঠিলেন। দুইজনেরই মনে হইল যে, স্বপ্ন হইতে জাগিয়াছি। সুবল গলা ভার করিয়া বলিলেন, "সুশীল ব্যাকরণ মুখস্থ করবে না ?"

সুশীল মাথা চুলকাইতে চুলকাইতে বলিল, "বাবা, আমার বই হারিয়া গেছে।"

आमरा चाष करि आनन्दे

आमरा चाष करि आनन्दे ।
माठे माठे बेला काटे सकाल हते सन्धे ।।

रौद्र ओठे वृष्टि पड़े, बाँशेर वने पाता नड़े,
वातास ओठे भरे भरे चषा माटिर गन्धे ।।

सबुज प्राणेर गानेर लेखा रेखाय रेखाय देय रे देखा,
माते रे कोन् तरुण कवि नृत्यदोदुल छन्दे ।

धानेर शिषे पुलक छोटे— सकल धरा हेसे ओठे
अघ्रानेरइ सोनार रोदे, पूर्णिमारइ चन्द्रे ।।

मेघेर कोले रोद हेसेछे

मेघेर कोले रोद हेसेछे, बादल गेछे टुटि,
आज आमादेर छुटि ओ भाइ, आज आमादेर छुटि ।
की करि आज भेबे ना पाइ,
पथ हारिये कोन् वने याइ,
कोन् माठे ये छुटे बेड़ाइ सकल छेले जुटि ।।

केया-पातार नौका गड़े साजिये देब फुले—
तालदिघिते भासिये देब, चलबे दुले दुले ।
राखाल छेलेर सङ्गे धेनु
चराब आज बाजिये बेणु,
माखब गाये फुलेर रेणु चाँपार बने लुटि ।।

गुप्तधन

अमावस्यार निशीथ रात्रि। मृत्युञ्जय तान्त्रिक मते ताहादेर बहुकालेर गृहदेवता जयकालीर पूजाय बसियाछे। पूजा समाधा करिया यखन उठिल, तखन निकटस्थ आमबागान हइते प्रत्युषेर प्रथम काक डाकिल।

मृत्युञ्जय पश्चाते फिरिया चाहिया देखिल मन्दिरेर द्वार रुद्ध रहियाछे। तखन से एकबार देवीर चरणतले मस्तक ठेकाइया ताँहार आसन सराइया दिल। सेइ आसनेर निचे हइते एकटि काँठाल-काठेर बाक्स बाहिर हइल। पैताय चाबि बाँधा छिल। सेइ चाबि लागाइया मृत्युञ्जय बाक्सटि खुलिल। खुलिबामात्रइ चमकिया उठिया माथाय कराघात करिल।

मृत्युञ्जयेर अन्दरेर बागान प्राचीर दिया घेरा। सेइ बागानेर एक प्रान्ते बड़ो बड़ो गाछेर छायार अन्धकारे एइ छोटो मन्दिरटि। मन्दिरे जयकालीर मूर्ति छाड़ा आर-किछुइ नाइ; ताहार प्रवेशद्वार एकटिमात्र। मृत्युञ्जय बाक्सटि लइया अनेकक्षण नाड़ाचाड़ा करिया देखिल। मृत्युञ्जय बाक्सटि खुलिबार पूर्वे ताहा बन्धइ छिल—केह ताहा भाङे नाइ। मृत्युञ्जय दशबार करिया प्रतिमार चारिदिके घुरिया हातड़ाइया देखिल—किछुइ पाइल ना। पागलेर मतो हइया मन्दिरेर द्वार खुलिया फेलिल—तखन भोरेर आलो फुटितेछे। मन्दिरेर चारिदिके मृत्युञ्जय घुरिया घुरिया बृथा आश्वासे खुँजिया बेड़ाइते लागिल।

सकालबेलाकार आलोक यखन परिस्फुट हइया उठिल, तखन से बाहिरेर चण्डीमण्डपे आसिया माथाय हात दिया बसिया

भाबिते लागिल। समस्त रात्रिर अनिद्रार पर क्लान्तशरीरे एकटु तन्द्रा आसियाछे, एमन समये हठात् चमकिया उठिया शुनिल, "जय होक, बाबा।"

सम्मुखे प्राङ्गणे एक जटाजूटधारी संन्यासी। मृत्युञ्जय भक्तिभरे ताँहाके प्रणाम करिल। संन्यासी ताहार माथाय हात दिया आशीर्वाद करिया कहिलेन, "बाबा, तुमि मनेर मध्ये वृथा शोक करितेछ।"

शुनिया मृत्युञ्जय आश्चर्य हइया उठिल—कहिल, "आपनि अन्तर्यामी, नहिले आमार शोक केमन करिया बुझिलेन। आमि तो काहाकेओ किछु बलि नाइ।"

संन्यासी कहिलेन, "वत्स, आमि बलितेछि, तोमार याहा हाराइयाछे सेजन्य तुमि आनन्द करो, शोक करियो ना।"

मृत्युञ्जय ताँहार दुइ पा जड़ाइया धरिया कहिल, "आपनि तबे तो समस्तइ जानियाछेन—केमन करिया हाराइयाछे, कोथाय गेले फिरिया पाइब, ताहा ना बलिले आमि आपनार चरण छाड़िब ना।"

संन्यासी कहिलेन, "आमि यदि तोमार अमङ्गल कामना करिताम तबे बलिताम। किन्तु भगवती दया करिया याहा हरण करियाछेन सेजन्य शोक करियो ना।"

मृत्युञ्जय संन्यासीके प्रसन्न करिबार जन्य समस्त दिन विविध उपचारे ताँहार सेवा करिल। परदिन प्रत्युषे निजेर गोहाल हइते लोटा भरिया सफेन दुग्ध दुहिया लइया आसिया देखिल, संन्यासी नाइ।

: २ :

मृत्युञ्जय यखन शिशु छिल, यखन ताहार पितामह हरिहर एकदिन एइ चण्डीमण्डपे बसिया तामाक खाइतेछिल, तखन एमनि करियाइ एकटि संन्यासी "जय होक, बाबा" बलिया एइ प्राङ्गणे

आसिया दाँड़ाइयाछिलेन। हरिहर सेइ संन्यासीके कयेकदिन बाड़िते राखिया विधिमतो सेवार द्वारा सन्तुष्ट करिल।

विदायकाले संन्यासी यखन जिज्ञासा करिलेन, "वत्स की चाओ", हरिहर कहिल, "बाबा यदि सन्तुष्ट हइया थाकेन तबे आमार अवस्थाटा एकबार शुनुन। एककाले एइ ग्रामे आमरा सकलेरे चेये बर्धिष्णु छिलाम। आमार प्रपितामह दूर हइते कुलीन आनाइया ताँहार एक कन्यार विवाह दियाछिलेन। ताँहार सेइ दौहित्रवंश आमादिगके फाँकि दिया आजकाल एइ ग्रामे बड़ोलोक हइया उठि-याछे। आमादेर एखन अवस्था भालो नय, काजेइ इहादेर अहङ्कार सह्य करिया थाकि। किन्तु आर सह्य हय ना। की करिले आबार आमादेर वंश बड़ो हइया उठिबे सेइ उपाय बलिया दिन, सेइ आशी-र्वाद करुन।"

संन्यासी ईषत् हासिया कहिलेन, "बाबा, छोटो हइया सुखे थाको। बड़ो हइबार चेष्टाय श्रेय देखि ना।"

किन्तु हरिहर तबु छाड़िल ना, वंशके बड़ो करिबार जन्य से समस्त स्वीकार करिते राजि आछे।

तखन संन्यासी तारि झुलि हइते कापड़े मोड़ा एकटि तुलट कागजेर लिखन बाहिर करिलेन। कागजखानि दीर्घ, कोष्ठिपत्रेर मतो गुटानो। संन्यासी सेटि मेजेर उपर खुलिया धरिलेन। हरिहर देखिल, ताहाते नानाप्रकार चक्रे नाना सांकेतिक चिह्न आँका, आर, सकलेर निम्ने एकटि प्रकाण्ड छड़ा लेखा आछे ताहार आरम्भटा एइरूप:

पाये धरे साधा।
रा नाहि देय राधा॥
शेषे दिले रा,
पागोल छाड़ो पा॥
तेँतुल बटेर कोले,
दक्षिणे याओ चले॥

ईशानकोणे ईशानी,

कहे दिलाम निशानी ।। इत्यादि ।

हरिहर कहिल, "बाबा, किछुइ तो बुझिलाम ना।"

संन्यासी कहिलेन, "काछे राखिया दाओ, देवीर पूजा करो। ताँहार प्रसादे तोमार वंशे केह ना केह एइ लिखन बुझिते पारिबे। तखन से एमन ऐश्वर्य पाइबे जगते याहार तुलना नाइ।"

हरिहर मिनति करिया कहिल, "बाबा कि बुझाइया दिबेन ना।"

संन्यासी कहिलेन, "ना। साधना द्वारा बुझिते हइबे।"

एमन समय हरिहरेर छोटो भाइ शंकर आसिया उपस्थित हइल। ताहाके देखिया हरिहर ताड़ाताड़ि लिखनटि लुकाइबार चेष्टा करिल। संन्यासी हासिया कहिलेन, "बड़ो हइबार पथेर दुःख एखन हइतेइ शुरु हइल। किन्तु गोपन करिबार दरकार नाइ। कारण, इहार रहस्य केवल एकजनमात्रइ भेद करिते पारिबे, हाजार चेष्टा करिलेओ आर-केह ताहा पारिबे ना। तोमादेर मध्ये सेइ लोकटि ये के ताहा केह जाने ना। अतएव इहा सकलेर सम्मुखेइ निर्भये खुलिया राखिते पार।"

संन्यासी चलिया गेलेन। किन्तु हरिहर ए कागजटि लुकाइया ना राखिया थाकिते पारिल ना। पाछे आर केह इहा हइते लाभवान हय, पाछे ताहार छोटो भाइ शङ्कर इहार फलभोग करिते पारे, एइ आशङ्काय हरिहर एइ कागजटि एकटि काँठालकाठेर बाक्से बन्ध करिया ताहादेर गृहदेवता जयकालीर आसनतले लुकाइया राखिल। प्रत्येक अमावस्याय निशीथरात्रे देवीर पूजा सारिया से एकबार करिया सेइ कागजटि खुलिया देखित, यदि देवी प्रसन्न हइया ताहाके अर्थ बुझिबार शक्ति देन।

शङ्कर किछुदिन हइते हरिहरके मिनति करिते लागिल, "दादा आमाके सेइ कागजटा एकबार भालो करिया देखिते दाओ-ना।"

हरिहर कहिल, "दूर पागल। से कागज की आछे। बेटा भण्डसंन्यासी कागजे कतकगुला हिजिबिजि काटिया आमाके फाँकि दिया गेल—आमि से पुड़ाइया फेलियाछि।"

शङ्कर चुप करिया रहिल। हठात् एकदिन शङ्करके घरे देखिते पाओया गेल ना। ताहार पर हइते से निरुद्देश।

हरिहरेर अन्य समस्त काजकर्म नष्ट हइल—गुप्त ऐश्वर्येर ध्यान एकमुहूर्त से छाड़िते पारिल ना।

मृत्युकाल उपस्थित हइले से ताहार बड़ो छेले श्यामापदके एइ संन्यासीदत्त कागजखानि दिया गेल।

एइ कागज पाइया श्यामापद चाकरि छाड़िया दिल। जयकालीर पूजाय आर एकान्तमने एइ लिखनपाठेर चर्चाय ताहार जीवनटा ये कोन् दिक दिया काटिया गेल ताहा बुझिते पारिल ना।

मृत्युञ्जय श्यामापदेर बड़ो छेले। पितार मृत्युर परे से एइ संन्यासीदत्त गुप्तलिखनेर अधिकारी हइयाछे। ताहार अवस्था उत्तरोत्तर यतइ हीन हइया आसिते लागिल, ततइ अधिकतर आग्रहेर सहित ऐ कागजखानिर प्रति ताहार समस्त चित्त निविष्ट हइल। एमन समय गत अमावस्यारात्रे पूजार पर लिखनखानि आर देखिते पाइल ना—संन्यासीओ कोथाय अन्तर्धान करिल।

मृत्युञ्जय कहिल, एइ संन्यासीके छाड़ा हइबे ना। समस्त सन्धान इहार काछ हइतेइ मिलिबे।

एइ बलिया से घर छाड़िया संन्यासीके खुँजते बाहिर हइल। एक वत्सर पथे पथे काटिया गेल।

: ३ :

ग्रामेर नाम धारागोल। सेखाने मृत्युञ्जय मुदिर दोकाने बसिया तामाक खाइतेछिल आर अन्यमनस्क हइया नाना कथा भाबितेछिल। किछु दूरे माठेर धार दिया एकजन संन्यासी चलिया गेल। प्रथमटा मृत्युञ्जयेर मनोयोग आकृष्ट हइल ना। एकटु परे

हठात् ताहार मने हइल, ये-लोकटा चलिया गेल एइ तो सेइ संन्यासी। ताड़ाताड़ि हुँकाटा राखिया मुदिके सचकित करिया एकदौड़े से दुकान हइते बाहिर हइया गेल। किन्तु से संन्यासीके देखा गेल ना।

तखन सन्ध्या अन्धकार हइया आसियाछे। अपरिचित स्थाने कोथाय ये संन्यासीर सन्धान करिते याइबे ताहा से ठिक करिते पारिल ना। दोकाने फिरिया आसिया मुदिके जिज्ञासा करिल, "ऐ—ये मस्त वन देखा याइतेछे ओखाने की आछे।"

मुदि कहिल, "एककाले ऐ वन शहर छिल, किन्तु अगस्त्य मुनिर शापे ओखानकार राजा प्रजा समस्तइ मड़के मरियाछे। लोके बले, ओखाने अनेक धनरत्न आजओ खुँजिले पाओया याय; किन्तु दिन-दुपुरेओ ऐ वने साहस करिया केह याइते पारे ना। ये गेछे से आर फेरे नाइ।"

मृत्युञ्जयेर मन चञ्चल हइया उठिल। समस्त रात्रि मुदिर दोकाने मादुरेर उपर पड़िया मशार ज्वालाय सर्वाङ्ग चापड़ाइते लागिल आर ऐ वनेर कथा, संन्यासीर कथा, सेइ हारानो लिखनेर कथा भाबिते थाकिल। बार बार पड़िया सेइ लिखनटि मृत्युञ्जयेर प्राय कण्ठस्थ हइया गियाछिल, ताइ एइ अनिद्रावस्थाय केवलइ ताहार माथाय घुरिते लागिल :

पाये धरे साधा।
रा नाहि देय राधा॥
शेषे दिले रा।
पागोल छाड़ो पा॥

माथा गरम हइया उठिल—कोनोमतेइ एइ कटा छत्र से मन हइते दूर करिते पारिल ना। अवशेषे भोरेर बेलाय यखन ताहार तन्द्रा आसिल, तखन स्वप्ने एइ चारि छत्रेर अर्थ अति सहजे ताहार निकट प्रकाश हइल। 'रा नाहि देय राधा' अतएव 'राधा'र 'रा' ना थाकिले 'धा' रहिल—'शेषे दिले रा' अतएव हइल 'धारा'—

'पागोल छाड़ो पा'—'पागोल'-एर 'पा' छाड़िले 'गोल' बाकि रहिल—अतएव समस्तटा मिलिया हइल 'धारागोल'—ए जायगाटार नाम तो 'धारागोल'इ बटे।

स्वप्न भाङिया मृत्युन्जय लाफाइया उठिल।

: ४ :

समस्त दिन वनेर मध्ये फिरिया सन्ध्याबेलाय बहुकष्टे पथ खुँजिया अनाहारे मृतप्राय अवस्थाय मृत्युञ्जय ग्रामे फिरिल।

परदिन चादरे चिँड़ा बाँधिया पुनर्बार से वनेर मध्ये यात्रा करिल। अपराह्णे एकटा दिघिर धारे आसिया उपस्थित हइल। दिघिर माझखानटा परिष्कार जल आर पाड़ेर गाये गाये चारिदिके पथ आर कुमुदेर वन। पाथरे बाँधानो घाट भाङिया-चुरिया पड़ियाछे, एइखाने जले चिँड़ा भिजाइया खाइया दिघिर चारिदिक प्रदक्षिण करिया देखिते लागिल।

दिघिर पच्छिमपाड़िर प्रान्ते हठात् मृत्युञ्जय थमकिया दाँड़ाइल। देखिल एकटा तेँतुलगाछके वेष्टन करिया प्रकाण्ड बटगाछ उठियाछे। तत्क्षणात् ताहार मने पड़िल—

तेँतुल बटेर कोले
दक्षिणे याओ चले॥

दक्षिणे किछुदूर याइतेइ घन जङ्गलेर मध्ये आसिया पड़िल। सेखाने से बेतझाड़ भेद करिया चला एकेबारे असाध्य। याहा हउक, मृत्युञ्जय ठिक करिल, एइगाछटाके कोनोमते हाराइले चलिबे ना।

एइ गाछेर काछे फिरिया आसिबार समय गाछेर अन्तराल दिया अनतिदूरे एकटा मन्दिरेर चूड़ा देखा गेल। सेइदिकेर प्रति लक्ष्य करिया मृत्युञ्जय एक भाङा मन्दिरेर काछे आसिया उपस्थित हइल। देखिल, निकटे एकटा चुल्लि, पोड़ा काठ आर छाइ पड़िया आछे। अति सावधाने मृत्युञ्जय भग्नद्वार मन्दिरेर मध्ये उँकि मारिल।

सेखाने कोनो लोक नाइ, प्रतिमा नाइ, केवल एकटि कम्बल, कमण्डल आर गेरुआ उत्तरीय पड़िया आछे।

तखन सन्ध्या आसन्न हइया आसियाछे; ग्राम बहु दूरे, अन्धकारे बनेर मध्ये पथ सन्धान करिया याइते पारिबे कि ना, ताइ एइ मन्दिरे मनुष्यबसतिर लक्षण देखिया मृत्युञ्जय खुशि हइल। मन्दिर हइते एकटि बृहत् प्रस्तरखण्ड भाङिया द्वारेर काछे पड़िया छिल; सेइ पाथरेर उपरे बसिया नतशिरे भाबिते भाबिते मृत्युञ्जय हठात् पाथरेर गाये की येन लेखा देखिते पाइल। झुँकिया पड़िया देखिल एकटि चक्र आँका, ताहार मध्ये कतक स्पष्ट कतक लुप्तप्राय भावे निम्नलिखित साङ्केतिक अक्षर लेखा आछे—
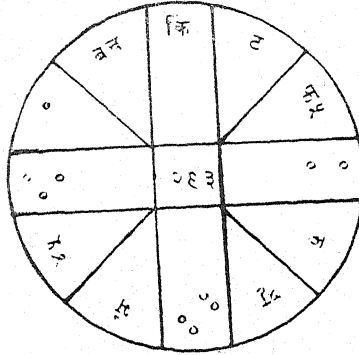
एइ चक्रटि मृत्युञ्जयेर सुपरिचित। कत अमावस्या रात्रे पूजागृहे सुगन्ध धूपेर धूमे घृतदीपालोके तुलट कागजे अङ्कित एइ चक्रचिह्नेर उपरे झुँकिया पड़िया रहस्यभेद करिबार जन्य एकाग्रमने से देवीर प्रसाद याञ्चा करियाछे। आज अभीष्टसिद्धिर अत्यन्त सन्निकटे आसिया ताहार सर्वाङ्ग येन काँपिते लागिल। पाछे तीरे आसिया तरी डोबे, पाछे सामान्य एकटा भुले ताहार समस्त नष्ट हइया याय, पाछे सेइ संन्यासी पूर्वे आसिया समस्त उद्धार करिया लइया गिया थाके एइ आशङ्काय ताहार बुकेर मध्ये तोलपाड़ करिते लागिल। एखन ये ताहार की कर्त्तव्य ताहा से भाबिया पाइल ना।

ताहार मने हइल, से हयतो ताहार ऐश्वर्यभाण्डारेर ठिक उपरेइ बसिया आछे अथच किछुइ जानिते पाइतेछे ना।

बसिया बसिया से कालीनाम जप करिते लागिल; सन्ध्यार अन्धकार निविड़ हइया आसिल; झिल्लीर ध्वनिते वनभूमि मुखर हइया उठिल।

: ५ :

एमनसमय किछुदूर घन वनेर मध्ये अग्निर दीप्ति देखा गेल। मृत्युञ्जय ताहार प्रस्तरासन छाड़िया उठिया पड़िल आर सेइ शिखा लक्ष्य करिया चलिते लागिल।

बहु कष्टे किछुदूर गिया एकटा अशथ गाछेर गुँड़िर अन्तराल हइते स्पष्ट देखिते पाइल, ताहार सेइ परिचित संन्यासी अग्निर आलोके सेइ तुलटेर लिखन मेलिया एकटि काठि दिया छाइयेर उपरे एकमने अङ्क कषितेछे।

मृत्युञ्जयेर घरेर सेइ पैतृक तुलटेर लिखन! आरे भण्ड, चोर! एइजन्यइ से मृत्युञ्जयके शोक करिते निषेध करियाछिल बटे!

संन्यासी एकबार करिया अङ्क कषितेछे, आर एकटा माप-काठि लइया जमि मापितेछे—कियद्दूर मापिया हताश हइया घाड़ नाड़िया पुनर्बार आसिया अङ्क कषिते प्रवृत्त हइतेछे।

एमनि करिया रात्रि यखन अवसानप्राय, यखन निशान्तेर शीतवायुते वनस्पतिर अग्रशाखार पल्लवगुलि मर्मरित हइया उठिल, तखन संन्यासी सेइ लिखनपत्र गुटाइया लइया चलिया गेल।

मृत्युञ्जय की करिबे भाबिया पाइल ना। इहा से निश्चय बुझिते पारिल ये, संन्यासीर साहाय्य व्यतीत एइ लिखनेर रहस्य भेद करा ताहार साध्य हइबे ना। लुब्ध संन्यासी ये मृत्युञ्जयके साहाय्य करिबे ना ताहाओ निश्चित। अतएव गोपने संन्यासीर प्रति दृष्टि राखा छाड़ा अन्य उपाय नाइ। किन्तु दिनेर बेलाय ग्रामे ना गेले ताहार आहार मिलिबे ना; अतएव अन्तत काल सकाले

एकबार ग्रामे याओया आवश्यक।

भोरेर दिके अन्धकार एकटु फिका हइबामात्र से गाछ हइते नामिया पड़िल। येखाने संन्यासी छाइयेर मध्ये आँक कषितेछिल सेखाने भालो करिया देखिल, किछुइ बुझिल ना। चतुर्दिके घुरिया देखिल, अन्य वनखण्डेर सङ्गे कोनो प्रभेद नाइ।

वनतलेर अंधकार क्रमे यखन क्षीण हइया आसिल तखन मृत्युञ्जय अति सावधाने चारिदिक देखिते देखिते ग्रामेर उद्देशे चलिल। ताहार भय छिल पाछे संन्यासी ताहाके देखिते पाय।

ये दोकाने मृत्युञ्जय आश्रय ग्रहण करियाछिल, ताहार निकटे एकटि कायस्थगृहिणी व्रत उद्यापन करिया सेदिन ब्राह्मणभोजन कराइते प्रवृत्त छिल। सेइखाने आज मृत्युञ्जयेर आहार जुटिया गेल। कयदिन आहारेर कष्टेर पर आज ताहार भोजनटि गुरुतर हइया उठिल। सेइ गुरुभोजनेर पर येमन तामाकटि खाइया दोकानेर मादुरटिते एकबार गड़ाइया लइबार इच्छा करिल, अमनि गत-रात्रिर अनिद्राकातर मृत्युञ्जय घुमे आच्छन्न हइया पड़िल।

मृत्युञ्जय स्थिर करियाछिल, आज सकाल सकाल आहारादि करिया यथेष्ट बेला थाकिते बाहिर हइबे। ठिक ताहार उलटा हइल। यखन ताहार निद्राभङ्ग हइल तखन सूर्य अस्त गियाछे। तबु मृत्युञ्जय दमिल ना। अंधकारेइ वनेर मध्ये से प्रवेश करिल।

देखिते देखिते रात्रि घनीभूत हइया आसिल। गाछेर छायार मध्ये दृष्टि आर चले ना, जङ्गलेर मध्ये पथ अवरुद्ध हइया याय। मृत्युञ्जय ये कोन् दिके कोथाय याइतेछे ताहा किछु ठाहर पाइल ना। रात्रि यखन अवसान हइल तखन देखिल समस्त रात्रि से वनेर प्रान्ते एकइ जायगाय घुरिया घुरिया बेड़ाइतेछे।

काकेर दल का-का शब्दे ग्रामेर दिके उड़िल। एइ शब्द मृत्युञ्जयेर काने व्यङ्गपूर्ण धिक्कारवाक्येर मतो शुनाइल।

गणनाय बारम्बार भुल आर सेइ भुल संशोधन करिते करिते अवशेषे संन्यासी सुरङ्गेर पथ आविष्कार करियाछेन। सुरङ्गेर मध्ये मशाल लइया तिनि प्रवेश करिलेन। बाँधानो भित्तिर गाये स्याँ-तला पड़ियाछे—माझे माझे एक-एक जायगाय जल चुँइया पड़ि-तेछे। स्थाने स्थाने कतकगुला भेक गाये गाये स्तूपाकार हइया निद्रा दितेछे। एइ पिछल पथ दिया किछुदूर याइतेइ संन्यासी देखिलेन, सम्मुखे देयाल उठियाछे, पथ अवरुद्ध। किछुइ बुझिते पारिलेन ना। देयाले सर्वत्र लौहदण्ड दिया सबले आघात करिया देखिलेन, कोथाओ फाँका आओयाज दितेछे ना, कोथाओ रन्ध्र नाइ, एइ पथटार ये एइखाने शेष ताहा निःसन्देह।

आबार सेइ कागज खुलिया माथाय हात दिया बसिया भाविते लागिलेन। से रात्रि एमनि करिया काटिया गेल।

परदिन पुनर्बार गणना सारिया सुरङ्गे प्रवेश करिलेन। सेदिन गुप्तसङ्केत अनुसरणपूर्वक एकटि विशेष स्थान हइते पाथर खसाइया एक शाखापथ आविष्कार करिलेन। सेइ पथे चलिते चलिते आबार एक जायगाय पथ अवरुद्ध हइया गेल।

अवशेषे पञ्चम रात्रे सुरङ्गेर मध्ये प्रवेश करिया संन्यासी बलिया उठिलेन, "आज आमि पथ पाइयाछि, आज आर आमार कोनोमतेइ भुल हइबे ना।"

पथ अत्यन्त जटिल; ताहार शाखाप्रशाखार अन्त नाइ—कोथाओ एत सङ्कीर्ण ये गुँड़ि मारिया याइते हय। बहु यत्ने मशाल धरिया चलिते चलिते संन्यासी एकटा गोलाकार घरेर मतो जायगाय आसिया पौँछिलेन। सेइ घरेर माझखाने एकटा बृहत् इँदारा। मशालेर आलोके संन्यासी ताहार तल देखिते पाइलेन ना। घरेर छाद हइते एकटा मोटा प्रकाण्ड लौहशृङ्खल इँदारार मध्ये नामिया गेछे। संन्यासी प्राणपण बले ठेलिया एइ शृङ्खलटाके अल्प एकटुखानि नाड़ाइबामात्र ठङ् करिया एकटा शब्द इँदारार गह्वर

हइते उत्थित हइया घरमय प्रतिध्वनित हइते लागिल। संन्यासी उच्चैःस्वरे बलिया उठिलेन, "पाइयाछि।"

येमन बला अमनि सेइ घरेर भाङा भित्ति हइते एकटा पाथर गड़ाइया पड़िल आर सेइ सङ्गे आर-एकटि की सचेतन पदार्थ धप करिया पड़िया चीत्कार करिया उठिल। संन्यासी एइ अकस्मात् शब्दे चमकिया उठितेइ ताँहार हात हइते मशाल पड़िया निबिया गेल।

: ७ :

संन्यासी जिज्ञासा करिलेन, "तुमि के।" कोनो उत्तर पाइलेन ना। तखन अन्धकारे हातड़ाइते गिया ताँहार हाते एकटि मानुषेर देह ठेकिल। ताहाके नाड़ा दिया जिज्ञासा करिलेन, "के तुमि।"

कोनो उत्तर पाइलेन ना। लोकटा अचेतन हइया गेछे।

तखन चक्मकि ठुकिया ठुकिया संन्यासी अनेक कष्टे मशाल धराइलेन। इतिमध्ये सेइ लोकटाओ संज्ञाप्राप्त हइल, आर उठिबार चेष्टा करिया वेदनाय आर्त्तनाद करिया उठिल।

संन्यासी कहिलेन, "ए की, मृत्युञ्जय ये! तोमार ए मति हइल केन।"

मृत्युञ्जय कहिल, "बाबा, माप करो। भगवान आमाके शास्ति दियाछेन। तोमाके पाथर छुँड़िया मारिते गिया सामलाइते पारि नाइ—पिछले पाथरसुद्ध आमि पड़िया गेछि। पा-टा निश्चय भाङिया गेछे।"

संन्यासी कहिलेन, "आमाके मारिया तोमार की लाभ हइत।"

मृत्युञ्जय कहिल, "लाभेर कथा तुमि जिज्ञासा करितेछ! तुमि किसेर लोभे आमार पूजाघर हइते लिखनखानि चुरि करिया एइ सुरङ्गेर मध्ये घुरिया बेड़ाइतेछ। तुमि चोर, तुमि भाण्ड!

आमार पितामहके ये संन्यासी ऐ लिखनखानि दियाछिलेन तिनि बलियाछिलेन, आमादेरइ वंशेर केह एइ लिखनेर सङ्केत बुझिते पारिबे। एइ गुप्त ऐश्वर्य आमादेरइ वंशेर प्राप्य। ताइ आमि ए कयदिन ना खाइया ना घुमाइया छायार मतो तोमार पश्चाते फिरियाछि। आज यखन तुमि बलिया उठिले 'पाइयाछि' तखन आमि आर थाकिते पारिलाम ना। आमि तोमार पश्चाते आसिया ऐ गर्तटार भितरे लुकाइया बसिया छिलाम। ओखान हइते एकटा पाथर खसाइया तोमाके मारिते गेलाम किन्तु शरीर दुर्बल, जायगाटाओ अत्यन्त पिछल—ताइ पड़िया गेछि—एखन तुमि आमाके मारिया फेलो सेओ भालो—आमि यक्ष हइया एइ धन आगलाइब—किन्तु तुमि इहा लइते पारिबे ना—कोनोमतेइ ना। यदि लइते चेष्टा कर, आमि ब्राह्मण, तोमाके अभिशाप दिया एइ कूपेर मध्ये झाँप दिया पड़िया आत्महत्या करिब। ए धन तोमार ब्रह्मरक्त गोरक्ततुल्य हइबे—ए धन तुमि कोनोदिन सुखे भोग करिते पारिबे ना। आमादेर पिता पितामह एइ धनेर उपरे समस्त मन राखिया मरियाछेन—एइ धनेर ध्यान करिते करिते आमरा दरिद्र हइयाछि—एइ धनेर सन्धाने आमि बाड़िते अनाथा स्त्री ओ शिशुसन्तान फेलिया आहारनिद्रा छाड़िया लक्ष्मीछाड़ा पागलेर मतो माठे घाटे घुरिया बेड़ाइतेछि—ए धन तुमि आमार चोखेर सम्मुखे कखनो लइते पारिबे ना।"

: ८ :

संन्यासी कहिलेन, "मृत्युञ्जय, तबे शोनो। समस्त कथा तोमाके बलि।

"तुमि जान, तोमार पितामहेर एक कनिष्ठ सहोदर छिल, ताहार नाम छिल शङ्कर।"

मृत्युञ्जय कहिल, "हाँ, तिनि निरुद्देश हइया बाहिर हइया गियाछेन।"

संन्यासी कहिलेन, "आमि सेइ शङ्कर।"

मृत्युञ्जय हताश हइया दीर्घनिश्वास फेलिल। एतक्षण एइ गुप्त धनेर उपर ताहार ये एकमात्र दाबि से साब्यस्त करिया बसियाछिल, ताहारइ वंशेर आत्मीय आसिया से दाबि नष्ट करिया दिल।

शङ्कर कहिलेन, "दादा संन्यासीर निकट हइते लिखन पाइया अवधि आमार काछे ताहा विधिमते लुकाइबार चेष्टा करितेछिलेन। किन्तु तिनि यतइ गोपन करिते लागिलेन, आमार औत्सुक्य ततइ बाड़िया उठिल। तिनि देवीर आसनेर नीचे बाक्सेर मध्ये ऐ लिखनखानि लुकाइया राखियाछिलेन, आमि ताहार सन्धान पाइलाम आर द्वितीय चाबि बानाइया प्रतिदिन अल्प अल्प करिया समस्त कागजखाना नकल करिते लागिलाम। येदिन नकल शेष हइल सेइ दिनइ आमि एइ धनेर सन्धाने घर छाड़िया बाहिर हइलाम। आमारओ घरे अनाथा स्त्री एवं एकटि शिशुसन्तान छिल। आज ताहारा केह बाँचिया नाइ।

"कत देश-देशान्तरे भ्रमण करियाछि ताहा विस्तारित वर्णनार प्रयोजन नाइ। संन्यासीदत्त एइ लिखन निश्चय कोनो सन्यासी आमके बुझाइया दिते पारिबेन एइ मने करिया अनेक संन्यासीर आमि सेवा करियाछि। अनेक भण्ड संन्यासी आमार ऐ कागजेर सन्धान पाइया ताहा हरण करिबारओ चेष्टा करियाछे, आमार मने एक मुहूर्त्तेर जन्यओ सुख छिल ना, शान्ति छिल ना।

"अवशेषे पूर्वजन्मार्जित पुण्येर बले कुमायुन पर्वते बाबा स्वरूपानन्द स्वामीर सङ्ग पाइलम। तिनि आमाके कहिलेन, "बाबा, तृष्णा दूर करो, ताहा हइलेइ विश्वव्यापी अक्षय सम्पद आपनि तोमाके धरा दिबे।'

"तिनि आमार मनेर दाह जुड़ाइया दिलेन। ताँहार प्रसादे आकाशेर आलोक आर धरणीर श्यामलता आमार काछे राजसम्पद हइया उठिल। एकदिन पर्वतेर शिलातले शीतेर सायान्हे परमहंस-

फेलिलाम। सेखाना राखिलेइ वा क्षति कि छिल।

"तखन आबार आमार सेइ जन्मग्रामे गेलाम। आमादेर पैतृक भिटार नितान्त दुरवस्था देखिया मने करिलाम, आमि संन्यासी, आमार धनरत्ने कोनो प्रयोजन नाइ, किन्तु एइ गरिबरा तो गृही, सेइ गुप्त सम्पद इहादेर जन्य उद्धार करिया दिले ताहाते दोष नाइ।

"सेइ लिखन कोथाय आछे जानिताम, ताहा सङ्ग्रह करा आमार पक्षे किछुमात्र कठिन हइल ना।

"ताहार परे एकटि वत्सर धरिया एइ कागजखाना लइया एइ निर्जन वनेर मध्ये गणना करियाछि आर सन्धान करियाछि। मने आर कोनो चिन्ता छिल ना। यत बारम्बार बाधा पाइते लागिलाम ततइ उत्तरोत्तर आग्रह आरो बाड़िया चलिल—उन्मत्तेर मतो अहोरात्र एइ एक अध्यवसाये निविष्ट रहिलाम।

"इतिमध्ये कखन तुमि आमार अनुसरण करितेछ ताहा जानिते पारि नाइ। आमि सहज अवस्थाय थाकिले तुमि कखनोइ निजेके आमार काछे गोपन राखिते पारिते ना; किन्तु आमि तन्मय हइया छिलाम, बाहिरेर घटना आमार दृष्टि आकर्षण करित ना।

"ताहार परे, याहा खुँजितेछिलाम आज एइ मात्र ताहा आविष्कार करियाछि। एखाने याहा आछे पृथिवीते कोनो राजराजेश्वरेर भाण्डारेओ एत धन नाइ। आर एकटिमात्र सङ्केत भेद करिलेइ सेइ धन पाओया याइबे।

"एइ सङ्केतटिइ सर्वापेक्षा दुरूह। किन्तु एइ सङ्केतओ आमि मने मने भेद करियाछि। सेइजन्यइ 'पाइयाछि' बलिया मनेर उल्लासे चीत्कार करिया उठियाछिलाम। यदि इच्छा करि तबे आर-एक दण्डेर मध्ये सेइ स्वर्णमाणिक्येर भाण्डारेर माझखाने गिया दाँड़ाइते पारि।"

मृत्युञ्जय शङ्करेर पा जड़ाइया धरिया कहिल, "तुमि संन्यासी, तोमार तो धनेर कोनो प्रयोजन नाइ—आमाके एइ भाण्डारेर मध्ये

लइया याओ। आमाके वंचित करियो ना।"

शङ्कर कहिलेन, "आज आमार शेष बन्धन मुक्त हइयाछे। तुमि ऐ ये पाथर फेलिया आमाके मारिबार जन्य उद्यत हइयाछिले ताहार आघात आमार शरीरे लागे नाइ, किन्तु ताहा आमार मोहावरणके भेद करियाछे। तृष्णार करालमूर्ति आज आमि देखिलाम। आमार गुरु परमहंसदेवेर निगूढ़ प्रशान्त हास्य एतदिन परे आमार अन्तरेर कल्याणदीपे अनिर्वाण आलोकशिखा ज्वालाइया तुलिल।"

मृत्युञ्जय शङ्करेर पा धरिया पुनराय कातर स्वरे कहिल, "तुमि मुक्त पुरुष, आमि मुक्त नहि, आमि मुक्ति चाहि ना, आमाके एइ ऐश्वर्य हइते वंचित करिते पारिबे ना।"

संन्यासी कहिलेन, "वत्स, तबे तुमि तोमार एइ लिखनटि लओ। यदि धन खुँजिया लइते पारो तबे लइयो।"

एइ बलिया ताँहार यष्टि ओ लिखनपत्र मृत्युञ्जयेर काछे राखिया संन्यासी चलिया गेलेन। मृत्युञ्जय कहिल, "आमाके दया करो, आमाके फेलिया याइयो ना—आमाके देखाइया दाओ।"

कोनो उत्तर पाइल ना।

तखन मृत्युञ्जय यष्टिर उपर भर करिया हातड़ाइया सुरङ्ग हइते बाहिर हइबार चेष्टा करिल। किन्तु पथ अत्यन्त जटिल, गोलकधाँधार मतो, बार बार बाधा पाइते लागिल। अवशेषे घुरिया घुरिया क्लान्त हइया एक जायगाय शुइया पड़िल एवं निद्रा आसिते विलंब हइल ना।

घुम हइते यखन जागिल तखन रात्रि कि दिन कि कत बेला ताहा जानिबार कोनो उपाय छिल ना। अत्यन्त क्षुधा बोध हइले मृत्युञ्जय चादरेर प्रान्त हइते चिँड़ा खुलिया लइया खाइल। ताहार पर आर-एकबार हातड़ाइया सुरङ्ग हइते बाहिर हइबार पथ खुँजिते लागिल। नाना स्थाने बाधा पाइया बसिया पड़िल। तखन चीत्कार करिया डाकिल, "ओगो संन्यासी, तुमि कोथाय।"

ताहार सेइ डाक सुरङ्गेर समस्त शाखा-प्रशाखा हइते

पड़िल ।

जागिया उठिया देखिल, चारिदिके सोना झक्झक करितेछे। सोना छाड़ा आर किछुइ नाइ । मृत्युञ्जय भाबिते लागिल, पृथिवीर उपरे हयतो एतक्षणे प्रभात हइयाछे, समस्त जीवजन्तु आनन्दे जागिया उठियाछे ।—ताहादेर बाड़िते पुकुरेर धारेर बागान हइते प्रभाते ये एकटि स्निग्ध गन्ध उठित ताहाइ कल्पनाय ताहार नासिकाय येन प्रवेश करिते लागिल । से येन स्पष्ट चोखे देखिते पाइल, पातिहाँसगुलि दुलिते दुलिते कलरव करिते करिते सकालबेलाय पुकुरेर जलेर मध्ये आसिया पड़ितेछे, आर बाड़िर झि वामा कोमरे कापड़ जड़ाइया ऊर्ध्वोत्थित दक्षिण हस्तेर उपर एकराशि पितल-काँसार थाला बाटि लइया घाटे आनिया उपस्थित करितेछे ।

मृत्युञ्जय द्वारे आघात करिया डाकिते लागिल, "ओगो संन्यासीठाकुर, आछ कि ।"

द्वार खुलिया गेल । संन्यासी कहिलेन, "की चाओ ।"

मृत्युञ्जय कहिल, "आमि बाहिरे याइते चाइ—किन्तु सङ्गे एइ सोनार दुटो-एकटा पातओ कि लइया याइते पारिब ना ।"

संन्यासी ताहार कोनो उत्तर ना दिया नूतन मशाल ज्वालाइलेन—पूर्ण कमण्डलु एकटि राखिलेन आर उत्तरीय हइते कयेक मुष्टि चिँड़ा मेजेर उपर राखिया बाहिर हइया गेलेन । द्वार बन्ध हइया गेल ।

मृत्युञ्जय पात्ला एकटा सोनार पात लइया ताहा दोमड़ाइया खण्ड-खण्ड करिया भाङिया फेलिल । सेइ खण्ड सोनागुलाके लइया घरेर चारिदिके लोष्ट्रखण्डेर मतो छड़ाइते लागिल । कखनो वा दाँत दिया दंशन करिया सोनार पातेर उपर दाग करिया दिल । कखनो वा एकटा सोनार पात माटिते फेलिया ताहार उपरे बारम्बार पदाघात करिते लागिल । मने मने बलिते लागिल, पृथिवीते एमन सम्राट कयजन आछे याहारा सोना लइया एमन करिया फेलाछड़ा करिते पारे । मृत्युञ्जयेर येन एकटा प्रलयेर रोख चापिया

गेल। ताहार इच्छा करिते लागिल, एइ राशीकृत सोनाके चूर्ण करिया धूलिर मतो से झाँटा दिया झाँट दिया उड़ाइया फेले—आर एइरूपे पृथिवीर समस्त सुवर्णलुब्ध राजा-महाराजके से अवज्ञा करिते पारे।

एमनि करिया यतक्षण पारिल मृत्युञ्जय सोनागुलाके लइया टानाटानि करिया श्रान्तदेहे घुमाइया पड़िल। घुम हइते उठिया से आबार ताहार चारिदिके सेइ सोनार स्तूप देखिते लागिल। से तखन द्वारे आघात करिया चीत्कार करिया बलिया उठिल, "ओगो संन्यासी, आमि ए सोना चाइ ना—सोना चाइ ना!"

किन्तु द्वार खुलिल ना। डाकिते डाकिते मृत्युञ्जयेर गला भाङिया गेल, किन्तु द्वार खुलिल ना। एक-एकटा सोनार पिण्ड लइया द्वारेर उपर छुँड़िया मारिते लागिल, कोनो फल हइल ना। मृत्युञ्जयेर बुक दमिया गेल—तबे आर कि संन्यासी आसिबे ना। एइ स्वर्ण-कारागारेर मध्ये तिले-तिले पले-पले शुकाइया मरिते हइबे!

तखन सोनागुलाके देखिया ताहार आतङ्क हइते लागिल। विभीषिकार निःशब्द कठिन हास्येर मतो ऐ सोनार स्तूप चारि दिके स्थिर हइया रहियाछे—ताहार मध्ये स्पन्दन नाइ, परिवर्तन नाइ—मृत्युञ्जयेर ये हृदय एखन काँपितेछे, व्याकुल हइतेछे, ताहार सङ्गे उहादेर कोनो सम्पर्क नाइ, वेदनार कोनो सम्बन्ध नाइ। एइ सोनार पिण्डगुला आलोक चाय ना, आकाश चाय ना, वातास चाय ना, प्राण चाय ना, मुक्ति चाय ना। इहारा एइ चिर-अन्धकारेर मध्ये चिरदिन उज्ज्वल हइया कठिन हइया स्थिर हइया रहियाछे।

पृथिवीते एखन कि गोधूलि आसियाछे। आहा, सेइ गोधू-लिर स्वर्ण! ये स्वर्ण केवल क्षणकालेर जन्य चोख जुड़ाइया अन्ध-कारेर प्रान्ते काँदिया विदाय लइया याय। ताहार पर कुटीरेर प्राङ्गणतले सन्ध्यातारा एकदृष्टे चाहिया थाके। गोष्ठे प्रदीप ज्वा-लाइया वधू घरेर कोणे सन्ध्यादीप स्थापन करे। मन्दिरे आरतिर

जुता-आविष्कार

कहिला हबु, 'शुन गो गोबुराय,
कालिके आमि भेबेछि सारा रात्र—
मलिन धुला लागिबे केन पाय
धरणी-माझे चरण फेला मात्र !
तोमरा शुधु वेतन लह बाँटि,
राजार काजे किछुइ नाहि दृष्टि ।
आमार माटि लागाय मोरे माटि,
राज्ये मोर ए की ए अनासृष्टि !
शीघ्र एर करिबे प्रतिकार,
नहिले कारो रक्षा नाहि आर ।'

शुनिया गोबु भाबिया हल खुन,
दारुण त्रासे घर्म बहे गात्रे ।
पण्डितेर हइल मुख चुन,
पात्रदेर निद्रा नाहि रात्रे ।
रान्नाघरे नाहिक चड़े हाँड़ि,
कान्नाकाटि पड़िल बाड़ि-मध्ये ।
अश्रुजले भासाये पाका दाड़ि
कहिला गोबु हबुर पादपद्मे,—
यदि ना धुला लागिबे तव पाये,
पायेर धुला पाइब की उपाये !'

शुनिया राजा भाबिल दुलि दुलि,
कहिल शेषे, 'कथाटा बटे सत्य ।

किन्तु आगे विदाय करो धुलि,
भाबियो परे पदधुलिर तत्त्व।
धुला-अभावे ना पेले पदधुला
तोमरा सबे माहिना खाओ मिथ्ये,
केन-वा तबे पुषिनु एतगुला
उपाधि-धरा वैज्ञानिक भृत्ये!
आगेर काज आगे तो तुमि सारो,
परेर कथा भाबियो परे आरो।'

आँधार देखे राजार कथा शुनि,
यतनभरे आनिल तबे मन्त्री
येखाने यत आछिल ज्ञानी गुणी—
देशे विदेशे यतेक छिल यन्त्री।
बसिल सबे चशमा चोखे आँटि,
फुराये गेल उनिश-पिपे नस्य—
अनेक भेबे कहिल, 'गेले माटि
धराय तबे कोथाय हबे शस्य!'
कहिल राजा, 'ताइ यदि ना हबे,
पण्डितेरा रहेछ केन तबे?'

सकले मिलि युक्ति करि शेषे
किनिल झाँटा साड़े सतेरो लक्ष,
झाँटेर चोटे पथेर धुला एसे
भरिया दिल राजार मुख-वक्ष।
धुलाय केह मेलिते नारे चोख,
धुलार मेघे पड़िल ढाका सूर्य।
धुलार वेगे काशिया मरे लोक,
धुलार माझे नगर हल ऊह्य।

कठिन लोहा कठिन घुमे छिल अचेतन

कठिन लोहा कठिन घुमे छिल अचेतन
ओ तार घुम भाङाइनु रे।
लक्ष युगेर अन्धकारे छिल संगोपन
ओगो, ताय जागाइनु रे॥
पोष मेनेछे हातेर तले
या बलाइ से तेमनि बले--
दीर्घ दिनेर मौन ताहार आज भागाइनु रे॥
अचल छिल, सचल हये,
छुटेछे ओइ जगत्-जये--
निर्भये आज दुइ हाते तार राश बागाइनु रे॥

बोम्बाइ शहर

बोम्बाइ शहरटार उपर एकबार चोख बुलाइया आसिबार जन्य काल विकाले बाहिर हइयाछिलाम। प्रथम छविटा देखियाइ मने हइल, बोम्बाइ शहरेर एकटा विशेष चेहारा आछे, कलिकातार येन कोनो चेहारा नाइ, से येन येमन-तेमन करिया जोड़ा-ताड़ा दिया तैरि हइयाछे।

आसल कथा, समुद्र बोम्बाइ शहरके आकार दियाछे, निजेर अर्धचन्द्राकृति बेलाभूमि दिया ताहाके आँकड़िया धरियाछे। समुद्रेर आकर्षण बोम्बाइयेर समस्त रास्ता-गलिर भितर दिया काज करितेछे। आमार मने हइतेछे, येन समुद्रटा एकटा प्रकाण्ड हृत्पिण्ड। प्राणधाराके बोम्बाइयेर शिरा-उपशिरार भितर दिया टानिया लइतेछे एवं भरिया दितेछे। समुद्र चिरदिन एइ शहरटिके बृहत् बाहिरेर दिके मुख करिया राखिया दियाछे।

प्रकृतिर सङ्गे कलिकातार मिलनेर एकटि बन्धन छिल गङ्गा। एइ गङ्गार धाराइ सुदूरेर वार्ताके सुदूर रहस्येर अभिमुखे वहिया लइया याइबार खोला पथ छिल। शहरेर एइ एकटि जानाला छिल येखाने मुख बाड़ाइले बोझा याइत, जगत्टा एइ लोकालयेर मध्येइ बद्ध नहे। किन्तु गङ्गार प्राकृतिक महिमा आर रहिल ना, ताहाके दुइ तीरे एमनि आँटासाँटा पोशाक पराइयाछे, एवं ताहार कोमरबन्ध एमनि कषिया बाँधियाछे ये, गङ्गाओ लोकालयेरइ पेयादार मूर्ति धरियाछे, गाधाबोट बोझाइ करिया पाटेर बस्ता चालान करा छाड़ा ताहार ये आर-कोनो बड़ो काज छिल ताहा आर बुझिबार जो नाइ। जाहाजेर मास्तुलेर कण्टकारण्ये मकरवाहिनीर मकरेर

हइया गियाछे ताहा आमादिगके अचेतन करिया राखे, किन्तु ताहार क्षति प्रत्यहइ जमा हइते थाके, ताहाते कोनो सन्देह नाइ। घरेर कोणेर मध्ये आमरा नरनारी मिलिया थाकि, किन्तु से मिलन कि सम्पूर्ण ? बाहिरे मिलिबार ये उदार विश्व रहियाछे सेखाने कि सरल आनन्दे एकदिनओ आमादेर परस्पर देखासाक्षात् हइबे ना ?

आमादेर गाड़ि म्याथेरान पाहाड़ेर उपरे एकटा बागानेर सम्मुखे आसिया दाँड़ाइल। छोटो बागानटिके वेष्टन करिया चारि दिके बेंच् पाता। सेखानेओ देखि, कुलस्त्रीरा आत्मीयदेर सङ्गे बसिया वायुसेवन करितेछेन। केवल पार्सि रमणी नहे, कपाले सिँदुरेर फोँटा-परा माराठि मेयेराओ बसिया आछेन—मुखे केमन प्रशान्त प्रसन्नता। निजेर अस्तित्वटा ये एकटा विषम विपद, सेटाके चारि दिकेर दृष्टि हइते केमन करिया ठेकाइया राखा याय, ए भावना लेशमात्र ताँहादेर मने नाइ। मने मने भाबिलाम, समस्त देशेर माथार उपर हइते कत बड़ो एकटा संकोचेर बोझा नामिया गियाछे एवं ताहाते एखानकार जीवनयात्रा आमादेर चेये कतदिके सहज ओ सुन्दर हइया उठियाछे। पृथिवीर मुक्त वायु ओ आलोके सञ्चरण करिबार सहज अधिकारटि लोप करिया दिले मानुष निजेइ निजेर पक्षे किरूप एकटा अस्वाभाविक विघ्न हइया उठे, ताहा आमादेर देशेर मेयेदेर सर्वदा ससंकोच असहायता देखिले बुझिते पारा याय। रेलोये स्टेशने आमादेर मेयेदेर देखिले, ताहादेर प्रति समस्त देशेर बहुकालेर निष्ठुरता स्पष्ट प्रत्यक्ष हइया उठे। म्याथेरानेर एइ बागाने घुरिते घुरिते आमादेर बीडन-पार्क ओ गोलदिघिके मने करिया देखिलाम—ताहार से की लक्ष्मीछाड़ा कृपणता !

प्रजापतिर दल यखन फुलेर वने मधु खुँजिया फेरे तखन ताहारा ये बाबुयाना करिया बेड़ाय ताहा नहे, वस्तुत तखन ताहारा काजे व्यस्त। किन्तु ताइ बलिया ताहारा आपिसे याइबार कालो आचकान परे ना। एखानकार जनतार वेशभूषाय यखन नानारङेर समावेश देखि तखन आमार सेइ कथा मने पड़े। काजकर्मेर व्यस्तता-

के गाये पड़िया श्रीहीन करिया तुलिबार ये कोनो एकान्त प्रयोजन आछे, आमार तो ताहा मने हय ना। इहादेर पागड़िते, पाड़े, मेयेदेर शाड़िते ये वर्णच्छटा देखिते पाइ ताहाते एकटा जीवनेर आनन्द प्रकाश पाय एवं जीवनेर आनन्दके जाग्रत करे। बांलादेश छाड़ाइया ताहार परे अनेक दूर हइते आमि एइटेइ देखिते देखिते आसियाछि। चाषा चाष करितेछे, किन्तु ताहार माथाय पागड़ि एवं गाये एकटा मेर्जाइ परा। मेयेदेर तो कथाइ नाइ। आमादेर सङ्गे एखनकार बाहिरेर एइ प्रभेदटि आमार काछे सामान्य बलिया ठेकिल ना। कारण, एइ प्रभेदटुकु अवलम्बन करिया इहादेर प्रति आमार मने एकटि श्रद्धार सञ्चार हइल। इहारा निजेके अवज्ञा करे ना; परिच्छन्नता-द्वारा इहारा निजेके विशिष्टता दान करियाछे। एटुकु मानुषेर परस्परेर प्रति परस्परेर कर्त्तव्य; एइटुकु आवरण, एइटुकु सज्जा प्रत्येकेर ना थाकिले मानुषेर रिक्तता अत्यन्त कुश्री हइया देखा देय। आपनार समाजके कुद्दश्य दीनता हइते प्रत्येकेइ यदि रक्षार चेष्टा ना करे तबे कत बड़ो एकटा शैथिल्य समस्त देशके विश्वेर चक्षे अपमानित करिया राखे, ताहा अभ्यासेर असाड़तावशतइ आमरा बुझिते पारि ना।

आर-एकटा जिनिस बोम्बाइ शहरे अत्यन्त बड़ो करिया चोखे पड़िल। से एखानकार देशी लोकेर धनशालिता। कत पार्सि मुसलमान ओ गुजराटि वणिकदेर नाम एखानकार बड़ो बड़ो बाड़िर गाये खोदा देखिलाम। एत नाम कलिकाताय कोथाओ देखा याय ना। सेखानकार धन चाकरिते ओ जमिदारिते; एइजन्य ताहा बड़ो म्लान। जमिदारिर सम्पद बद्ध जलेर मतो; ताहा केवलइ व्यवहारे क्षीण ओ विलासे दूषित हइते थाके। ताहाते मानुषेर शक्तिर प्रकाश देखि ना; ताहाते धनागमेर नव नव तरङ्गलीला नाइ। एइजन्य आमादेर देशे येटुकु धनसञ्चय आछे ताहार मध्ये अत्यन्त एकटा भीरुता देखि। माड़ोयारि पार्सि गुजराटि पाञ्जाबिदेर मध्ये दाने मुक्तहस्तता देखिते पाइ, किन्तु बांलादेश सकलेर चेये अल्प दान

करे। आमादेर देशेर चाँदार खाता आमादेर देशेर गोरुर मतो—ताहार चरिबार स्थान नाइ बलिलेइ हय। धन जिनिसटाके आमादेर देश सचेतनभावे अनुभव करितेइ पारिल ना, एइजन्य आमादेर देशेर कृपणताओ कुश्री, विलासओ वीभत्स। एखानकार धनीदेर जीवनयात्रा सरल, अथच धनेर मूर्ति उदार, इहा देखिया आनन्द बोध हय।

मस्तकविक्रय

कोशलनृपतिर तुलना नाइ,
जगत् जुड़ि यशोगाथा।
क्षीणेर तिनि सदा शरण-ठाँइ,
दीनेर तिनि पितामाता।

से कथा काशीराज शुनिया पेये,
ज्वलिया मरे अभिमाने—
"आमार प्रजागण आमार चेये
ताहारे बड़ो करि माने!
आमार हते यार आसन नीचे,
ताहार दान हल बेशि!
धर्म दया माया सकलि मिछे,
ए शुधु तार रेषारेषि।"
कहिला, "सेनापति, धरो कृपाण,
सैन्य करो सब जड़ो।
आमार चेये हबे पुण्यवान्,
स्पर्धा बाड़ियाछे बड़ो!"
चलिला काशीराज युद्धसाजे—
कोशलराज हारि रणे
राज्य छाड़ि दिया क्षुब्ध लाजे
पलाये गेल दूर वने।
काशीर राजा हासि कहे तखन
आपन सभासद-माझे,

"क्षमता आछे यार राखिते धन,
तारेइ दाता हओया साजे।"

सकले काँदि बले, 'दारुण राहु
एमन चाँदेरेओ हाने !
लक्ष्मी खोंजे शुधु बलीर बाहु,
चाहे ना धर्मेर पाने !"
"आमरा हइलाम पितृहारा"
काँदिया कहे दश दिक,
"सकल जगतेर बन्धु याँरा
ताँदेर शत्रुरे धिक्।"
शुनिया काशीराज उठिल रागि—
"नगरे केन एत शोक !
आमि तो आछि, तबु काहार लागि
काँदिया मरे यत लोक !
आमार बाहुबले हारिया तबु
आमारे करिबे से जय !
अरिर शेष नाहि राखिबे कभु
शास्त्रे एइमत कय।
मन्त्री, रटि दाओ नगर-माझे
घोषणा करो चारि धारे—
ये धरि आनि दिबे कोशलराजे
कनक शत दिब तारे।"
फिरिया राजदूत सकल बाटी
रटना करे दिन रात—
ये शोने आँखि मुदि रसना काटि
शिहरि काने देय हात।

राज्यहीन राजा गहने फिरे
मलिनचीर दीनवेशे—
पथिक एकजन अश्रुनीरे
एकदा शुधाइल एसे,
"कोथा गो वनवासी, वनेर शेष,
कोशले याब कोन् मुखे।"
शुनिया राजा कहे, "अभागा देश,
सेथाय याबे कोन् दुखे।"
पथिक कहे, "आमि वणिक्जाति,
डुबिया गेछे मोर तरी।
एखन द्वारे द्वारे हस्त पाति
केमने रब प्राण धरि!
करुणापारावार कोशलपति,
शुनेछि नाम चारि धारे—
अनाथनाथ तिनि दीनेर गति,
चलेछे दीन ताँरि द्वारे।"
शुनिया नृपसुत ईषत् हेसे
रुधिला नयनेर वारि,
नीरवे क्षणकाल भाबिया शेषे
कहिला निश्वास छाड़ि,
"पान्थ, येथा तव वासना पूरे
देखाये दिब तारि पथ।
एसेछ बहु दुखे अनेक दूरे,
सिद्ध हबे मनोरथ।"

बसिया काशीराज सभार माझे;
दाँड़ालो जटाधारी एसे।
"हेथाय आगमन किसेर काजे"
नृपति शुधाइल हेसे।

"कोशलराज आमि वनभवन"
कहिला वनवासी धीरे—
आमार धरा पेले या दिबे पण
देहो ता मोर साथिटिरे।"
उठिल चमकिया सभार लोके,
नीरव हल गृहतल—
वर्म-आवरित द्वारीर चोखे
अश्रु करे छलछल्।
मौन रहि राजा क्षणेक-तरे
हासिया कहे, "ओहे बन्दी,
मरिया हबे जयी आमार परे
एमनि करियाछ फन्दि !
तोमार से आशाय हानिब बाज,
जिनिब आजिकार रणे—
राज्य फिरि दिब हे महाराज,
हृदय दिब तारि सने।"

जीर्ण-चीर-परा वनवासीरे
बसालो नृप राजासने,
मुकुट तुलि दिल मलिन शिरे—
'धन्य' कहे पुरजने।

प्रतिष्ठादिवसेर उपदेश

अनेककाल पूर्वे आमादेर एइ देश, एइ भारतवर्ष, सकल विषये यथार्थ बड़ो छिल—तखन एखानकार लोकेरा वीर छिलेन; ताँराइ आमादेर पूर्वपुरुष।

यथार्थ बड़ो काके बले। आमादेर पूर्वपुरुषेरा की ह्ले आपनादेर बड़ो मने करतेन ? आजकाल आमादेर मने ताँदेर सेइ बड़ो भावटि नेइ ब'लेइ धनकेइ आमरा बड़ो हबार उपाय मने करि, धनीकेइ आमार बलि बड़ोमानुष। ताँरा ता बलतेन ना। ताँदेर मध्ये सबचेये याँरा बड़ो छिलेन सेइ ब्राह्मणरा धनके तुच्छ करतेन। ताँदेर वेशभूषा विलासिता किछुइ छिल ना। अथच बड़ो बड़ो राजारा एसे ताँदेर काछे माथा नत करतेन।

ये मानुष कापड़चोपड़ जुतोछाता निये निजेके बड़ो मने करे, भेबे देखो देखि से कत छोटो। जुतो कि मानुषके बड़ो करते पारे। दामि जुतो दामि कापड़ कि आमादेर कोनो गुणेर परिचय देय। आमादेर प्राचीनकाले येसब ऋषिदेर पाये जुतो छिल ना, गाये पोशाक छिल ना, ताँरा कि साहेबेर बाड़िर जुतो एवं विलाति दोकानेर कापड़ परा आमादेर चेये बड़ो छिलेन ना। आज यदि आमादेर सेइ याज्ञवल्क्य, सेइ वशिष्ठ ऋषि खालि गाये खालि पाये ताँदेर सेइ ज्योतिर्मय दृष्टि, ताँदेर सेइ पिङ्गल जटाभार निये आमादेर माझखाने एसे दाँड़ान, ताहले समस्त देशेर मध्ये एमन कोन् राजा एमन कत बड़ो साहेब आछेन यिनि ताँर जुतो फेले दिये माथार ताज नामिये, सेइ दरिद्र ब्राह्मणेर पायेर धुला निये निजेके कृतार्थ ना मने करेन। आज एमन के आछे ये तार गाड़ि जुड़ि अट्टालिका

एवं सोनार चेन निये ताँदेर सामने माथा तुले दाँड़ाते पारे।

ताँराइ आमादेर पितामह छिलेन, सेइ पूज्य ब्राह्मणदेर आमरा नमस्कार करि। केवल माथा नत करे नमस्कार करा नय—ताँरा ये शिक्षा दियेछेन ताइ ग्रहण करि, ताँरा ये दृष्टान्त दियेछेन तार अनुसरण करि। ताँदेर मतो हबार चेष्टा कराइ हच्छे ताँदेर प्रति भक्ति करा।

तोमादेर एइ निर्जन आश्रमेर मध्ये आमि आह्वान करेछि। तोमरा आमार काछे एसेछ—आमि सेइ प्राचीन ऋषिदेर सत्यवाक्य ताँदेर उज्ज्वल चरित मनेर मध्ये सर्वदा धारण करे रेखे तोमादेर सेइ महापुरुषदेर पथे चालना करते चेष्टा करब—आमादेर व्रतपति ईश्वर आमाके सेइ बल सेइ क्षमता दान करुन। यदि आमादेर चेष्टा सफल हय तबे तोमरा प्रत्येके वीरपुरुष हये उठबे—तोमरा भये कातर हबे ना, दुःखे विचलित हबे ना, क्षतिते म्रियमाण हबे ना, धनेर गर्वे स्फीत हबे ना; मृत्युके ग्राह्य करबे ना, सत्यके जानते चाइबे, मिथ्याके मन थेके कथा थेके काज थेके दूर करे देबे, सर्वदा जगतेर सकल स्थानेइ मने एवं बाइरे एक ईश्वर आछेन एइटे निश्चय जेने आनन्दमने सकल दुष्कर्म थेके निवृत्त थाकबे। कर्तव्यकर्म प्राणपणे करबे, संसारेर उन्नति धर्मपथ थेके करबे, अथच यखन कर्तव्यबोधे धनसम्पद ओ संसार त्याग करते हबे तखन किछुमात्र व्याकुल हबे ना। ताहले तोमादेर द्वारा भारतवर्ष आबार उज्ज्वल हये उठबे—तोमरा येखाने थाकबे सेइखानेइ मङ्गल हबे, तोमरा सकलेर भालो करबे एवं तोमादेर देखे सकले भालो हबे।

आमादेर पूर्वपुरुषेरा किरूप शिक्षा ओ व्रत अवलम्बन करतेन? ताँरा बाल्यकाले गृह छेड़े निर्जने गुरुर बाड़िते येतेन। सेखाने खुब कठिन नियमे निजेके संयत करे थाकते हत। गुरुके एकान्तमने भक्ति करतेन, गुरुर समस्त काज करे दितेन। गुरुर जन्ये काठ काटा, जल तुले आना, ताँर गोरु चरानो, ताँर जन्ये ग्राम थेके भिक्षे करे आना, एइसमस्त ताँदेर काज छिल, ता ताँरा यत बड़ो

धनीर पुत्र होन–ना। शरीर-मनके एकेबारे पवित्र राखते हबे—ताँदेर शरीरे ओ मने कोनो-रकम दोष एकेबारे स्पर्श करत ना। गेरुया वस्त्र परतेन, कठिन बिछानाय शुतेन, पाये जुतो नेइ, माथाय छाता नेइ—साजसज्जा बड़ोमानुषि किछुमात्र नेइ। समस्त मनेर समस्त चेष्टा केवल शिक्षालाभे, केवल सत्येर सन्धाने, केवल निजेर दुष्प्रवृत्ति-दमने, निजेर भालो गुणके फुटिये तुलते नियुक्त थाकत।

तोमादेर सेइरकम कष्ट स्वीकार करे सेइ कठिन नियमे, सकलप्रकार बड़ोमानुषिके तुच्छ करे दिये एखाने गुरुगृहे वास करते हबे। गुरुके सर्वतोभावे श्रद्धा करबे, मने वाक्ये काजे ताँके लेशमात्र अवज्ञा करबे ना। शरीरके पवित्र करे राखबे—कोनो दोष येन स्पर्श ना करे। मनके गुरु-उपदेशेर सम्पूर्ण अधीन करे राखिबे।

आज थेके तोमरा सत्यव्रत ग्रहण करले। मिथ्याके काय-मनोवाक्ये दूरे राखबे। प्रथमत सत्य जानबार जन्य सविनये समस्त मन बुद्धि ओ चेष्टा दान करबे, तार परे या सत्य ब'ले जानबे ता निर्भये सतेजे पालन ओ घोषण करबे।

आज थेके तोमादेर अभयव्रत। धर्मके छाड़ा जगते तोमादेर भय करबार आर किछुइ नेइ। विपद ना, मृत्यु ना, कष्ट ना—किछुइ तोमादेर भयेर विषय नय। सर्वदा दिवारात्रि प्रफुल्लचित्ते प्रसन्नमुखे श्रद्धार सङ्गे सत्य-लाभे धर्म-लाभे नियुक्त थाकबे।

आज थेके तोमादेर पुण्यव्रत। या-किछु अपवित्र कलुषित, या-किछु प्रकाश करते लज्जा बोध हय, ता सर्वप्रयत्ने प्राणपणे शरीर-मन थेके दूर करे प्रभातेर शिशिरसिक्त फुलेर मतो पुण्य धर्मे विकशित हये थाकबे।

आज थेके तोमादेर मङ्गलव्रत। याते परस्परेर भालो हय ताइ तोमादेर कर्त्तव्य। सेजन्ये निजेर स्वार्थ विसर्जन।

एक कथाय आज थेके तोमादेर ब्रह्मव्रत। एक ब्रह्म तोमादेर अन्तरे बाहिरे सर्वदा सकल स्थानेइ आछेन। ताँर काछ थेके किछुइ लुकोबार जो नेइ। तिनि तोमादेर मनेर मध्ये स्तब्ध हये देखछेन।

यखन येखाने थाक, शयन कर, उपवेशन कर, ताँर मध्येइ आछ, ताँर मध्येइ सञ्चरण करछ। तोमार सर्वाङ्गे ताँर स्पर्श रयेछे— तोमार समस्त भावना ताँरइ गोचरे रयेछे। तिनिइ तोमादेर एकमात्र भय, तिनिइ तोमादेर एकमात्र अभय।

प्रत्यह अन्तत एकबार ताँके चिन्ता करबे। ताँके चिन्ता करबार मन्त्र आमादेर वेदे आछे। एइ मन्त्र आमादेर ऋषिरा द्विजेरा प्रत्यह उच्चारण क'रे जगदीश्वरेर सम्मुखे दण्डायमान हतेन। सेइ मन्त्र, हे सौम्य, तुमिओ आमार सङ्गे सङ्गे एकबार उच्चारण करो:

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

वीरपुरुष

मने करो, येन विदेश घुरे
माके निये याच्छि अनेक दूरे।
तुमि याच्छ पाल्किते मा च'ड़े
दर्जादुटो एकटुकु फाँक क'रे,
आमि याच्छि राङा घोड़ार 'परे
टग्बगिये तोमार पाशे पाशे।
रास्ता थेके घोड़ार खुरे खुरे
राङा धुलोय मेघ उड़िये आसे॥

सन्धे हल, सूर्य नामे पाटे,
एलेम येन जोड़ादिघिर माठे।
धू धू करे ये दिक-पाने चाइ
कोनोखाने जनमानव नाइ—
तुमि येन आपन मने ताइ
भय पेयेछ, भावछ 'एलेम कोथा!'
आमि बलछि, 'भय कोरो ना मा गो,
ऐ देखा याय मरा नदीर सोँता।'

चोर-काँटाते माठ रयेछे ढेके,
माझखानेते पथ गियेछे बेँके।

गोरु बाछुर नेइको कोनोखाने,
सन्धे हतेइ गेछे गाँयेर पाने—
आमरा कोथाय याच्छि के ता जाने,
अन्धकारे देखा याय ना भालो।
तुमि येन बलले आमाय डेके,
'दिघिर धारे ऐ ये किसेर आलो !'

एमन समय 'हाँरे रे-रे-रे-रे'
ऐ ये कारा आसतेछे डाक छेड़े।
तुमि भये पाल्किते एक कोणे
ठाकुर देव्ता स्मरण करछ मने,
बेयारागुलो पाशेर काँटावने
पाल्कि छेड़े काँपछे थरोथरो।
आमि येन तोमाय बलछि डेके,
'आमि आछि, भय केन मा, करो !'

हाते लाठि, माथाय झाँकड़ा चुल,
काने ताँदेर गोँजा जवार फुल।
आमि बलि, 'दाँड़ा, खब्रदार !
एक पा काछे आसिस यदि आर—
एइ चेये देख् आमार तलोयार,
टुकरो करे देब तोदेर सेरे।'
शुने तारा लम्फ दिये उठे
चेँचिये बले 'हाँरे रे-रे-रे-रे'॥

तुमि बलले, 'यास ने खोका ओरे।'
आमि बलि, 'देखो-ना चुप क'रे।'

छुटिये घोड़ा गेलेम तादेर माझे,
ढाल तलोयार झन्झनिये बाजे—
की भयानक लड़ाइ हल मा ये
शुने तोमार गाये देबे काँटा।
कत लोक ये पालिये गेल भये,
कत लोकेर माथा पड़ल काटा॥

एत लोकेर सङ्गे लड़ाइ क'रे
भावछ खोका गेलइ बुझि म'रे।
आमि तखन रक्त मेखे घेमे
बलछि एसे, 'लड़ाइ गेछे थेमे।'
तुमि शुने पालिक थेके नेमे
चुमो खेये निच्छ आमाय कोले—
बलछ, 'भाग्ये खोका सङ्गे छिल!
की दुर्दशाइ हत ता ना हले।'

रोज कत की घटे याहा-ताहा—
एमन केन सत्यि हय न आहा।
ठिक येन एक गल्प हत तबे
शुनत यारा अवाक हत सबे—
दादा बलत, 'केमन करे हबे,
खोकार गाये एत कि जोर आछे।'
पाड़ार लोके सबाइ बलत शुने,
'भाग्ये खोका छिल मायेर काछे।'

चलन्त कलिकाता

इँटेर टोपर माथाय परा
शहर कलिकाता
अटल हये ब'से आछे,
इँटेर आसन पाता।
फाल्गुने बय वसन्तवाय,
ना देय तारे नाड़ा।
वैशाखेते झड़ेर दिने
भित रहे तार खाड़ा।
शीतेर हाओयाय थामगुलोते
एकटु ना देय काँपन।
शीत वसन्ते समान भावे
करे ऋतुयापन।

अनेक दिनेर कथा ह'ल
स्वप्ने देखेछिनु
हठात् येन चेँचिये उठे
बलले आमाय बिनु
'चेये देखो,' छुटे देखि
चौकिखाना छेड़े—
कोल्काताटा च'ले बेड़ाय
इँटेर शरीर नेड़े।
उँचु छादे निचु छादे

पाँचिल-देश्रोया छादे
आकाश येन सश्रोयार ह'ये
चड़ेछे तार काँधे।
रास्ता गलि याच्छे चलि
अजगरेर दल,
ट्र्याम-गाड़ि तार पिठे चेपे
करछे टलोमल।
दोकान बाजार ओठे नामे
येन झड़ेर तरी,
चउरङ्गिर माठखाना ऐ
याच्छे सरि सरि।
मनुमेण्टे लेगेछे दोल,
उल्टिये वा फेले—
ख्यापा हातिर शुँड़ेर मतो
डाइने बाँये हेले।
इस्कुलेते छेलेरा सब
करतेछे है है,
अङ्केर बइ नृत्य करे
व्याकरणेर बइ।
मेझेर 'परे गड़िये बेड़ाय
इंरेजि बइखाना,
म्याप्गुलो सब पाखिर मतो
झापट मारे डाना।
घण्टाखाना दुले दुले
ढङ् ढङा ढङ् बाजे—
दिन च'ले याय, किछुते से
थामते पारे ना ये।
रान्नाघरे केँदे बले

रान्नाघरेर झि,
'लाउ कुमड़ो दौड़े बेड़ाय,
आमि करब की ?'

हाजार हाजार मानुष चेँचाय,
'आरे, थामो थामो—
कोथा येते कोथाय याबे,
केमन ए पाग्लामो !'
'आरे आरे, चलल कोथाय'
हाव्ड़ार ब्रिज बले,
'एकटुकु आर नड़ले आमि
पड़ब ख'से जले।'
बड़ोबाजार मेछोबाजार
चिनेबाजार थेके—
'स्थिर हये रओ' 'स्थिर हये रओ'
बले सबाइ हेँके।
आमि भाबछि याक्-ना केन,
भावना किछुइ नाइ—
कोलकाता नय दिल्लि याबे
किम्वा से बोम्बाइ।

हठात् किसेर आओयाज ह'ल,
तन्द्रा भेङे याय—
ताकिये देखि कोलकाता सेइ
आछे कोलकाताय।

पुजारिनी

नृपति बिम्बिसार
नमिया बुद्धे मागिया लइला
पादनखकरणा ताँर।
स्थापिया निभृत प्रासाद-कानने
ताहारि उपरे रचिला यतने
अति अपरूप शिलामय स्तूप,
शिल्पशोभार सार।

सन्ध्यावेलाय शुचिवास परि
राजवधू राजबाला
आसितेन फुल साजाये डालाय,
स्तूपपदमूले सोनार थालाय
आपनार हाते दितेन ज्वालाये
कनकप्रदीपमाला।

अजातशत्रु राजा हल यबे,
पितार आसने आसि
पितार धर्म शोणितेर स्रोते
मुछिया फेलिल राजपुरी हते,
सँपिल यज्ञ-अनल-आलोते
बौद्धशास्त्रराशि।

कहिला डाकिया अजातशत्रु
राजपुरनारी सबे,

"वेद ब्राह्मण राजा छाड़ा आर
किछु नाहि भवे पूजा करिबार,
एइ क'टि कथा जेन मने सार—
भुलिले विपद हबे।"

से दिन शारद-दिवा-अवसाने
श्रीमती नामे से दासी
पुण्यशीतल सलिले नाहिया
पुष्पप्रदीप थालाय बाहिया
राजमहिषीर चरणे चाहिया
नीरवे दाँड़ालो आसि।

शिहरि सभये महिषी कहिला,
"ए कथा नाहि कि मने,
अजातशत्रु करेछे रटना,
स्तुपे ये करिबे अर्घ्यरचना
शूलेर उपरे मरिबे से जना
अथवा निर्वासने।"

सेथा हते फिरि गेल चलि धीरे
वधू अमितार घरे।
समुखे राखिया स्वर्णमुकुर
बाँधितेछिल से दीर्घ चिकुर,
आँकितेछिल से यत्ने सिँदुर
सीमन्त-सीमा-परे।

श्रीमतीरे हेरि बाँकि गेल रेखा
काँपि गेल तार हात—
कहिल, "अबोध, की साहस-बले
एनेछिस पूजा, एखनि या चले—

के कोथा देखिबे, घटिबे ता हले
विषम विपदपात ।"

अस्तरविर रश्मि-आभाय
खोला जानालार धारे
कुमारी शुक्ला बसि एकाकिनी
पड़िते निरत काव्यकाहिनी;
चमकि उठिल शुनि किंकिणी,
चाहिया देखिल द्वारे ।

श्रीमतीरे हेरि पुँथि राखि भूमे
द्रुतपदे गेल काछे ।
कहे सावधाने तार काने काने,
"राजा आदेश आजि के ना जाने,
एमन करे कि मरणेर पाने
छुटिया चलिते आछे ।"

द्वार हते द्वारे फिरिल श्रीमती
लइया अर्घ्यथालि ।
"हे पुरवासिनि" सबे डाकि कय,
"हयेछे प्रभुर पूजार समय ।"—
शुनि घरे घरे केह पाय भय,
केह देय तारि गालि ।

दिवसेर शेष आलोक मिलालो
नगरसौध-'परे ।
पथ जनहीन आँधारे विलीन,
कलकोलाहल हये एल क्षीण,
आरतिघण्टा ध्वनिल प्राचीन
राजदेवालय-घरे ।

शारद निशिर स्वच्छ तिमिरे
तारा अगण्य ज्वले ।
सिंहदुयारे बाजिल विषाण,
वंदीरा धरे सन्ध्यार तान,
"मन्त्रणासभा हल समाधान"
द्वारी पुकारिया बले ।

एमन समये हेरिला चमकि
प्रासादे प्रहरि यत—
राजार विजन काननमाझारे
स्तूपपदमूले गहन आँधारे
ज्वलितेछे केन येन सारे सारे
प्रदीपमालार मतो !

मुक्तकृपाणे पुररक्षक
तखनि छुटिया आसि
शुधालो "के तुइ ओरे दुर्मति,
मरिबार तरे करिस आरति ।"
मधुर कण्ठे शुनिल, "श्रीमती,
आमि बुद्धेर दासी ।"

से दिन शुभ्र पाषाणफलके
पड़िल रक्तलिखा ।
से दिन शारद स्वच्छ निशीथे
प्रासादकानने नीरवे निभृते
स्तूपपदमूले निबिल चकिते
शेष आरतिर शिखा ।

आश्रमेर रूप ओ विकाश

आमार वयस यखन अल्प छिल तखनकार स्कुलेर रीति-प्रकृति एवं शिक्षक ओ छात्रदेर आचरण आमार पक्षे नितान्त दुःसह हये उठेछिल। तखनकार शिक्षाविधिर मध्ये कोनो रस छिल ना, किन्तु सेइटेइ आमार असहिष्णुतार एकमात्र कारण नय। कलकाता शहरे आमि प्राय बन्दी अवस्थाय छिलेम। किन्तु बाड़िते तबुओ बन्धनेर फाँके फाँके बाइरेर प्रकृतिर सङ्गे आमार एकटा आनन्देर सम्बन्ध जन्मे गियेछिल। बाड़िर दक्षिण दिकेर पुकुरेर जले सकाल-सन्ध्यार छाया एपार-ओपार करत—हाँसगुलो दित साँतार, गुगलि तुलत जले डुब दिये, आषाढ़े जले-भरा नीलवर्ण पुञ्ज पुञ्ज मेघ सारबाँधा नारकेलगाछेर माथार उपरे घनिये आनत वर्षार गम्भीर समारोह। दक्षिणेर दिके ये बागानटा छिल ऐखानेइ नाना रङे ऋतुर परे ऋतुर आमन्त्रण आसत उत्सुक दृष्टिर पथे आमार हृदयेर मध्ये।

शिशुर जीवनेर सङ्गे विश्वप्रकृतिर एइ आदिम कालेर योग, प्राणमनेर विकाशेर पक्षे एर ये कत बड़ो मूल्य ता आशा करि घोरतर शाहरिक लोककेओ बोझाबार दरकार नेइ। इस्कुल यखन नीरस पाठ्य, कठोर शासनविधि ओ प्रभुत्वप्रिय शिक्षकदेर निर्विचार अन्याय निर्ममताय विश्वेर सङ्गे बालकेर सेइ मिलनेर वैचित्र्यके चापा दिये तार दिनगुलिके निर्जीव निरालोक निष्ठुर करे तुलेछिल तखन प्रतिकारहीन वेदनाय मनेर मध्ये व्यर्थ विद्रोह उठेछिल एकान्त चञ्चल हये। यखन आमार वयस तेरो तखन एडुकेशन-विभागीय दाँड़ेर शिकल छिन्न करे बेरिये पड़ेछिलेम। तार पर थेके

ये विद्यालये हलेम भर्ति ताके यथार्थइ बला याय विश्वविद्यालय। सेखाने आमार छुटि छिल ना, केनना अविश्राम काजेर मध्येइ पेयेछि छुटि। कोनो कोनो दिन पड़ेछि रात दुटो पर्यन्त। तखनकार अप्रखर आलोकेर युगे रात्रे समस्त पाड़ा निस्तब्ध, माझे माझे शोना येत 'हरिबोल' श्मशानयात्रीदेर कण्ठ थेके। भेरेण्डा तेलेर सेजेर प्रदीपे दुटो सलतेर मध्ये एकटा सलते निबिये दितुम, ताते शिखार तेज ह्रास हत किन्तु हत आयुवृद्धि। माझे माझे अन्तःपुर थेके बड़दिदि एसे जोर करे आमार बइ केड़े निये आमाके पाठिये दितेन बिछानाय। तखन आमि ये सब बइ पड़बार चेष्टा करेछि कोनो कोनो गुरुजन ता आमार हाते देखे मने करेछेन स्पर्धा। शिक्षार कारागार थेके बेरिये एसे यखन शिक्षार स्वाधीनता पेलुम तखन काज बेड़े गेल अनेक बेशि अथच भार गेल कमे।

दीर्घकाल धरे शिक्षा सम्बन्धे आमार मनेर मध्ये ये मतटि सक्रिय छिल मोटेर उपर सेटि हच्छे एइ ये, शिक्षा हबे प्रतिदिनेर जीवनयात्रार निकट अङ्ग, चलबे तार सङ्गे एक ताले एक सुरे, सेटा क्लासनामधारी खाँचार जिनिस हबे ना। आर ये विश्वप्रकृति प्रतिनियत प्रत्यक्ष ओ अप्रत्यक्ष भावे आमादेर देहे मने शिक्षाविस्तार करे सेओ एर सङ्गे हबे मिलित। प्रकृतिर एइ शिक्षालयेर एकटा अङ्ग पर्यवेक्षण आर एकटा परीक्षा, एवं सकलेर चेये बड़ो तार काज प्राणेर मध्ये आनन्दसञ्चार। एइ गेल बाह्य प्रकृति। आर आछे देशेर अन्तःप्रकृति, तारओ विशेष रस आछे, रङ आछे, ध्वनि आछे। भारतवर्षेर चिरकालेर ये चित्त सेटार आश्रय संस्कृतभाषाय। एइ भाषार तीर्थपथ दिये आमरा देशेर चिन्मय प्रकृतिर स्पर्श पाब, ताके अन्तरे ग्रहण करब, शिक्षार एइ लक्ष्य मने आमार दृढ़ छिल। इंरेजि भाषार भितर दिये नाना ज्ञातव्य विषय आमरा जानते पारि, सेगुलि अत्यन्त प्रयोजनीय। किन्तु संस्कृत भाषार एकटा आनन्द आछे, से रञ्जित करे आमादेर मनेर आकाशके; तार मध्ये आछे एकटि गभीर वाणी, विश्वप्रकृतिर मतोइ से आमादेर शान्ति देय

एवं चिन्ताके मर्यादा दिये थाके ।

ये शिक्षातत्त्वके आमि श्रद्धा करि तार भूमिका हल एइ-खाने ।

तपोवनेर बाह्य अनुकरण याके बला येते पारे ता अग्राह्य, केनना एखनकार दिने ता असंगत, ता मिथ्ये । तार भितरकार सत्यटिके आधुनिक जीवनयात्रार आधारे प्रतिष्ठित करा चाइ ।

तार किछुकाल पूर्वे शान्तिनिकेतन आश्रम पितृदेव जन-साधारणके उत्सर्ग करे दियेछिलेन । विशेष नियम पालन करे अति-थिरा याते दुइ तिन दिन आध्यात्मिक शान्तिर साधना करते पारेन एइ छिल ताँर संकल्प । एजन्य उपासना-मन्दिर लाइब्रेरि ओ अन्यान्य व्यवस्था छिल यथोचित ।

शान्तिनिकेतने एसेइ आमार जीवने प्रथम सम्पूर्ण छाड़ा पेयेछि विश्वप्रकृतिर मध्ये । उपनयनेर परेइ आमि एखाने एसेछि । उपनयन-अनुष्ठाने भूर्भुवःस्वर्लोकेर मध्ये चेतनाके परिव्याप्त करबार ये दीक्षा पेयेछिलेम पितृदेवेर काछ थेके, एखाने विश्वदेवतार काछ थेके पेयेछिलेम सेइ दीक्षाइ । आमार जीवन नितान्तइ असम्पूर्ण थाकत प्रथम वयसे एइ सुयोग यदि आमार ना घटत । पितृदेव कोनो निषेध वा शासन दिये आमाके वेष्टन करेन नि । सकाल-वेलाय अल्प किछुक्षण ताँर काछे इंरेजि ओ संस्कृत पड़तेम, तार परे आमार अबाध छुटि । बोलपुर शहर तखन स्फीत हये ओठे नि । चालेर कलेर धोँया आकाशके कलुषित आर तार दुर्गन्ध समल करे नि मलय वातासके । माठेर माझखान दिये ये लाल माटिर पथ चले गेछे ताते लोक-चलाचल छिल अल्पइ । बाँधेर जल छिल परिपूर्ण प्रसारित, चार दिक थेके पलि-पड़ा चाषेर जमि ताके कोण-ठेसा करे आने नि । तार पश्चिमेर उँचु पाड़िर उपर अक्षुण्ण छिल घन तालगाछेर श्रेणी । याके आमरा खोयाइ बलि, अर्थात् काँकुरे जमिर मध्य दिये वर्षार जलधाराय आँकाबाँका उँचुनिचु खोदाइ पथ, से छिल नाना जातेर नाना आकृतिर पाथरे परिकीर्ण;

कोनोटाते शिर-काटा पातार छाप, कोनोटा लम्बा आँशओयाला काठेर टुकरोर मतो, कोनोटा स्फटिकेर दाना साजानो, कोनोटा अग्निगलित मसृण।

आमिओ समस्त दुपुरवेला खोयाइये प्रवेश करे नानारकम पाथर संग्रह करेछि, धन उपार्जनेर लोभे नय पाथर उपार्जन करतेइ। माठेर जल चुँइये सेइ खोयाइयेर एक जायगाय उपरेर डाङा थेके छोटो झरना झरे पड़त। सेखाने जमेछिल एकटि छोटो जलाशय, तार सादाटे घोला जल आमार पक्षे डुब दिये स्नान करबार मतो यथेष्ठ गभीर। सेइ डोबाटा उपचिये क्षीण स्वच्छ जलेर स्रोत झिर् झिर् करे बये येत नाना शाखाप्रशाखाय, छोटो छोटो माछ सेइ स्रोते उजानमुखे साँतार काटत। आमि जलेर धार बेये बेये आविष्कार करते बेरतुम सेइ शिशु-भूविभागेर नतुन नतुन बालखिल्य गिरिनदी।

खोयाइयेर स्थाने स्थाने येखाने माटि जमा सेखाने बेँटे बेँटे बुनो जाम बुनो खेजुर, कोथाओ-वा घन काश लम्बा हये उठेछे। उपरे दूरमाठे गोरु चरछे, साँओतालरा कोथाओ करछे चाष, कोथाओ चलेछे पथहीन प्रान्तरे आर्तस्वरे गोरुर गाड़ि, किन्तु एइ खोयाइयेर गह्वरे जनप्राणी नेइ। छायाय रौद्रे विचित्र लाल काँकरेर एइ निभृत जगत्, ना देय फल, ना देय फूल, ना उत्पन्न करे फसल; एखाने ना आछे कोनो जीवजन्तुर वासा; एखाने केवल देखि कोनो आर्टिस्ट-विधातार बिना कारणे एकखाना येमन-तेमन छवि आँकबार शख; उपरे मेघहीन नील आकाश रौद्रे पाण्डुर, आर नीचे लाल काँकरेर रङ पड़ेछे मोटा तूलिते नानारकमेर बाँकाचोरा बन्धुर रेखाय, सृष्टिकर्त्तार छेलेमानुषि छाड़ा एर मध्ये आर किछुइ देखा याय ना। बालकेर खेलार सङ्गेइ एर रचनार छन्देर मिल; एर पाहाड़, एर नदी, एर जलाशय, एर गुहागह्वर सबई बालकेर मनेरइ परिमापे।

आज शान्तिनिकेतने ये अतिप्राचीन युगल छातिम गाछ मालतीलताय आच्छन्न, एककाले मस्त माठेर मध्ये ऐ दुटि छाड़ा

आर गाछ छिल ना। ऐ गाछतला छिल डाकातेर आड्डा। छायाप्रत्याशी अनेक क्लान्त पथिक एइ छातिमतलाय हय धन नय प्राण नय दुइइ हारियेछे सेइ शिथिल राष्ट्रशासनेर काले।

एकदा एइ दुटिमात्र छातिमगाछेर छाया लक्ष्य करे दूरपथयात्री पथिकेरा विश्रामेर आशाय एखाने आसत। आमार पितृदेवओ रायपुरेर भुवन सिंहेर बाड़िते निमन्त्रण सेरे पालकि करे यखन एकदिन फिरछिलेन तखन माठेर माझखाने एइ दुटि गाछेर आह्वान ताँर मने एसे पौँचेछिल। एइखाने शान्तिर प्रत्याशाय रायपुरेर सिंहदेर काछ थेके एइ जमि तिनि दान ग्रहण करेछिलेन। एकखानि एकतला बाड़ि पत्तन करे एवं रूक्ष रिक्त भूमिते अनेकगुलि गाछ रोपण करे साधनार जन्य एखाने तिनि माझे माझे आश्रय ग्रहण करतेन।

प्रथमत सेइ बालकवयसे एखानकार प्रकृतिर काछ थेके ये आमन्त्रण पेयेछिलेम—एखानकार अनवरुद्ध आकाश ओ माठ, दूर हते प्रतिभात नीलाभ शाल ओ ताल-श्रेणीर समुच्च शाखापुञ्जे श्यामला शान्ति, स्मृतिर सम्पदरूपे चिरकाल आमार स्वभावे अन्तर्भुक्त हये गेछे। तार परे एइ आकाशे एइ आलोके देखेछि सकाले विकाले पितृदेवेर पूजार निःशब्द निवेदन, तार गभीर गाम्भीर्य। तखन एखाने आर किछुइ छिल ना, ना छिल एत गाछपाला, ना छिल मानुषेर एवं काजेर एत भिड़, केवल दूरव्यापी निस्तब्धतार मध्ये छिल एकटि निर्मल महिमा।

तार परे सेदिनकार बालक यखन यौवनेर प्रौढ़विभागे तखन बालकदेर शिक्षार तपोवन ताके दूरे खुँजते हबे केन। आमि पिताके गिये जानालेम, शान्तिनिकेतन एखन प्राय शून्य अवस्थाय, सेखाने यदि एकटि आदर्श विद्यालय स्थापन करते पारि ता हले ताके सार्थकता देओया हय। तिनि तखनइ उत्साहेर सङ्गे सम्मति दिलेन।

तार परे शुधु आमादेर इच्छा नय, कालेर धर्म काज करछे; एनेछे कत परिबर्तन, कत नतुन आशा ओ व्यर्थता, कत सुहृदेर अभावनीय आत्मनिवेदन, कत अजाना लोकेर अहैतुक शत्रुता, कत

मिथ्या निन्दा ओ प्रशंसा, कत दुःसाध्य समस्या—आर्थिक ओ पार-
मार्थिक। पारितोषिक पाइ वा ना पाइ निजेर क्षति करेछि साध्येर
शेष सीमा पर्यन्त—अवशेषे क्लान्त देह ओ जीर्ण स्वास्थ्य निये
आमारओ विदाय नेबार दिन एल—प्रणाम करे याइ ताँके यिनि
सुदीर्घ कठोर दुर्गम पथे आमाके एतकाल चालना करे निये एसेछेन।
एइ एतकालेर साधनार विफलता प्रकाश पाय बाइरे, एर सार्थकतार
सम्पूर्ण प्रमाण थेके याय अलिखित इतिहासेर अदृश्य अक्षरे।

सुखदुःख

बसेछे आज रथेर तलाय
स्नानयात्रार मेला।
सकाल थेके बादल हल,
फुरिये एल वेला।
आजके दिनेर मेलामेशा,
यत खुशि, यतइ नेशा,
सबार चेये आनन्दमय
ओइ मेयेटिर हासि—
एक पयसाय किनेछे ओ
तालापातार एक बाँशि।
बाजे बाँशि, पातार बाँशी
आनदस्वरे
हाजार लोकेर हर्षध्वनि
सबार उपरे।

ठाकुरबाड़ि ठेलाठेलि
लोकेर नाहि शेष,
अविश्रान्त वृष्टिधाराय
भेसे याय रे देश।
आजके दिनेर दुःख यत
नाइ रे दुःख उहार मतो
ऐ ये छेले कातर चोखे
दोकान-पाने चाहि—

एकटि राङा लाठि किनबे
एकटि पयसा नाहि ।
चेये आछे निमेषहारा
नयन अरुण,
हाजार लोकेर मेलाटिरे
करेछे करुण ।।

स्पर्शमणि

नदीतीरे वृन्दावने सनातन एकमने
जपिछेन नाम,
हेनकाले दीनवेशे ब्राह्मण चरणे एसे
करिल प्रणाम।
शुधालेन सनातन, "कोथा हते आगमन,
की नाम ठाकुर।"
विप्र कहे, "किवा कब, पेयेछि दर्शन तव
भ्रमि बहु दूर।
जीवन आमार नाम, मानकरे मोर धाम,
जिला वर्धमाने;
एत बड़ भाग्यहत दीनहीन मोर मतो
नाइ कोनोखाने।
जमिजमा आछे किछु, करे आछि माथा निचु,
अल्पस्वल्प पाइ।
क्रियाकर्म-यज्ञयागे बहु ख्याति छिल आगे,
आज किछु नाइ।
आपन उन्नति-लागि शिव-काछे वर मागि
करि आराधना—
एक दिन निशिभोरे स्वप्ने देव कन मोरे
'पूरिबे प्रार्थना—
याओ यमुनार तीर सनातन गोस्वामीर
धरो दुटि पाय;

তাঁরে পিতা বলি মেনো তাঁরি হাতে আছে জেনো
ধনের উপায়।' ''

শুনি কথা সনাতন ভাবিয়া আকুল হন,
'কী আছে আমার।
যাহা ছিল সে সকলি ফেলিয়া এসেছি চলি
ভিক্ষামাত্র সার।'
সহসা বিস্মৃতি ছুটে, সাধু ফুকারিয়া উঠে,
"ঠিক বটে ঠিক!
এক দিন নদীতটে কুড়ায় পেয়েছি বটে
পরশমানিক।
যদি কভু লাগে দানে সেই ভেবে ওইখানে
পুঁতেছি বালুতে;
নিয়ে যাও হে ঠাকুর, দুঃখ তব হবে দূর
ছুঁতে নাহি ছুঁতে।"

বিপ্র তাড়াতাড়ি আসি খুঁড়িয়া বালুকারাশি
পাইল সে মণি;
লোহার মাদুলি দুটি সোনা হয়ে উঠে ফুটি
ছুঁইল যেমনি।
ব্রাহ্মণ বালুর 'পরে বিস্ময়ে বসিয়া পড়ে—
ভাবে নিজে নিজে।
যমুনা কল্লোলগানে চিন্তিতের কানে কানে
কহে কত কী যে।

নদীপারে রক্তচ্ছবি দিনান্তের ক্লান্ত রবি
গেল অস্তাচলে;
তখন ব্রাহ্মণ উঠে সাধুর চরণে লুটে
কহে অশ্রুজলে,

"ये धने हइया धनी मणिरे मानो ना मणि
ताहारि खानिक
मागि आमि नतशिरे ।" एत बलि नदीनीरे
फेलिल मानिक ।

बँगला शब्दों के उच्चारण की कुछ विशेषताएँ

विश्वकवि रवीन्द्रनाथ की १०१ कविताओं का यह संग्रह नागराक्षरों में प्रकाशित हो रहा है। बँगला कविता में आये हुए शब्द हू-ब-हू जैसे के तैसे हिन्दी में लिखे गए हैं। लेकिन बँगला उच्चारण की अपनी विशेषताएँ हैं। हिन्दी उच्चारण से उसमें अन्तर है। बँगला शब्दों के ठीक-ठीक उच्चारण के लिए उन विशेषताओं की जानकारी प्राप्त कर लेना आवश्यक है। पाठकों के सुभीते के लिए बँगला उच्चारण की कुछ विशेषताओं पर नीचे प्रकाश डालने की चेष्टा की जा रही है:

(१) बँगला में 'अ' का उच्चारण हिन्दी के 'अ' जैसा नहीं होता। वह 'अ' और 'ओ' के बीच में होता है। जैसे अंग्रेजी के 'not' में 'o'। बंगला में लिखते हैं 'खाब', लेकिन पढ़ते हैं 'खाबो' जैसा।

(२) ह्रस्व और दीर्घ इ, उ के उच्चारण में बंगला में काफी स्वतन्त्रता हैं। यह लचीलापन हिन्दी में नहीं है। दीर्घ ई और ऊ अगर पद के आदि में हों तो उनका उच्चारण प्रायः ह्रस्व जैसा होता है। जैसे 'ईश्वर' का उच्चारण 'इश्वर' और 'पूजा' का 'पुजा' होगा।

(३) एकार का उच्चारण 'ए' और 'ऐ' के बीच जैसा होता है। जैसे 'एक' को 'ऐक' जैसा पढ़ा जाता है।

(४) ऐकार का उच्चारण 'ओइ' जैसा होता है। जैसे, 'ऐकतान'—ओइकतान।

(५) अनुस्वार के उच्चारण में 'ग' का अंश निहित रहता है। जैसे, हिमांशु—हिमांग्शु।

(६) हिन्दी के समान, पद का अन्त्य वर्ण प्रायः हलन्त होता है। जैसे, आमार—आमार्, आँधार—आँधार्। लेकिन कविता में छन्दानुरोध से 'अ' के उच्चारण का भी अनुसरण होता है। जैसे 'बकुल-बागान' में 'बकुल' का उच्चारण बकुल (ो) जैसा भी हो सकता है।

(७) बँगला में 'क्ष' का उच्चारण पद के आदि में बराबर 'ख' होगा।

जैसे, क्षिति—खिति; क्षमा—खमा। लेकिन अन्यत्र 'क्ष' का उच्चारण क्ख' होगा। जैसे, लक्षण—लक्खण।

(८) बँगला में 'ण' और 'न' दोनों का उच्चारण सदा 'न' ही होता है।

(९) बँगला में 'ब' और 'व' का अन्तर नहीं है। ये दोनों ही 'ब' पढ़े जाते हैं। तत्सम शब्दों के लिखने में भले ही 'व' को 'व' ही लिखा जाय, लेकिन उसका उच्चारण 'ब' होता है। जैसे लिखा 'विवश' जाता है लेकिन पढ़ा 'बिबश' जायगा।

(१०) अगर किसी दूसरी भाषा का कोई शब्द अपनाना पड़े और उसमें 'व' का उच्चारण रहे तो उसके लिए बंगला में 'ओय' लिखते हैं। जैसे, 'तेवारी' का 'तेओयारी'; 'हवा' का 'हओया'।

(११) 'य' के उच्चारण में एक विशेषता है। जब 'य' पद के आदि में हो तो उसका उच्चारण 'ज' होता है। जैसे, यात्रा—जात्रा; योग—जोग। लेकिन 'य' अगर पद के मध्य या अन्त में हो तो उसे 'य' ही पढ़ेंगे। जैसे, नियम—नियम; नयन—नयन; समय—समय।

(१२) बँगला में तीनों सकारों का उच्चारण तालव्य 'श' की तरह होता है लेकिन दन्त्य 'स' के साथ अगर किसी व्यञ्जन वर्ण का योग हो तो उसका उच्चारण 'स' ही होता है। जैसे, स्तब्ध—स्तब्ध; स्निग्ध—स्निग्ध।

(१३) अगर मकार के साथ किसी वर्ण का योग हो तो वह वर्ण सानुनासिक द्वित्व होकर मकार का लोप कर देता है। जैसे, छद्म—छद्दँ; पद्म—पद्दँ। लेकिन पद के आदि में ऐसा होने पर द्वित्व नहीं होता। जैसे, स्मरण—सँरण; स्मृति— सृँति।

(१४) अगर यकार अथवा वकार के साथ किसी वर्ण का योग हो तो वह द्वित्व होकर यकार-वकार का लोप कर देगा। जैसे, भृत्य—भृत्त; नित्य—नित्त; वाद्य—बाद्द। लेकिन पद के आदि में केवल वकार का लोप हो जाता है। जैसे, द्वार—दार; ज्वाला—जाला।

(१५) अगर यकार में रेफ हो तो पद के मध्य अथवा अन्त में रहने पर भी जकार हो जाता है। जैसे, सूर्य्य—सूर्ज्ज; धैर्य्य—धैर्ज्ज।

(१६) प्रस्तुत संग्रह में 'व' के बदले 'ओय' ही लिखा हुआ है, अतएव जहाँ पर 'ओय' हो वहाँ 'व' ही पढ़ना चाहिए। जैसे, पाओया—पावा; खाओया—खावा; याओया—जावा।

बँगला व्याकरण-सम्बन्धी कुछ ज्ञातव्य बातें

ऊपर बँगला शब्दों की उच्चारण-सम्बन्धी विशेषताओं पर हम प्रकाश डाल चुके हैं। अब बँगला-व्याकरण की चर्चा करने जा रहे हैं। व्याकरण की थोड़ी-सी जानकारी प्राप्त कर लेना पाठकों के लिए अत्यन्त उपादेय सिद्ध होगा।

(क) क्रियारूप

बँगला में क्रिया के विभिन्न रूप हैं। क्रिया के इन विविध रूपों में जो अपरिवर्तित अंश है वही धातु है। धातु निर्णय का सहज उपाय यह है कि उत्तम पुरुष के वर्तमान काल के धातुरूप के अन्तिम 'इ' को हटा देने से जो रूप रह जाता है वही धातु है। जैसे, आमि जाइ (मैं जाता हूँ)। इनमें 'जाइ' का 'इ' हटाने पर 'जा' रह जाता है। 'जा' धातु है। इसी प्रकार से 'आमि कराइ' में 'करा' धातु है।

बँगला में धातुओं के दो रूप हैं: (१) साधु और (२) चलित। 'लिखा', 'शुना' साधु रूप है और 'लेखा' 'शोना' चलित रूप। क्रियापद 'कहियाछे' साधु रूप है और 'कयेछे' चलित रूप है। अर्थ की दृष्टि से इन दोनों में कोई भेद नहीं है। बोलने में चलित रूप का प्रयोग होता है और लिखने में साधु रूप का। वैसे आजकल के लेखक लिखने में भी चलित रूप का ही प्रयोग करते हैं।

सकर्मक और अकर्मक के अलावा बँगला में क्रिया के दो भेद और हैं समापिका और असमापिका।

धातु में जिस विभक्ति के याग करने से समापिका क्रियापद बनता है उसे 'तिङ्' कहते हैं और उस क्रियापद को 'तिङन्त' पद कहते हैं। जैसे, कर् धातु से तिङन्त पद करे, करेन, करिस, करि आदि। इसी प्रकार से जिस प्रत्यय के योग करने से असमापिका क्रियापद अथवा विशेष्य-विशेषण बने उसे 'कृत' कहते हैं और क्रियापद को 'कृदन्त' पद कहते हैं। जैसे कर् धातु से कृदन्त पद (असमापिका क्रिया) करिते (करते), करिया (करके), करते, करे आदि।

(णिजन्त धातु) प्रेरणार्थक धातु बनाने के लिए बँगला के धातुरूप में 'आ' प्रत्यय लगाते हैं; जैसे कर् से णिजन्त धातु 'करा' होगा।

बँगला में कर्ता के लिङ्ग के अनुसार क्रिया नहीं बदलती। जैसे, मेयेरा जाछे (लड़कियाँ जा रही हैं); छेलेरा जाछे (लड़के जा रहे हैं)।

क्रिया के तीन काल हैं: भूत, भविष्य और वर्तमान। लेकिन बंगला

की क्रिया का काल-विभाग हिन्दी की तरह नहीं होता।

बँगला के क्रियापद में वचन-भेद नहीं है। जैसे, से जाइतेछे (वह जा रहा है), ताहारा जाइतेछे (वे लोग जा रहे हैं)।

पुरुष तीन प्रकार के हैं : प्रथम, मध्यम और उत्तम। प्रथम पुरुष के गौरवार्थक और सामान्य दो रूप हैं। जैसे, तिनि करेन (वे करते हैं), से करे (वह करता है)। मध्यम पुरुष के गौरवार्थक, सामान्य और तुच्छ तीन रूप हैं। जैसे, आपनि करेन (आप करते हैं), तुमि कर (तुम करते हो) तथा तुइ करिस (तू करता है)। उत्तम पुरुष का केवल एक रूप है। जैसे, आमि करि (मैं करता हूँ)।

बँगला के काल-भेद तथा नाम निम्नलिखित हैं। बँगला व्याकरणों में दो प्रकार से उनके नाम दिये हुए हैं। नित्यप्रवृत्त, विशुद्ध, अद्यतन, अनद्यतन, परोक्ष, भूत-सामीप्य, वर्तमान-सामीप्य आदि नाम संस्कृत व्याकरण के अनुकरण पर रखे गए हैं। सहज भाव से समझने के लिए उनका नामकरण निम्नलिखित ढंग से किया जाता है :

नाम	उदाहरण
नित्यवृत्त वर्तमान	करे (करता है)।
घटमान ,,	करितेछे (कर रहा है)।
पुराघटित ,,	करियाछे (किया है)।
अनुज्ञा ,,	कर (करो)।
साधारण अतीत	करिल (किया)।
नित्यवृत्त ,,	करित (करता)।
घटमान ,,	करितेछिल (कर रहा था)।
पुराघटित ,,	करियाछिल (किया था)।
साधारण भविष्यत्	करिबे (करेगा)।
अनुज्ञा ,,	करिओ (करोगे)।

क्रिया की विभक्तियाँ

(चलित)

विभक्ति का नाम	प्रथम पुरुष सामान्य	प्रथम और मध्यम गौरवार्थक	मध्यम सामान्य	मध्यम तुच्छ	उत्तम पुरुष
नित्यवृत्त वर्तमान	ए	एन	अ	इस	इ
घटमान ,,	छे	छेन	छ	छिस	छि
पुराघटित ,,	एछे	एछेन	एछ	एछिस	एछि

अनुज्ञा वर्तमान	उक	उन	अ	—	—
साधारण अतीत	ले	लेन	ले	लि	लाम
नित्यवृत्त ,,	त	तेन	ते	तिस	ताम
घटमान ,,	छिल	छिलेन	छिले	छिलि	छिलाम
पुराघटित ,,	एछिल	एछिलेन	एछिले	एछिलि	एछिलाम
साधारण भविष्यत्	बे	बेन	बे	बि	ब (बो)।
अनुज्ञा ,,	बे	बेन	ओ	इस	—

(साधु)

विभक्ति का नाम	प्रथम पुरुष सामान्य	प्रथम और मध्यम गौरवार्थक	मध्यम सामान्य	मध्यम तुच्छ	उत्तम पुरुष
नित्यवृत्त वर्तमान	ए	एन	अ	इस	इ
घटमान ,,	इतेछे	इतेछेन	इतेछ	इतेछिस	इतेछि
पुराघटित ,,	इयाछे	इयाछेन	इयाछ	इयाछिस	इयाछि
अनुज्ञा ,,	उक	उन	अ	—	—
साधारण अतीत	इल	इलेन	इले	इलि	इलाम
नित्यवृत्त ,,	इत	इतेन	इते	इतिस	इताम
घटमान ,,	इते-छिल	इते-छिलेन	इते-छिले	इते-छिलि	इते-छिलाम
पुराघटित ,,	इया-छिल	इया-छिलेन	इया-छिले	इया-छिलि	इया-छिलाम
साधारण भविष्यत्	इबे	इबेन	इबे	इबि	इब
अनुज्ञा ,,	इबे	इबेन	इओ (इयो)	इस	—

क्रिया की इन विभक्तियों के प्रयोग को निम्नलिखित उदाहरण से समझा जा सकता है।

'काट्' (काटना) धातु के नित्यवृत्त वर्तमान का चलित और साधु रूप निम्नलिखित होगा—

चलित	साधु
काटे, काटेन, काट, काटिस, काटि	चलित जैसा ही होगा

घटमान अतीत का रूप निम्नलिखित होगा—

चलित रूप—काटछिल, काटछिलेन, काटछिले, काटछिलि, तथा काटछिलाम

साधु रूप—काटितेछिल, काटितेछिलेन, काटितेछिले, काटितेछिलि, तथा काटितेछिलाम।

साधारण भविष्यत् का रूप निम्नलिखित होगा।

चलित रूप—काटब्रे, काटबेन, काटबे, काटबि, काटबो।

साधु रूप—काटिबे, काटिबेन, काटिबे, काटिबि, काटिबो। इसी प्रकार से अन्य रूप भी समझे जा सकते हैं।

बहुत लोग 'लाम' के स्थान पर 'लुम' अथवा 'लेम' का प्रयोग करते हैं। जैसे, 'काटलाम' (काटा) के बदले 'काटलुम' अथवा 'काटलेम' लिखते हैं।

इसी प्रकार से 'ताम' के बदले 'तुम' अथवा 'तेम' का प्रयोग करते हैं। जैसे, 'काटताम' (काटता) के स्थान पर 'काटतुम' अथवा 'काटतेम लिखते हैं।

साधारण अतीत में सकर्मक क्रिया में 'ले' तथा अकर्मक क्रिया में 'ल' लगाते हैं। यह चलित रूप में होता है। जैसे, करले (किया), खेले (खाया), दिले (दिया) तथा गेले (गया), शुल (सोया), दौड़ल (दौड़ा)। वैसे इसका व्यतिक्रम भी देखा जाता है। बहुत लोग 'करल' (किया), 'बलल' (बोला) आदि लिखते हैं।

(ख) कारक

बँगला में कारक सात हैं: कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, सम्बन्ध तथा अधिकरण।

कारक की कई विभक्तियों को मूल विभक्ति कहा जा सकता है। वैसे प्रयोग में आने वाली कई विभक्तियाँ मुख्यतः कर्ता, कर्म, सम्बन्ध और अधिकरण-सूचक हैं। जैसे के, र, ते क्रमशः कर्म, सम्बन्ध और अधिकरण कारक की विभक्तियाँ हैं। प्रत्येक कारक की अलग-अलग विभक्तियाँ नहीं हैं। निम्न-लिखित कई विभक्तियाँ भिन्न-भिन्न कारकों में प्रयुक्त होती हैं:

विभक्ति	कारकों के नाम
ए, य, ते, ये	कर्ता, करण, सम्प्रदान, अधिकरण
रा, एरा	कर्ता (बहुवचन)
दिगके, दिके, देर	कर्म, सम्प्रदान (बहुवचन)
के, रे	कर्म, सम्प्रदान (एकवचन)
एर (येर), र, कार	सम्बन्ध (एकवचन)
दिगेर, देर	सम्बन्ध (बहुवचन)

देर	कर्म (बहुवचन)
एते	अधिकरण (एकवचन)

बहुत स्थानों पर पद योग करने से कारक निष्पन्न होता है। जैसे, बाड़ी थेके (घर से), पेन्सिल दिये (पेन्सिल से), मानुषेर द्वारा (मनुष्य से) आदि। द्वारा, दिये आदि करण कारक सूचक हैं तथा थेके, अपादान कारक सूचक। लेकिन द्वारा, दिया आदि को अव्यय मानना उचित है। इनका प्रयोग विभक्ति के बाद भी मिलता है। जैसे, मन्त्रेर द्वारा (मन्त्र से)। इसमें 'एर' सम्बन्ध-कारक की विभक्ति है उसके बाद 'द्वारा' का प्रयोग हुआ है।

टा और टि का प्रयोग व्यक्ति, जन्तु अथवा पदार्थवाचक शब्दों के साथ होता है। जैसे, छेलेटा (लड़का), कविताटि (कविता)। इसमें अर्थ ज्यों का त्यों रहा। टा का प्रयोग अनादरसूचक है और 'टि' का प्रयोग आदरसूचक।

गुला, गुलो, गुलि का प्रयोग व्यक्ति, जन्तु अथवा पदार्थवाचक शब्दों के साथ होता है। इनसे बहुवचन सूचित होता है। 'गुला' 'गुलो' अनादरसूचक हैं और 'गुलि' आदरसूचक। लोकगुलो (लोग सब) जिनिसगुलो (वस्तुएँ), मेयेगुलि (लड़कियाँ)।

'खाना', 'खानि' का प्रयोग केवल पदार्थवाचक शब्दों के साथ होता है। 'खाना' अनादरसूचक है और 'खानि' आदरसूचक। जैसे मुखखानि (मुख), कागज-खाना (कागज)।

'गण', 'र', 'एरा' (येरा) का प्रयोग व्यक्ति, जन्तु अथवा बड़ी वस्तुओं के लिए होता है। जैसे देवगण, छेलेरा (लड़के)।

'ए', 'य', 'ते', 'ये' के प्रयोग की विधि इस प्रकार है: अकारान्त अथवा व्यञ्जनान्त शब्द हो तो 'ए' का प्रयोग होता है। जैसे मानुषे, विद्युते। आकारान्त अथवा एकारान्त शब्द हो तो 'य' और 'ते' का व्यवहार होता है। जैसे छेलेय, सेवाय। अगर इनसे भिन्न स्वरान्त शब्द हो तो 'ते' का व्यवहार होता है। जैसे, छुरिते। एकाक्षर शब्द अथवा अन्त में दो स्वर आएँ तो 'ये' का प्रयोग होता है। जैसे, गाये (शरीर में), दइये (दही में)।

विभिन्न कारकों में विभक्ति के प्रयोग

कर्ता कारक :

साधारणतः कर्ता, एकवचन में कोई विभक्ति नहीं होती। जैसे, राम खाछे (राम खा रहा है)।

कर्तृवाक्य के प्रयोग से कभी-कभी कर्ता में 'ए' विभक्ति लगती है।

जैसे, लोके बले (लोग कहते हैं)।

कर्ता अनिर्दिष्ट होने पर अथवा कर्ता में करण या अधिकरण का भाव रहने पर ए, य, ते, ये, योग करते हैं। जैसे, पोकाय केटेछे (कीड़े ने काटा है), वेदे बले (वेद में कहा गया है)। वृष्टिते भासिये दिले (वर्षा से बहा दिया)।

एकजातीय क्रिया करते समय 'ए' का प्रयोग होता है। जैसे, पण्डिते पण्डिते तर्क चलेछे (पण्डितों में तर्क हो रहा है)।

बहुवचन में गण, रा, एरा (येरा) का प्रयोग होता है। जैसे, पण्डितेरा बलेन (पण्डित लोग कहते हैं)। आदरसूचक या समूहबोधक क्रिया होने पर रा के बदले एरा का प्रयोग होता है। जैसे, बउएरा (बहुएँ)। गुलो, गुला, गुलि का प्रयोग बहुवचन में होता है।

कर्म कारक :

एकवचन में साधारणतः कोई विभक्ति नहीं होती। जैसे, डाक्तार डाक (डाक्टर को बुलाओ) वैसे इसका कोई निर्दिष्ट नियम नहीं है। कभी विभक्ति का लोप होता है, कभी नहीं होता। जैसे, भगवानके डाक (भगवान को पुकारो)।

कर्मपद प्राणिवाचक अथवा व्यक्ति का नाम हो तो 'के' विभक्ति का प्रयोग होता है और अप्राणिवाचक या क्षुद्र प्राणिवाचक शब्दों में 'के' का प्रयोग नहीं होता। पद्य में रे, ए, य का प्रयोग होता है। जैसे, गुरुरे डाकिया (गुरु को पुकार कर), गुरुजने कर नति (गुरुजन को प्रणाम करो)। बहुवचन होने पर गणके, दिगके, दिके, देर का प्रयोग होता है।

द्विकर्मक क्रिया के गौण कर्म में के, दिगके, दिके, देर का प्रयोग होता है। मुख्य कर्म में विभक्ति नहीं लगाते। जैसे, छेलेके दुध दाओ (लड़के को दूध दो)।

कर्मवाच्य के प्रयोग पर कर्म में कभी-कभी 'के' विभक्ति होती है। जैसे, रामके बला हय नाइ (राम से कहा नहीं गया है)।

कर्मकर्तृवाच्य के प्रयोग पर भी कर्म में कभी-कभी 'के' विभक्ति होती है। जैसे, तोमाके कृष देखाइतेछे (तुम दुबले दीखते हो)।

करण कारक :

करण कारक में साधारणतः द्वारा, दिया विभक्ति होती है और कभी-कभी इन दोनों के बदले 'हइते' विभक्ति प्रयुक्त होती है। कभी-कभी 'ए' विभक्ति भी होती है।

'द्वारा' और 'दिया' अथवा 'दिये' का प्रयोग व्यक्ति, जन्तु अथवा पदार्थवाचक शब्दों में होता है। सम्बन्ध-विभक्ति के बाद भी 'द्वारा' का प्रयोग होता है। व्यक्ति वाचक शब्दों के बहुवचन में 'दिया' अथवा 'दिये' का प्रयोग नहीं होता। जैसे, भृत्य द्वारा, ईश्वर द्वारा, साबान दिया (साबुन से)।

केवल व्यक्तिवाचक शब्दों में कर्म-विभक्ति के बाद 'दिया' अथवा 'दिये' का व्यवहार होता है। जैसे, चाकरदिगके दिये (नौकरों से), चाकरके दिये (नौकर से)।

केवल जन्तु अथवा पदार्थवाचक शब्दों के बाद ए, य, ते, ये, जोड़ा जाता है। जैसे, सेवाय तुष्ट (सेवा से तुष्ट), एइ कल गरुते चले (यह कल बैल से चलता है)।

सम्प्रदान कारक :

सम्प्रदान कारक की विभक्ति प्रायः कर्म कारक के समान है। जैसे, दरिद्रके धन दाओ [दरिद्र को (के लिए) धन दो]।

कभी-कभी ए, य, ते, ये का भी व्यवहार होता है।

अपादान कारक :

इस कारक की विभक्तियाँ हइते, ह'ते, थेके, अपेक्षा आदि हैं। जैसे, गृह हइते (गृह से)। तीन दिन थेके (तीन दिनों से)।

कभी-कभी 'दिया' का भी व्यवहार होता है। जैसे, ताहार मुख दिया एमन कथा बाहिर हइबे ना (उसके मुँह से ऐसी बात नहीं निकल सकती)।

'निकट' आदि शब्दों में अपादान कारक की विभक्ति विकल्प से लोप होती है। जैसे, आमि ताहार निकट ए कथा शुनियाछि (मैंने उससे ऐसी बात सुना है)।

तुलना करते समय सम्बन्ध कारक की विभक्ति के बाद अपेक्षा, चेये, चाइते आदि लगाते हैं। जैसे, तोमार चेये वृद्ध (तुमसे अधिक वृद्ध)।

कभी-कभी सप्तमी की 'ए' विभक्ति भी अपादान में प्रयुक्त होती है। जैसे, मेघे वृष्टि हय (मेघ से वृष्टि होती है)।

सम्बन्ध कारक :

र, एर, इस कारक की विभक्तियाँ हैं। साधारणतः शब्दों के अन्त में 'र' योग करने से सम्बन्ध कारक सूचित होता है। 'एर' का योग शब्दों में उस समय होता है जब उनका एकवचन का रूप हो तथा वे अकारान्त, व्यञ्जनान्त, एकाक्षर शब्द हों अथवा उनके अन्त में दो स्वर हों। जैसे, मायेर (माँका),

जामाइयेर (दामाद का)। 'र' विभक्ति का उदाहरण—दयार (दया का), चुरिर (चोरी का)।

'र' विभक्ति का प्रयोग उस हालत में भी होता है जब कि मनुष्य के नाम का उच्चारण अकारान्त हो। जैसे, अमूल्यर (अमूल्य का)। लेकिन शिव का शिवेर होगा; क्योंकि शिव के उच्चारण में व हलन्त की तरह उच्चरित होता है।

विशेषण-पदों में केवल 'र' योग करते हैं। जैसे, भालर जन्य (अच्छे के लिए)।

समय अथवा अवस्थान वाचक शब्दों में 'कार' योग करते हैं। जैसे, आजिकार (आज का), उपरकार (ऊपर का)।

व्यक्ति, जन्तु अथवा बड़ी वस्तु वाचक बहुवचन शब्दों में देर, दिगेर, गणेर का योग करते हैं। जैसे, छेलेदेर (लड़कों का), जन्तुदिगेर (जन्तुओं का)। व्यक्ति, जन्तु तथा पदार्थवाचक शब्दों में गुलार, गुलोर, गुलिर, सकलेर, समूहेर आदि का प्रयोग होता है। जैसे, मेयेगुलिर (लड़कियों का) जिनिसगुलोर (वस्तुओं का), प्राणि सकलेर (प्राणियों का)।

अधिकरण कारक :

ए, य, ते, ये, अधिकरण कारक की विभक्तियाँ हैं।

अधिकरण दो प्रकार के हैं : कालबोधक और आधारसूचक। क्रिया जब किसी काल में समाप्त होती है तब उसे कालवाचक अधिकरण कहते हैं और जब किसी स्थान पर समाप्त होती है तब वहाँ आधार अधिकरण का भाव आ जाता है। 'प्रभाते आमरा बेड़ाइया थाकि' (भोर में हम लोग टहला करते हैं)।—यह कालवाचक अधिकरण का उदाहरण है।

आधार अधिकरण तीन तरह के हैं—ऐकदेशिक, वैषयिक और अभिव्यापक।

ऐकदेशिक—ऋषि बने थाकितेन (ऋषि वन में रहते थे)।

वैषयिक—आमि विद्याय आपनार निकट बालक (विद्या में मैं आपके निकट बालक हूँ)।

अभिव्यापक—तिले तैल आछे (तिल में तेल है)।

कालवाचक शब्द के बाद कभी विभक्ति योग नहीं करते। जैसे, एक समय आमि बिश क्रोश हाँटिते पारिताम (एक समय था जब मैं बीस कोस चला जाता था); ए समय से कोथाय (इस समय वह कहाँ है)। लेकिन

अगर विशेषण पद समयवाचक शब्द के पहले न हो तो विभक्ति अवश्य प्रयुक्त होती है। जैसे, दिने घुमाइओो ना (दिन में न सोना)।

क्रिया गमनार्थक होने पर कभी-कभी अधिकरण की विभक्ति नहीं लगती। जैसे, काशी पाठाओ (काशी भेजो); कलिकाता याइब (कलकत्ता जाऊँगा)।

बहुवचन में गण, गुला, गुलो, गुलि, सकल आदि के बाद विभक्ति का योग होता है। जैसे, कथागुलिते (बातों में); जीवगणे (जीवों में)।

(ग) सर्वनाम

बँगला में सर्वनाम के मुख्य भेद निम्नलिखित हैं:

पुरुषवाचक सर्वनाम—आमि (मैं), तुमि (तुम); से (वह) इत्यादि।

निर्देशक वा निर्णयसूचक सर्वनाम—ताहा (तद्); इहा (यह); उहा (वह) इत्यादि।

प्रश्नवाचक सर्वनाम—कि (क्या), के (कौन) आदि।

सापेक्ष वा समुच्चयी सर्वनाम—ये

अनिर्देश वा अनिश्चयसूचक सर्वनाम—केह, केउ (कोई) आदि।

आत्मवाचक सर्वनाम—निजे, आपनि, स्वयं आदि।

साकल्यवाचक सर्वनाम—उभय, सकल, सब आदि।

पुरुषवाचक सर्वनाम तीन प्रकार के हैं:—उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष, प्रथम पुरुष।

कर्ताकारक के एकवचन में इन पुरुषों के निम्नलिखित रूप हैं:

	सामान्य	तुच्छ	गौरवार्थ
उत्तम पुरुष	आमि (मैं)		
मध्यम पुरुष	तुमि (तुम)	तुइ (तू)	आपनि (आप)
प्रथम पुरुष	से, ताहा, ता (वह)		तिनि (वे)
	ये, याहा, या (जो)		यिनि (जो)
	के (कौन), कि (क्या)		के, किनि (कौन)
	ए, इहा (यह)		इनि (ये)
	ओ, उहा (वह)		उनि (वे)

व्यक्तिबोधक—तिनि, यिनि, के (किनि), इनि, आपनि, तुमि, तुइ, आमि।

व्यक्ति वा जन्तुवाचक—से, ये, के।

व्यक्ति, जन्तु वा पदार्थवाचक—ए, ओ।

पदार्थ वा क्षुद्र जन्तुवाचक—ताहा (ता), याहा (या), कि, इहा, उहा।

वचन और कारक भेद से सर्वनाम के रूप में परिवर्तन होता है। लेकिन स्त्रीलिंग और पुल्लिग भेद से सर्वनाम के रूप में परिवर्तन नहीं होता।

याहाते, ताहाते आदि का प्रयोग क्रिया-विशेषण की तरह होता है।

से, ये, कि, ए, ओ का प्रयोग विशेषण की तरह भी होता है। जैसे, से दिन (उस दिन)।

कारकों की विभक्ति सहित सर्वनामों के रूप

आमि (मैं)

(पुल्लिग और स्त्रीलिंग में)

	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	आमि, मुइ	आमरा, मोरा
कर्म	आमाके, आमारे, आमाय, मोरे	आमादिगके, आमादेर, आमादेरके, मोदिगके, मोदिगेरे, मोदेर, मोदिगके
कारण	आमाद्वारा, आमार द्वारा, आमाके दिया, आमा-हइते (ह'ते), आमा-कर्तृक	आमादिग (-दिगेर) द्वारा, दिया, कर्तृक; आमादेर दिया, द्वारा

	एकवचन	बहुवचन
सम्प्रदान	आमाके, आमारे, आमाय, मोरे	आमादिगके, आमादेर, आमादेरे मोदेर, मोदेरे, मोदिगके
अपादान	आमा हइते, आमा ह'ते	आमादेर (आमादिग) हइते
सम्बन्ध	आमार, मोर (मभु), मम	आमादिगेर, आमादेर, मोदेर
अधिकरण	आमाय, आमाते, मोते	आमादिगेते, आमादिगेर सकले, मोदिगे

तुमि (तुम)

(स्त्रीलिंग और पुल्लिग में)

	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	तुमि, तुइ	तोमर, तोरा
कर्म	तोमाके, तोमार, तोके, तोरे, तोर	तोमादिगके, तोदेर, तोदिके
करण	तोमाद्वारा, तोमाकर्तृक तोर	तोमादिगेर द्वारा, तोदेर द्वारा

	द्वारा		
सम्प्रदान	(कर्म कारक के जैसा रूप होता है)		
अपादान	तोमा हइते, तोर हइते		तोमादेर हइते, तोदेर हइते
सम्बन्ध	तामार, तोर, तव		तोमादिगेर, तोमादेर, तोदेर
अधिकरण	तोमाते, तोमाय, तोके, तोय		तोमादिगते, तोमादेर सकले, तोमादिगते

तुइ शब्द का व्यवहार तीन अर्थों में होता है :

(१) तुच्छार्थ में—निर्लज्ज तुइ क्षत्रिय समाजे (क्षत्रिय समाज में तू निर्लज्ज है)।

(२) स्नेह-वात्सल्य में—तुइ आमार नयनमणि (तू मेरी आँखों की मणि है)।

(३) देवतादि के संबोधन में—तुइ कि बुझिबि श्यामा मरमेर वेदना [श्यामा (माँ काली) तू मर्म की वेदना को क्या समझेगी]।

कारण और अपादान का अलग रूप नहीं है। कर्म वा सम्बन्ध कारक के रूपों में दिया, द्वारा, हइते योग करने से इन दोनों कारकों का रूप हो जाता है।

प्रथम पुरुष के रूप :

तिनि (वे)

	चलित रूप		साधु रूप	
	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
कर्ता,	तिनि	ताँरा	तिनि	ताँरा
कर्म, सम्प्रदान	ताँके	ताँदिके, ताँदेर	ताँहाके	ताँहादिगके
सम्बन्ध	ताँर	ताँदेर	ताँहार	ताँहादिगेर, ताँहादेर
अधिकरण	ताँते	—	ताँहाते	—

उपर्युक्त क्रम से अर्थात् पहली पंक्ति में कर्ता, द्वितीय में कर्म-सम्प्रदान, तृतीय में सम्बन्ध और चतुर्थ में अधिकरण कारक के अन्य सर्वनामों के रूप नीचे दिए जा रहे हैं।

यिनि (जो) का रूप तिनि की तरह ही होता है।

इनि (ये)

चलित		साधु	
एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
इनि	एँरा	इनि	इँहारा
एँके	एँदिके, एँदेर	इँहाके	इँहादिगके
एँर	एँदेर	इँहार	इँहादिगेर, इँहादेर
एँते	—	इँहाते	—

उनि (वे)

चलित		साधु	
एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
उनि	ओँर	उनि	उँहारा
ओँके	ओँदिके, ओँदेर	उँहाके	उँहादिगके
ओँर	ओँदेर	उँहार	उँहादिगेर, उँहादेर
ओँते	—	उँहाते	—

आपनि (आप)

चलित		साधु	
एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
आपनि	आपनारा	आपनि	आपनारा
आपनाके	आपनादिके,-देर	आपनाके	आपनादिगके
आपनार	आपनादेर	आपनार	आपनादिगेर,-देर
आपनाते	—	आपनाते	—

से (वह)

चलित		साधु	
एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
से, ता	तारा	से, ताहा	ताहारा
ताके	तादिके, तादेर	ताहाके	ताहादिगके
तार	तादेर	ताहार	ताहादिगेर, ताहादेर
ताते (ताय)	—	ताहाते (ताय)	—

ये, याहा (जो) का रूप से, ताहा जैसा होगा।

के (कौन)

चलित		साधु	
एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
के, कि	कारा	के, कि	काहारा
काके	कादिके, कादेर	काहाके	काहादिगके
कार	कादेर	काहार	काहादिगेर, काहादेर
काते, किसे	—	काहाते	—

ए, इहा (यह)

चलित		साधु	
एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
ए	एरा	ए, इहा	इहारा
एके	एदिके, एदेर	इहाके	इहादिगके
एर	एदेर	इहार	इहादिगेर, इहादेर
एते	—	इहाते	—

ओ, उहा (वह)

चलित		साधु	
एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
ओ	ओरा	ओ, उहा	उहारा
ओके	ओदिके, ओदेर	उहाके	उहादिगके
ओर	ओदेर	उहार	उहादिगेर, उहादेर
ओते	—	उहाते	—

ए, इहा, इनि से निकटस्थ वस्तु या व्यक्ति का निर्देश होता है और ओ, उहा, उनि से दूरस्थ वस्तु या व्यक्ति का निर्देश होता है।

'ताय' (उसको, उसमें) का प्रयोग प्रायः पद्य में होता है।

'किसे' केवल पदार्थवाचक है।